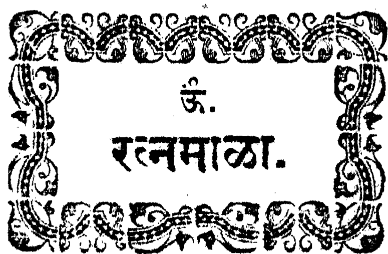
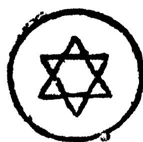

ॐ.
रत्नमाळा.

४२२५

ॐ

रत्नमाळा.



सनातन धर्मना लक्षणो

अहिंसा परमो धर्मः

धृतिःक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिंद्रियनिग्रहः ॥

धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकंधर्मलक्षणम् ॥

धर्मएवपरंब्रह्म सत्यंचपरमंतपः

धर्मएवपरामुक्ति धर्मएवपरागतिः ॥१॥

धर्मजिज्ञासु बंधु अने भगीनिओने मनन करवा निमित.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

सुरत सनातन धर्म सभाना सम्पादक.

नौत्तमराम उत्तराम त्रिवेदि.

संवत् १९४६ शाके १८११

मूल्य. रु. १–४–०

अमदावादमां
मामानी हवेली मध्ये अमदावाद युनाइटेड प्रीन्टींग
अने जनरल एजन्सी कंपनी लिमिटेडना प्रेसमां
रणछोडलाल गंगारामे छापी.

अर्पणपात्रिका.

सर्व धर्मजिज्ञासु बंधु अने भगिनिओ ! आ पुस्तक
आपना हस्तमान्ते निवृत्तिना समयमां शोभे अने
आप आद्यंत आ पुस्तक वांचि मनन करी, सत्य
ग्रहण करी सनातन धर्मनुं तत्व समजी ते धर्मनी
मर्यादामां रही धर्म, अर्थ, काम, अने
मोक्षरुपी महान् पुरुषार्थ सिद्ध करी
जन्मनुं सार्थक करशो ए तदर्थ
अमे स प्रेम आ पुस्तक
आपनेज परमार्थ
बुद्धिथी अर्पण
करीए
छिये

धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेनी सिद्धिना
आतुर सुरत सनातनधर्म सभाना सभासदो.

४२२५

उपोद्घात.

आपणी भारत भुमीमां सांप्रत काळनी विद्यानी केळवणीनीं पद्धतिना योगे, आपणी प्रजामां मात्र मानासिक ज्ञाननी उन्नति थवा मांडी छे; परंतु एवा प्रकारनी केळवणीथी उत्तम निति अने यथायोग्य संपुर्ण निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थइ शकती नथी एज कारणने लिधे सांप्रत पुनरावृत्तिनी उत्पन्न थति प्रजाने संसारना अहिक सुख भोगववानी अपरिमित्त त्रष्णा उत्पन थवाथी, केवळ स्वार्थ बुद्धीनी द्रढता थवाने लिधे, पोतानी प्रापंचिक, सामाजीक, अने धार्मिक ए त्रणे स्थितिमांथी एकनी पण उन्नति करवा भणी लक्ष जतुं नथी; तेणे करी ते त्रणे स्थिति उत्तरोत्तर नीर्बळ थति जाय छे, एवुं निषपक्षपाति सत्य शोधकने प्रत्यक्ष देखाय छे.

एज कारण माटे आपणी उपर कहेली त्रणे स्थिति अति उतकृष्ट दशामां आवी आपणा मानसिक तथा निश्चयात्मक, बुद्धि ज्ञाननी यथा योग्य उन्नति थइ आपणे अर्थ, काम, धर्म, अने अंते मोक्ष, ए चारेनी प्राप्ति थवानां साधनो मेळववा सारु सूरतमां सनातन धर्म सभा स्थापन थइ छे. तेमां उपर कहेला शुभ हेतुनी प्राप्ति सारु प्रथम राजऋषी नामे ग्रंथ प्रसिद्ध थयो छे. त्यार पछी ए सभामां जे लेखी व्याख्यानो थयां छे, तेमांथी प्रथम वर्षनां व्या-

ख्यानो सुबोध पत्रिका पुवार्ध. तथा सुबोध पत्रिका उत्तरार्ध एवे नामे प्रसिद्ध थया छे, तेनुं निषपक्षपाति सत्य शोधकोये अवलोकन कर्याथी; तेनी सत्य योग्यता तेमना जाणवामां आवशे. माटे ते विशे आ पुस्तकमां सुचना आपवानी अगत्य नथी.

परंतु उपर कहेली सनातन धर्म सभामां संवत १९४२ चैत्र शुद्ध ७ थी संवत् १९४३ ना फालगुन वद्य ४ सुधी जे लेखी व्याख्यानो ए सभाना सभ्यादके कर्या छे तेनुं आ पुस्तक प्रसिद्ध कर्यु छे, एमां एकंदर ४२ व्याख्यानो छे. तेना बे खंड करेला छे, तेमांथी प्रथम खंडमां एकंदर २१ प्रकरणो छे. तेमां भारत भूमिना आर्यजनोनी सांप्रत प्रापंचिक, सामाजीक, अने धार्मिक विगरे स्थितियो निर्बळ दशामां आववाना कारणोनो निष्पक्षपात रीते विचार करेलो छे, ते शिवाय ए खंडमां प्राचिनकाळनी आर्य वर्तनी विद्यानी केळवणी अने नितिना उपदेशनि केवा प्रकारनी पद्धती हती. अने तेथी केवा प्रकारनी स्थिति प्राप्त थती हती ए विगरे दर्शावेलुं छे. द्वित खंडमां एकंदर २१ प्रकरणो छे, तेमां प्रथम सांप्रत काळनी केळवणी अने निति विगरेना उपदेश विगरेनी चालती पद्धति दर्शावेली छे, त्यार पछी एवी केळवणीनी, सांप्रत आर्यवर्तना स्त्रि, अने पुरुषो उपर केवा प्रकारनी असर थइ छे.

अने हाल केवा प्रकारनी असर थति जाय छे; अने तेथी अंते केवा परीणाम थवानो संभव जणाय छे, ए विगरे अल्प सुचनाथी दर्शावी, मुळ केळवणी अने निति विगरे शुभ गुणोनां बिज आरोपण करवानी भूमीका माता छे, माटे स्त्रि वर्ग सारु केवी रीतनी केळवणी अने नितिना बोधनी, अगत्य छे, जेथी पुनरावृत्तिनी थति नवी प्रजानी प्रथम प्रापंचिक, समाजिक, अने धार्मिक ए त्रणे स्थिति उत्तम दशामां आवी परस्पर स्नेह अने अचळ ऐकता थवानां साधनो विगरेनी अल्प सुचना करेली छे. त्यार पछी मानसिक ज्ञाननी उन्नति पांमेलां स्त्रि, पुरुषोने निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी यथायोग उन्नति करवाथी आ लोक अने परलोकमां थता अद्भूत लाभनुं अल्प वर्णन करी अंतमां कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति करवानां साधनो दर्शावेलां छे. एवी रीते ए पुस्तकमां विरुद्धविरुद्ध विषयोनो समावेश करेलो छे, तेथी ए पुस्तकनुं नाम रत्नमाळा राख्युं छे. अने ए पुस्तक सनातन धर्म सभा तरफथी केवळ परोपकार बुद्धिथी प्रसिद्धि कर्युं छे.

हवे सर्वे मनुष्य प्राणीनुं समान शुभ इच्छक अने निषपक्षपाती सत्य शोधकजनोने अंतनी एटलीज विनय पुर्वक सुचना करवानी छे जे, ए पुस्तक निर्मळ अंतःकरण करि निवृतिना समये लक्ष पुर्वक आदिथी ते अंत सुधी वांच्या पछी तेनुं यथायोग्य

मनन करी सर्वे जातिना मनुष्यने उपयोगी जणाय तो एनी प्रवृति पोतानी शक्ति प्रमाणे तन, मन, अने धनथी करवानो सत्य परोपकार करवाने अनमान करशे नहीं.

सुरत.		नौ. उ. त्री.
सं. १९४६		सुरत सनातनधर्म सभाना सम्पादक.

अनुक्रमाणिका.

प्रथमखंड.

द्वितियखंड.



ॐ

तत् सत् परमात्मने नमः

सदगुरू प्रसंनोस्तु.

प्रथम खंड.

प्रकरण १ लुं.

भारत भूमीना आर्योनी सांप्रत काळनी स्थिति.

साधारण मानसिक ज्ञाननी उन्नति पामेला अने भारत भुमीना सांप्रतकाळना विद्वानो, केवळ स्व-स्वार्थनो त्याग करी, सर्व आर्य समूहनो जे स्वार्थ तेज पोतानो स्वार्थ समजी निष्पक्षपात रीते विचार करशे. तो तेमने जणाशेजे, आपणा सांप्रतकाळना निस्तेज थयेला आर्यबंधु अने भगिनीनी उत्तम पुनरावृत्तिनी उन्नति थइ, धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेनी यथार्थ रीते सत्य प्राप्ति थवाना साधनोमां मुख्य साधन, आपणां बाळक अने बाळकीओने उत्तम प्रकारनी नीतिनी केळवणी आपी तेमना मानसिक अने निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी यथार्थ उन्नति करी तेमने सर्व कार्योमां सनातन सत्य धर्म

अने अधर्मनी मर्यादामां राखवानो अभ्यास करवो एज छे.

एवी रीते उत्तम प्रकारना संस्कार थवाना साधनोनो विचार कर्यांनी पुर्वे सांप्रतकाळना बाळक अने बाळकीओने केवा प्रकारनी केळवणी, अने निति मळे छे. अने तेथी परीणाम केवा प्रकारना थाय छे. ए सघळानो निष्पक्षपात रीते विचार करवानी प्रथम अगत्य छे.

आपणने सांप्रतकाळना अनुभव उपरथी जणायछे जे, हालना आपणा देशना युवावस्थावाळा पुरुषोमांथी घणा समोहने नवी केळवणीनी सत्ता उपरथी सत्य असत्यनो निष्पक्षपात रीते उत्तम विवेकथी विचार कर्या विना आपणा आर्यदेशनी अति प्राचिन, विद्या, शास्त्र, अने सनातन धर्म, ए सघळुं निर्थक समजी, ते उपर लक्ष नहीं आप्याथी, विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णा उत्पन थइ; तेथी निति सत्य विवेक अने परोपकार बुद्धि विगरे शुभ गुणोनो लय थवा मांड्यो छे तेणे करी कुटंब क्लेश थवाथी कुसंपनी वृद्धि थइ; अने विषय भोगनी अपरिमित त्रष्णाने लीधे धनवान अने सत्तावान पुरुषोना दुर्गणोनुं गृहण करवा भणी घणाने प्रिति थवा मांडी अने अयोग्य भक्ष, अने पान करवा मांड्या. ज्यारथी एवी अयोग्य रीतनी स्वतंत्रतानुं ग्रहण करवा मांड्युं, त्यारथी तेमना बाळक अने बाळकी ते-

मज तेमना संबंधमां जे वगर अनुभवी बाळक अने बाळकीयो होय, तेमना मनना वलण अने वृत्ति केवी रीतनी उत्पन थवा मांडी एनो विचार सुज्ञ पुपुरुषोये कर्याथी तेमने एवुं जणाशे जे, एवा प्रकारनी स्थितिमां जे बाळक अने बाळकीओ शाळामां विद्याभ्यास सारु जाय, तेमने नीतिवान गुरु द्वारा नितिनो बोध जन्म पर्यंत मळी शकतो नथी; मात्र विषय उत्तेजन करवानी शिक्षा अने बोध मळवानो अधिक संभव होय छे, तेथी बाळक अने बाळकीयोने लेखक, वाचक, आदीक अल्पविद्या प्राप्त थइ एटले, पछी तेओ स्वतंत्रपणे वर्ती तेमने विषयभोग उत्तम रीते भोगववानी त्रष्णा थाय छे. अने नितिनुं ज्ञान नहीं होवाथी सत्य विवेक होतो नथी, तेणे करी आगळ युवावस्थाने पामेला उपर कहेला अविवेकी स्त्री अने पुरुषोने पोतानी स्थिति अने योग्यता उप्रांत संसारमां सत्य जणायला उत्तम विषयभोग, वस्त्र अलंकार अने भक्ष, पाननी इच्छा सदोदित वृद्धिने पामती रहेछे. परंतु पोतानुं ग्रहसुत्र अने सगा कुटुंबनुं पालण पोषण करवानी वृत्ति राखी तेमनो स्नेह संपादन करवा उपर वृत्ति थती नथी; तेणे करी तेवा कुटुंबनी प्रापंचीक अने सामाजीक ए बेने स्थिति उत्तरोत्तर निर्बळ थती जाय छे. तो पछी राज्यकीय उत्तम प्रकारे कार्यो करी, धार्मिक स्थिति उत्तम प्रकारनी करी सर्वोत्तम अख-

ह अने अविनाषी सुख प्राप्त करवाना मार्गे जवानी वृतितो मर्ण पर्यंत थायज नहीं. एज कारण उपरथी आपणा देशना महा प्रतापी दिर्घ द्रष्टा निष्पक्षपाती विद्वानोये शास्त्रमां भविषवाधी कलीयुगमां कलीयुगनी प्रवृतिनां जे लक्षण कह्यां छे. ते हालमां घणा खरा आपणा आर्य बंधुमां जोवामां आवे छे. माटे सत्य अने निर्दोष ज्ञान प्राप्त करवाने केवळ संस्कार हिन थता आर्यबंधुमां पुनरावृतिना शुभ विज रोपवाने परोपकारी, अने स्वार्थ रहित पुरुषोने अति आग्रहथी परीश्रम करवानी आ काळमां अवश्य अगत्य छे.

वळी आपणा विद्वान, अने साधारण मानसीक ज्ञाननी उन्नतिने पामेला आर्य बंधुओ निष्पक्षपात रीते विचार करशे तो, तेमने जणाशे जे,हालना समयनी केळवणीनी अने समागमनी सत्ता एटली तो प्रबळ आपणा देशी बंधु उपर थइ छे जे, तेमने स्वदेश अने स्वभाषानुं यथायोग्य अभिमान नथी, एटलुंज नहीं पण घणुं करी भणेला अने घणा वगर भणेलाने पण आपणा देशनी अति प्राचिनअने देशने अनुकुळ आवे एवी रुढी, पोषाक खानपान अने घणी खरी प्रापंचिक, अने सामाजीक रीती प्रमाणे चालवाने अप्रीत थवा मांडीछे. तेनी अल्प सूचना आ प्रसंगे कर्याथी आपणा वगर अनुभवी युवावस्थावाळा पुरुष अने स्त्रिओना लक्षमां

यथार्थ रीते आवशे.

तेमां प्रथम आपणा देशने अनुकुळ अने अल्प मुल्यवाळा पोषाक उपर अप्रिति थइ, घणाखरा साधारण प्रसंगे, अने साधारण अथवा उष्ण ऋतुमां बुट, मोजा, अने पाटलुन पेरवानो अभ्यास युवावस्थावाळा पुरुषोने पडवा मांड्यो छे, तेणे करी तेमना संबंधमां आवेला उछरता बाळकोने पण नानपणथी तेवीज वृति उत्पन्न थाय छे. तेथी द्रव्यनो व्यर्थ खर्च वधे छे, तेणे करी द्रव्यना संकोचने समये, सुखने बदले उलटुं अधिक दुख उत्पन्न थाय छे, तेवीज रीते अयोग्य खान पान करवा उपर प्रीति उत्पन थवाथी द्रव्यनी हानी थइ, शरीर पण निर्बळ थतुं जाय छे. अने तमो गुणी भक्षपानथी स्वाभाव पण क्रुर अने घातकी थइ, परस्पर क्लेश अने कुसंपनी वृद्धि थायछे. ए शीवाय स्वदेशनी भाषा, संवत्सर अने तीथी वीगेरे उपर अप्रिति थवाथी देषाभीमाननो लय थइ आर्यबंधु निस्तेज थता जाय छे. तेवीज रीते वगर अनुभवी अने मात्र लेखक, अने वाचक जाणनारी अल्प ज्ञानवाळी अने निति बोध रहित उछरती बाळकी अने स्त्रियोने पण मनोरंजक अने विषय उत्तेजक गाथा, वार्ता, अने काव्यो वांचवा उपर प्रिति अधिक थाय छे, अने शुशोभित, अने भिन्न भिन्न प्रकारना वस्त्र अलंकारो, अने भक्ष पान करवानी अयोग्य त्रष्णा वृद्धिने

पामती जाय छे, तेणे करी विवेक हिन थयाथी पोतानी स्थितिने अनुकुळ आवे एवी रीते वर्तवानो विचार आवतो नथी तेथी अनेक प्रकारनां कष्ट सहन करवां पडे छे, ते सघळाना जाणवामां छे. माटे ते विषे अधीक वर्णन करवानी अगत्य नथी.

हवे संक्षेपमां केवानुं एटलुंज के, सत्य विवेकी अने विद्वान तेज केवाय के, जेनुं लक्ष पोताना अने पोताना आर्यबंधुना दुर्गुण अने दोष एनी निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी, स्वार्थ रहित केवळ परोपकार बुद्धिथी अने मिथ्या अभिमाननो त्याग करी, पोते सदगुणनुं ग्रहण करी, अने सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां पोते रही अने पोताना संबंधमां आवेला स्त्रि पुरुषोने राखवाने प्रयत्न करी सघळा मनुष्य प्राणीमां भ्रातु भात्र राखी आर्य बंधुनी प्रापंचीक, सामाजीक, अने राज्यकीय स्थितिनी उन्नति करवा प्रयत्न करशे, तो परस्पर प्रिति उत्पन्न थइ, आगळ अंत्तर आत्मानी स्फुर्णा थवाथी, सत्य धर्मने मार्गे जवानी इच्छा थशे तोज, दीर्घकाळ सुधी रही शके एवी ऐक्यता थइ सघळानी प्रापंचीक, सामाजिक, राज्यकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति उत्तम थवानो संभव छे. अने तेथीज आगळ निर्दोष एवुं जे निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान तेनी प्राप्ती करवाने शुभ संस्कार थइ शकशे.

हवे शुभ संस्कारी थवानां साधनो कीयां छे,

एनो विचार आपणे आगळ प्रसंग आवेथी करीशुं.
संवत् १९४२ ना चैत्र शुद्ध ७ रवीवार.

प्रकरण. २

शुभ संस्कार थवानां साधनो

उत्तम प्रकारना संस्कारी थवा सारु, यथार्थ रीते मानसिक ज्ञाननी उन्नति थइ निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानना, प्रकाश थवानी अवश्य अगत्य छे. मानसिक ज्ञान अने निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानमां शुं भेद छे; अने तेथी केवां कार्यो थइ शके छे, एनो यथार्थ रीते विचार आपणे सुबोध पत्रीकाना पुर्वार्धमां करेलो छे, तेथी आ प्रसंगे ते विशे अधिक समयनो संकोच करवानी अगत्य नथी.

आपणे पूर्वे वारंवार कही गया छइए जे, सर्वे इछित कार्योनी यथार्थ सिद्धि, जे प्रमाणे ज्ञाननी उन्नति थइ, जेवो आग्रह अने पुरुष प्रयत्न होय, ते प्रमाणे उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट प्रकारनी स्थिति थइ शके छे. अने एज अखंड सत्य नियम प्रमाणे, हालना समयमां पश्चिम देशमां अति उत्तम प्रकारना मानसिक ज्ञाननी उन्नति थवाथी, उत्तम प्रकारनी उपयुक्त विद्या, अने कळा कौशल्यादिक अनेक प्रकारनी जन उपयोगी विद्यानी वृद्धि थवाथी, अने परोपकार बुद्धि परस्पर राखी ऐक्यता करी लीधा पछी अति महत्त्वना पुरुष प्रयत्न करी, ते देशनी

प्रापंचिक, सामाजीक अने राजकीय ए त्रणे स्थिति उत्तम प्रकारनी थएली जणाय छे; अने तेथी अतुल्य द्रव्यनी प्राप्ति करी. उत्तम प्रकारनी देश अने परदेशमां सत्ता स्थापन करी, दिर्घ काळ सुधी उत्तम प्रकारना संसारना सुख भोगववानी योजना नीरंतर कर्या करे छे. परंतु ते देशमां हजी सुधी उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा सत्य शोधकोमांथी घणा समोहनुं वलण, निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थया पछी, अंतर आत्मानी स्फुरणा यथा योग्य थवाथी केवी रीतनुं अलोकीक ज्ञान प्राप्त थइ, अखंड अने अविनाशी आनंदनी प्राप्ति केवी रीतनी थइ शके छे, ते तरफ तेमनुं लक्ष नथी. अने ए प्रमाणे घणा काळ सुधी जो मात्र संसारना उत्तम जणायला सुख प्राप्त करवा भणी अने ते भोगववामां तालिन थशे तो आगळ पुनरावृत्तिना अचळ नियम प्रमाणे विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णाने लिधे आगळ उत्तम, अने उपयुक्तादिक विद्या तरफ लक्ष न्युन थशे, अने केवळ स्वस्वार्थ करी लेवानी त्रष्णा उत्पन थवाथी परस्पर कुसंप अने कलह उत्पन थवाथी, तथा मानसिक ज्ञान न्युन थवाथी पस्पर कुसंप अने कलह उत्पन थायछे, तेथी अंते मानसिक ज्ञान न्युन थइ, उत्तरोत्तर अधम दशाने पामता पामता आपणा हालना आर्यवर्तनी स्थितिने पोचवानो प्रसंग आवशे. माटे एवो अप्रिय समय जलदी आववाने

प्रतिबंध करवानो मात्र एटलोज उपायछे जे, निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति कर्या पछी, केवी अलौकिक शक्ति प्राप्त थई, केवा महा अद्भुत अने चमत्कारी कार्यो करी, केवी रीतनो अखंड आनंद प्राप्त थायछे; ए वीगरे अति प्राचिन आर्य देशनी सत्य विद्यानुं अध्यन कर्या पछी अने तेमां सर्वोपरी सत्य लाभ जणाया पछी, संसारना मिथ्या अने क्षणभंगुर सुख उपर कार्याकारण प्रिति रहेवा मांडी एटले, आपणे पुर्वे कह्या जे सनातन सत्य धर्म अने अधर्म एनी मर्यादामां पोते अति आग्रहथी रही, बीजा सघळा मनुष्य प्राणीमां, देश, जात, रूप, अने रंग, विगेरेनो कांइ पण भेद नहीं गणता, सघळामां भ्रातुभाव राखी, समान स्वार्थ समजी सघळानी समान, प्रापंचिक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति स्वार्थरहित सुधारवाने परोपकार बुद्धिथी प्रयत्न पोते करी, बीजाए पण तेज प्रमाणे सत्य रीते एक निष्टाथी वर्तवानो प्रयत्न करवानो बोध करवाथी, परस्पर स्नेहनी वृद्धि थई, सघळाना कष्टनुं नीवारण करवाभणी लक्ष गयाथीज; दिर्घकाळ सुधी टके एवी ऐक्यता थई शकेछे. एवो आपणे प्राचिन अने अर्वाचिन इतिहास उपरथी अने सांप्रत अनुभव उपरथी द्रढ निश्चय थयो छे; माटे आपणे आपणा आर्यबंधुमां शुभ संस्कार थई, दिर्घकाळसुधी टकी शके एवी ऐक्यता थई, तेमने धर्म,

अर्थ, काम, अने मोक्ष ए चारेनी उत्तम स्थिति प्राप्त थवानी केळवणी अने अति उत्तम प्रकारनी नीतिना साधनोनो विचार करवानी हाल अवश्य अगत्य छे.

आपणी भारतभूमिना महासमर्थ, निर्लोभी, अने केवळ परोपकारी बुद्धिना दिर्घकाळना अनुभवी ऋषी अने मुनीओनी केळवणीनी पद्धती प्रमाणे बाळक अने बाळकीओनें, सनातनधर्म अने अधर्मनी मर्यादामां राखी निर्विकारी परोपकार बुद्धिना गुरुद्वारा केळवणी मळ्यार्थीज, आपणा निस्तेज थयेला आर्योनी उपर कहेलो चारे स्थिति उत्तम प्रकारनी थवानो संभव छे. माटे तेनी सुचना आ प्रसंगे निष्पक्षपाती सत्यशोधक आगळ करवानी अगत्य छे.

आपणा आर्यदेशना चारे वर्णना मनुष्य एटले ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, अने शुद्र तेमणे पोताना बाळक अने बाळकीनी वय सात वर्षनी थया पछी, साधारण मानसिक ज्ञाननी स्फुर्णा थवा मांडी एटले, तेमना निर्विकार एटले कोरा मन उपर शुभ कींवा अशुभ, निति, अथवा अनिति, विषय तृष्णा अथवा आत्म स्वरुप जाणवानी इच्छा, विगरे जेवी असर करवाने प्रयत्न करीये, तेवी असर थइ, आगळ ते बाळक अने बाळकीयो युवावस्थामां आव्या पछी, तेमनी मनोवृत्ति तेवीज शुभ कींवा अशुभ कार्यो करवा भणी अधीक जाय छे. कदापि जो

बाळ्यावस्थामां शूभ ज्ञान नहीं आपीए तो युवावस्थावाळा अने वगर अनुभवी स्त्रि पुरुषमी स्वभाविक दोषरुप वृति अथवा वलणमांथी तेमने वाळी शुभ वलण करवुं अति कठण पडशे, तेम करवाने प्रयत्न करवाथी उलटा क्लेश अने कलहनी वृद्धि थइ, सर्व प्रकारे हानी थायछे. माटे जे प्रमाणे कुमळुझाड जेम नमावीये तेम नमे पण ते कठण थया पछीवाळ्युं वळे नहीं, अने वाळवा मांडतो भागी जाय, वळी बीजु द्रष्टांत एछे जे, ऊगती वेलना अगणीत वेला कोई आंति भीणी बोरडी विगेरेना कांटामां एक वखत गुंचवाया पछी, तेमांथी काडी सारा मांडवा उपर ते वेलीयो चडाववानुं प्रयत्न जेम निष्फळ जई, ते वेली तुटी जइ, जेम झाड सुकाइ जइ मरी जाय छे; तदवत एक समये युवावस्थामां वगर अनुभवे कुशंगथी जे दुरव्यशन अथवा दुर्गुण लाग्यो होय ते, मोटपणे जवो अति कठण पडे छे. माटे उपर कह्या प्रमाणे सात वर्षना बाळक अने बाळकीयो थाय त्यारथीज, तेमने ज्यां सुधी केवळ परोपकारी, अने सनातन धर्मवाळो गुरु मळी शके नही त्यां सुधी, ते बाळकना मा, बाप. कुटंबी अने स्नेहीयो जे के सनातन धर्मवाळा अने शुभ गुणवाळा परोपकार बुद्धिना जे होय, तेमनो निरंतर समागम करवा देवो, अने तेमनाथी बनी शकेतो अल्प, लखक, वाचक विगरेनुं ज्ञान बाळकनी रुची प्रमाणे, तेने आनंद

उत्पन करी, आपवानो अभ्यास राखवो. अने निरंतर ते बाळकोना निर्विकार मन उपर प्रेमपुर्वक तेमने आनंद उपजाववी आपणे पुर्वे सुबोधपत्रीकाना पुर्वार्धमां कह्या जे सत्य अने सनातन धर्म अने अधर्म तेना सत्ता बेसाडवाने प्रयत्न केवळ परोपकार बुद्धिथी कर्याथी आगळ अति अदभुत लाभ थई शके छे. वळी निर्विकारी मनना बाळकोने विषय भोगनी त्रष्णा उत्पनं नहीं थवा देवाने, अति आग्रहथी प्रयत्न करवानी अगत्य छे. एटले हाल जेम अविवेक अने अल्प ज्ञानने लिधे पोताना अल्प वयना बाळक, अने बाळकीयोने लाड करी, सुशोभित नानाप्रकारना रंगबेरंगी वस्त्र, अने अलंकार, पेहेरावी तेमने विकारवाळा भक्षपान करावी, तेमनी वृति विषयभोगमां चंचळ करे छे. अने एवा अल्प मानसिक ज्ञानवाळा अविवेकी, अने विषयाशक्त स्त्रि पुरुषोनो समागम निर्विकार बाळकोने करवा देवाथी, जे हानी थाय छे ते साधारण मानसिक ज्ञानवाळा पुरुषो निष्पक्षपात रीते परिक्षा करी जोशे तो, तेमने जणाया विना रहेशे नाहिं. ते माटे जेनी मनोवृत्ति पोताना उछरता बाळक अने बाळकीओने सदगुणी करी तेमनी आगळ प्रापंचिक, सामाजीक, अने धार्मिक ए त्रणे उत्तम स्थिति करवानी होय तो, तेमने सांप्रतकाळनी दोषित पद्धति प्रमाणे, पोतानी स्थिति अने योग्यता कर्ता अधिक

लाड, बाळपणमां लडाववा नहीं एटले तेमने कोइ पण प्रसंगे देवुं करी, अथवा बीजाना वस्त्र अलंकारादिक मागीने पेहेराववानी टेव पाडवी नही, तेमज मिष्ट खानपान अने मेवा विगरे आपी तेमनी रसना इंद्रीने अयोग्य उत्तेजन आपवुं नहीं. एवी रीते ज्यां सुधी विद्यार्थिनी स्थिति छे, त्यां सुधी, अथवा पुर्ण विवेकी थवाने ज्यां सुधी यथार्थ ज्ञान प्राप्त थयुं नथी त्यां सुधी, सघळी विषयभोगनी इन्द्रिओने उत्तेजन मळवाथी मन अधिक चंचळ, अने अस्थिर थवाथी विद्या मेळववामां यथार्थ लक्ष राखी शकातुं नथी एटलुंज नहीं, परंतु आगळ युवावस्थामां तेमने विषइ इन्द्रिओने श्रम करवानां साधनोनी न्युनता पडवाथी उलटुं परीणाम विप्रित थइ, अनेक प्रकारनां कष्ट सहन करवां पडे छे.

माटे आर्य वर्तनुं सत्य हित इछनारा केवळ परोपकारी, बुद्धिवान अने विद्वानोये एवी संधीमां अगाउथी चेती, जेम बने तेम हाल पोताना बाळक अने बाळकी अने स्त्रिओने अनियमित लाड लडाववानी दोषित पद्धतिनो प्रतिबंध करी, अति प्राचिन काळनी देव ऋषिनी पद्धति अने केवळ शुभ अने निर्दोष आज्ञा प्रमाणे द्रढ आग्रहथी पोते वर्ति, बिजा आर्योने वर्ताववा अभ्यास राखवाथीज, आपणी आर्य बंधुनी प्रापंचिक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति अति उत्तम थइ, दिर्घकाळ

सुधी उत्तम सुख प्राप्त करी शकाशे.

हवे आपणे चारे वर्णना आर्यबंधुओना बाळक अने बाळकीओने साधारण ज्ञान प्राप्त करवानी सामान्य पद्धतिनो सुक्ष्म विचार आ प्रसंगे करीए. ज्यारथी बाळक अने बाळकीयो साधारण समजणा थई साधारण विद्या मेळववाने योग्य थाय एटले, तेमनुं उत्तम, प्रकारनुं वलण करवा सारु आपणे अधिक लक्ष आपवानी अगत्य छे. प्रथम तेमने सतशास्त्रमां कह्या प्रमाणे निर्गुण, अने शरीरने पोषण करी बलिष्ट करवाना भक्ष, पान आपवा, एटले घऊ, जव, बाजरी, चोखा विगरे विकार रहित अने, दुध, तथा निर्मळ जळ, ए सघळु आपवुं, पण ते पोतानी स्थितिने अनुकुळ आवे ते प्रमाणे आपवुं, अने ते पण मिताहार एटले क्षुधा कर्ता अधीक हार नही करवानी विद्यार्थिने टेव पाडवी. जेथी वृत्ति चंचळ रही विद्यामां यथार्थ लक्ष आपी. शकाय. तेमां आम्ल एटले खाटा,] तिखा, अने तुरा पदार्थो विद्यार्थिने वर्ज करवानी अवश्य अगत्य छे. तेवीज रीते वस्त्र पण सादा अने शरिररक्षण थई शके एवाज पेरवानो अभ्यास राखवो, अने सुवानी पथारी अति नरम नही पण साधारण जोइए. मेळा, तमासा अने पंच इन्द्रिय उत्तेजक पदार्थो जोवाने, सांभळवाने अने स्पर्ष करवाने द्रढ प्रतीबंध थवो जोइये. तेमज विद्यार्थिये विद्याना विषय विना बीजा विषयोनो

श्रवण, मनन, अथवा निदिध्यास करवो नहीं. वळी ते बाळक अने बाळकीओने, सत्य सनातनधर्म अने अधर्मनी मर्यादामां रेहेनाराज स्त्रि पुरुषोनो समागम करवा देवो अने तमने निरंतर नितिनो बोध आप्या करवो. अने बने त्यां सुधी विद्यार्थिने कोई परोपकारी, सत्यसनातन धर्मवाळा, अने उत्तम नितिवान, अने विद्वान गुरुने त्यां राखी विद्याभ्यास थायतो ते अति उत्तम छे. केमजे तेम करवाथी पोताना वडील अने सगासंबंधी अथवा न्यातजातना स्त्रि पुरुषोना पंचविषयनो प्रसंग ओछो थाय छे, अने सद्गुरु पासे रही मात्र सत्यविद्यानुं अध्यन लक्षपूर्वक थई शके छे. तेथी तेवा बाळकोनी वृत्ति सदा निर्दोष, अने विकार रहित रेहेछे.

एवी रीते यथायोग्य विद्या अने ज्ञान प्राप्त थता सुधी द्रढ आग्रहथी, बाळक अने बाळकी वर्तेतो पछी, तेमने आगळ शुभ ज्ञानना योगे उत्तम विवेक उत्पन थवाथी, ते संसारना विषयोमां तद्रुप थई अंधनी पेठे विषयने वश थता नथी, परंतु पोतानी संसारीक स्थितिने अनुकुळ आवे एवा जे विषयभोग ते स्वाभाविक रीते प्राप्त थाय ते भोगवताछतां तेमां आसक्त पामता नथी. तेणे करी ते सघळा व्यवहारीक कार्यो उत्तम प्रकारे करी, अति उत्तम एवुं जे निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान ते प्राप्त करवाने शुभ संस्कारी थाय छे.

हवे बाळक अने बाळकीओने मानसीक ज्ञाननी उन्नति थया पछी निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानना शुभ संस्कार थई, तेमनी आगळ प्रापंचीक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मीक ए चारे उत्तम स्थिति थयाछतां विषयभोगना क्षणिक, अने मिथ्या सुखनी अपरीमित त्रष्णा उत्पन थवानो प्रतिबंध थई, तेमना आयुषनी मर्यादाना अंतमां अखंड अने अविनाशी अचळ सुख प्राप्त थवा सारु, तेमने सत्य अने निर्दोष सनातन अने सत्यधर्म, अने उत्तम नितिना बोधनी सुचना आगळ प्रसंग आवेथी करीशुं.

चैत्र शुद्ध १५ रवीवार संवत् १९४२.

प्रकरण ३.

उत्तम संस्कार थवानां साधनो

आ संसाररुपी भवसागरमां पडनारा बाळक अने बाळकीयो, तेमज उत्तम सुखनी इच्छा राखनारा एवा जे वगर अनुभवी युवावस्थावाळा स्त्रि पुरुषो तेमने प्रथम सनातनधर्म अने अधर्मनो संपुर्ण बोध करी, तेमना मन उपर सनातन सत्यधर्म अने अधर्मनी सत्ता परीपुर्ण बेसाडवानी अवश्य अगत्य छे.

आपणे सत्य सनातन धर्म अने अधर्मनी योग्यतानुं यथार्थ वर्णन, राजरुषी नामे ग्रंथमां अने सुबोध पत्रीकाना पुर्वार्धना प्रथम प्रकरणमां करेलुं छे. तेमां सनातन धर्म एटले सर्वथी प्राचिन,जेनो आ-

दी अने अंत नथी, एवा केवळ सत्य धर्म निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी ते उपर दर्शावेला ग्रंथोमां सिद्ध करेलाछे. अने तेमां जे, अति चमत्कृतीवाळा चैतन्याकर्षक गुणो यथार्थ रीते रहेला छे, ते सुबोध पत्रीकामां यथार्थ रीते दर्शावेला छे, माटे आ प्रसंगे ते विषे अधिक वर्णन करवानी अगत्य नथी. परंतु आ समये सनातन धर्म अने अधर्म कीया अने तेनी प्रवृती कीया समयमां सघळा आर्यवर्तना मनुष्य प्राणीना घणा समोहमां चालती हती, अने तेनी क्षीणता क्यारथी थइ, अने बीजा कल्पित धर्म अने अधर्म उपर मनुष्य प्राणीना समोहनुं वलण कयारथी थवा मांडयुं; ए विगेरेनी अल्प सूचना आप्याथी मुमुक्षु अने सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा निष्पक्षपाती स्त्रि अने पुरुषोने निश्चय लाभ थशे.

जे समय भारत भुमीमां पुनरावृतिना काळ चक्रनो समय एवो हतो जे, ते समये प्रापंचीक, सामाजीक, अने राजकीय ए त्रणे सुख भोगववानी, त्रणा अपरीमित नोती, पण ते समये अखंड अने अविनाषी सुख प्राप्त करवानां साधनो भणी घणा मनुष्य प्राणीनुं लक्ष हतुं, ते समये सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां सघळा स्त्री पुरुषो रहेता हता अने आत्मज्ञान अने तत्त्वज्ञाननी विद्या उपर संपूर्ण लक्ष रहेतु हतुं, तेथी मानासिक ज्ञाननी साथे निश्चया-

त्मक बुद्धिज्ञाननी पण उन्नति अधिक थती हती, तेथी करी संसार सुखनी अपरीमीत त्रष्णा उत्पन्न थती नही छतां, ते प्राप्त करवानां साधनो सोधी काढ्याथी, तेमनी प्रापंचीक, सामाजीक, अने राजकीय ए त्रण उत्तम स्थिति थइ, धन, धान्य, पशु अने सर्व भोम सत्ताना सूख यथार्थ भोगवता छतां, ते सघळा निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानना योगे आ श्रष्टिना सघळा सूखो क्षणभंगुर अने मिथ्या समजी तेमां आसक्त नहीं थतां, सर्वोपरी ब्रह्म विद्या अने आत्म विद्याना अखंड अने अविनाषी सुखनी प्राप्ति करी कैवल्य मोक्ष थवानां साधनो करवा भणी घणा आर्य बंधुनुं लक्ष हतुं.

पछी आगळ ज्यारे पुनराव्रतिना काळ चक्रनो समय बदलाइ भारत भुमीमां कळा कौशल्यादिकनी व्रद्धि थइ, सर्व भोम पद प्राप्त थइ, प्रापंचीक, सामाजीक, अने राजकीयः ए त्रण्ये स्थिति अति उतक्रष्ट दशामां आव्या पछी, ते सुख अधिक भोगववाने लक्ष थतुं गयुं, त्यारे आत्मज्ञान, तत्वज्ञान अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान प्राप्त करवानां साधनोनी न्युनता थवाथी, सत्य अने निर्दोष सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां द्रढ आग्रहथी, रेहेवानी कांइक, अरुची घणा मनुष्य प्राणीओने थवा मांडी त्यारथीज धर्म प्रवर्तक आचार्यो, अने पंडीतोये, विषयासक्त मनुष्योने धर्मनी मर्यादामां राखवा सारु

तेमने प्रिय लागे एवा भक्ति मार्गनी योजना करवा मांडी अने सघळा धर्मना कार्योमां उत्तम जणायला भक्ष, पान.अने वस्त्र अलंकारादिकनो उपयोग देवनी प्रसादीने नामे पोते करवा लाग्या, तेणे करी स्वाभाविक रीते पंच इन्द्रियोनी त्रष्णा पंचविषय सुख भोगववाने वृद्धि पामती गइ, तेथी आगळ घणे काळे सत्य अने निर्दोष एवा जे सत्य सनातन धर्म अने अधर्म तेनी मर्यादामां रेहेवाने अप्रिति थवाथी, तेनो लोप थवा मांड्यो; अने तेनो लोप थयो एटले पोतानो केवळ स्वार्थ करवामां अपरीमित त्रष्णा उत्पन थवाथी, परोपकार बुद्धिनो पण लय थइ,सत्य असत्यना न्यायनो पण लय थयो, तेणे करी-ऐक्यतानो भंग थइ, प्रापंचिक,सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक, ए चारे कार्योमां केवळ स्वार्थने लीधे परस्पर विरोध उत्पन थवाथी कलह थवा मांड्या. तेणे करी सरवस्व नाश थइ आर्य बंधु विद्याहिन, बळहिन द्रव्यहिन. अने सत्ताहिन थवाथी निस्तेज थवा मांड्या.

ए कारण माटे हालना समयना धर्माधीकारी भणेला अने विद्वान पुरुषोये दिर्घ द्रष्टी पोहोचाडी निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी, मिथ्या अभीमाननो त्याग करी, आपणा बाळक, अने बाळकी, तेमज युवावस्थावाळा वगर अनुभवि स्त्री पुरुषोने सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां द्रढ आग्रहथी रा-

खवाने प्रयत्न करी, उतम नितिना मार्गे चालवानुं वलण करशे, तोज आगळ पुनरावृतिना काळ चक्रनो शुभ समय आववानो संभव छे. ते शीवाय समान ऐक्यता करवाना बीजा प्रबळ साधन नथी.

प्रथम अहिंसा परमोधर्मः एवुं कह्युं छे एनो स्पष्ट अर्थ वेदव्यासे एवो कर्यो छे जे---सर्वथा सर्वदा सर्व भुता नामनाभि द्रोहः अहिंसाज्ञेया एटले सर्व काळने विषे सर्व भुतप्राणी मात्र उपर दया राखवी तेमां मुख्यत्वे करी सर्व मनुष्य प्राणी विषे भ्रातुभाव राखी तेमनो द्रोह कोई पण प्रकारे करवो नहीं. एवी रीते केवळ स्वार्थ रहित वर्त्तथी सघळा मनुष्यमां प्रिति अने स्नेह उत्पन थई सत्य अने दीर्घकाळ सुधी टकी शके एवी ऐक्यता थाय एमां कांइ आश्चर्य नथी.

ए शीवाय मनुस्म्रातिना अ. ६—९२ सनातन धर्म कह्या छे.

धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिंद्रियनिग्रहः।
धिर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकंधर्मलक्षणम्॥

प्रथम धृति एटले धीर्यता सघळा व्यवहारिक, अने धार्मिक कार्योमां राख्याथीज, उत्तम परीणाम अने लाभ थई शके छे, ए घणुं करी सघळा साधारण मानसीकज्ञान वाळा स्त्रि पुरुषोना जाणवामां छे; अने तेनी न्यूनता हालना घणा आर्योमां जोवामां आवे छे, तेणे करी यथार्थ सत्यकार्यनी सिद्धि

थई शकती नथी, माटे कोइ पण कार्योनो आरंभ कर्यानी पुर्वे धीर्यता राखी तेनी सत्य असत्यनी परीक्षा करीएतोज तेमां कोई जातनी न्युनता आवे नहीं. वळी धिर्यता राखवाथी प्राणवायुनो अधीक संग्रह थई, मन स्थिर थई आरोग्यता रहे छे. बीजो धर्म क्षमा राखवानी टेव राख्याथी, शत्रु पण अंते ग्लानी पामी प्रितीथी शत्रु मटी मित्र थवानो संभव थइ शके छे. त्रीजो धर्म दम एटले पंच इंद्रिओने बाळपणथी स्वाधीनमां राखवानी टेव पाडवाथी शरीर निरोगी अने द्रढ थवाथी, सघळा कार्यो उत्तम रीते थई शकेछे. पण कदापी बाळपणमांथी शरीरने कष्ट सहन करवानी टेव नही राखी, तेनी अयोग्य रीते रक्षा करी वीषई खानपान अने वस्त्रादीकनो अभ्यास अधिक राखीयेतो आगळ द्रव्य संकोचथी अने बीजा तेवाज कारणथी बळाहिन थवाथी धारेला ते कार्यनी सिद्धि नही थतां, व्याधी वीगरे उत्पन थई, अनेक प्रकारना कष्ट सहन करवां पडेछे चोथो अस्तेय एटले बाळपणथीज योग्य रीते सत्यपुरुषार्थथी द्रव्य वस्त्रादिकनी प्राप्ति करवानी टेव राख्याथी, मन निर्मळ थाय छे. अने कोइ पण प्रकारना कार्यना संबंधमां आवेला मनुष्यनी प्रिति संपादन थइ ऐक्यता थई शकेछे. हवे अयोग्य रीते पोतानो केवळ स्वार्थ करवानी टेव पड्याथी कुसंपनी वृद्धि थई, अंते परिणाम माठुं थायछे. पांचमो धर्म शौच एटले

बाह्य शरीरनो मळ विगरे काहाडी यथार्थ रीते स्नानादिक क्रीया करवानी टेव बाळपणमांथी राखवाथी शरीरनी सामान्य आरोग्यता रहे छे. अने अंतरशौच एटले नीरंतर कपटरहित शुद्ध अने निर्मळ मन बाळपणमांथी राखवानी टेव राख्याथी, व्यवहारिक कार्योमां बीजानी प्रिति संपादन कर्याथी बीजानी सहायताथी ते पोतानां कार्यो उत्तम रीते करी शकेछे. अने निर्मळ अंतःकर्ण रहेवाथी उत्तम विवेकथी सत्य असत्यनो निर्णय करी, निश्चयात्मक सत्य ज्ञान मेळववाना मार्गे जवानी तेनी वृत्ति थाय छे. छट्ठो इन्द्रिनिग्रह एटले पंच बाह्य इन्द्रि अने पंचअंतर इन्द्रि, मन, बुद्धि, अने अंतःकर्ण ए तेरे इन्द्रिने स्वाधीन राखवानी बाळपणथी टेव राख्याथी, आगळ युवावस्थामां अयोग्य पंचविषयनी तृष्णा नही थवाथी, पोताना व्यवहारीक, अने धार्मिक ए बेउ कार्यो अति उत्तम रीते थई, आ लोकमां उत्तम लाभनी प्राप्ति थई, परलोकना पण सर्वोपरी उत्तम साधन करी शकाय छे, अने तेथी अंते अखंड अने अविनाषी सुखनी प्राप्ति थई शके छे. सातमो धर्म धि एटले बुद्धिनो बाळपणथी उपयोग करवानी टेव पडवाथी, आगळ युवावस्थामां दुष्टजनोना कहेवा अथवा सांभळवाथी, असत्य अने अयोग्य मार्गे जवानी वृति थती नथी. बाळपणथी बुद्धिना योगे सत्य असत्यनो निर्णय करी सघळा कार्यो करवानी

टेव पड्याथी, तेने निर्मळ बुद्धिना योग्ये असत्य अने मिथ्या शुं छे, ते स्पष्ट रीते जणाइ आवे छे. माटे तेवा पुरुष जे कार्यो करे, तेमां तेने आगळ पश्चाताप पामवानो समय क्वचितज आवे छे. तेणे करी तेवाज पुरुषथी उत्तम कार्योनी सिद्धि थई शके छे. हवे आठमो धर्म विद्या एटले ज्ञान, आत्मज्ञान तत्वज्ञान अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान विगरे अति उत्तम ज्ञान प्राप्त करवा सारु प्रथम बाळपणथी उपयुक्त विगरे सघळी विद्या प्राप्त करी, मानसिक ज्ञाननी उन्नति करवानी अवश्य अगत्य छे. अने जे प्रमाणे मानसिक ज्ञाननी उन्नति थई सत्य असत्यनो यथार्थ रीते निश्चय करवानी शक्ति आवेली होय, ते प्रमाणे आगळ सर्वोपरी महा अद्भुत अलौकिक गुप्तविद्या अने योगविद्या समजवाने पात्र थई शकाय छे. माटे विद्या अति अमुल्य वस्तु छे. केमजे सत्य अने निर्दोष अति उत्तम ज्ञान विद्याथीज प्राप्त थई शके छे; अने ज्ञानीनेज आपणा सर्व शास्त्रमां अतिश्रेष्ठ कह्योछे.ए सघळु छतां विद्या निर्दोष अने विकार उत्पन नहीं करे एवी जोइए. केमजे हालना अनुभव उपरथी आपणे जणायछे जे, हालना भणेला अने विद्वान गणायला पुरुषोमांथी घणानी मात्र संसारसुख प्राप्त करवानी वृत्ति थवाथी तेमने अपरिमित तृष्णा उत्पन्न थायछे, तेथी अंते विवेकहिन थवायछे अने तेम थयुं एटले केवळ स्वार्थ

उपर द्रष्टि राखवानी इच्छा थवाथी दंभ, अनें मिथ्या अभिमाननी वृद्धि थती जाय छे. तेणे करी ऐक्यता थवाने बदले उलटो प्रापंचिक, सामाजीक, राज्यकीय अने धार्मिक ए चारेमां कुसंप थवाथी, परस्पर विरोध वृद्धिने पामतो जाय छे; माटे आपणा अति प्राचिनकाळना केवळ परोपकारी पुरुषोनी पद्धति प्रमाणे, सत्य विद्यानुं श्रवण, मनन, अने निदिध्यासन करवाथीज उत्तम प्रकारनी ऐक्यता थइ पुनपि आर्यबंधुनी चारे स्थिति उत्तम थवानो संभव छे. नवमो धर्म 'सत्यम' एटले सत्यता राखी निरंतर बाळक अने बाळकीयोने बाळपणथी साचु बोलवानी टेंव पाडी होय तो तेथी आगळ तेमने अती मोटो लाभ थाय छे, केमके जे मनुष्य सदा साचु बोले छे, एवो निश्चय घणा लोकनो थयो एटले तेनो विश्वास लोको करी, तेनी साथे हेत अने प्रिति करे छे. तेथी परस्पर तेमनां सघळां कार्यो सारी रीते थइ लाभ पण अधिक थइ शके छे. सत्यताथीज मोटा व्यापारना कार्यमां द्रव्यादिकनो अंते अधिक लाभ थाय छे. मोटी व्यापारनी मंडळी अथवा कंपनीमां ज्यां सत्यता होय छे, त्यांज जय थायछे. एनु एक द्रष्टांत आ प्रसंगे जणाव्याथी बुद्धिवान पुरुषोने निश्चय थशे. प्रथम ब्रिटेनीया देशना लोकोना जाणवामां आव्युं जे हिंदुस्थानमां अतुल्य द्रव्य छे. ते उपरथी तेमणे सारा भणेला एक विचारना संपवा-

ळा लोकनी एक मंडळी स्थापन करी तेमांथी केट-
लाएक प्रमाणिक अने विवेकी पुरुषोने आपणा दे-
शमां मोकल्या. तेमणे नीस्तेज थयेला हिंदु लोकोमां
प्रथम सत्यता दर्शावी व्यापारना साधनथी, सारु
द्रव्य संपादन कर्युं, पछी केटलीएक कळाकौशल्या-
दिकनी वृद्धि करी, यंत्रद्वारा कापड वगेरे पोताना
देशमां उत्पन करी, द्रव्य अने सत्ता विगरे मेळवता
गया. प्रथम ते परदेशीए पोतानी द्रव्यथी आर्यदेशमां
उपयुक्त विद्यानि प्रर्वति करी, अनेक परोपकारनां
कार्यो करी घणानी प्रिति संपादन करी. अने पोतामां,
समभावथी वर्ति हिंदुस्थानमां सर्व भोम पद मेळव्युं
ते छतां जीतायला लोको उपर क्षमा दरशावी. तेमनी
प्रिति संपादन करी. अने तेम थवाथी घणा वर्ष सुधी
आपणा देशमां उपर कहेलो व्यापारनी मंडळीये
निरविघ्नपणे राज्य कर्युं, ते सघळाना जाणवामांछे.
ए उपरथी बुद्धिवान सत्य शोधकने जणाशे जे, उ-
पर कहेला सनातन धर्म प्रमाणे सघळा कार्यमां
दृढ आग्रहथी वर्त्याथी, अति उत्तम लाभ निश्च-
य थाय छे.

हवे मनुस्मृतिमां कहेलो दशमो धर्म अक्रोध
एटले निरंतर शांत स्वभाव राखवानी टेव राख्याथी
घणा पौष्टिक प्रमाणुओनो श्वासोश्वासना मार्गे व्यय
नहीं थतां, तेनो संग्रह थवाथी, शरीर अने मन ए
बेउनी पुष्टि थइ आरोग्यता रहेछे. ते सांप्रतकाळना

निष्पक्षपाती विद्वानोना जाणवामां छे तेथी ए विषे अधिक आ प्रसंगे बोलवानी अगत्य नथी, ते छतां अल्प सुचना एटली करवानीछे जे, सघळा साधारण मनुष्यना जाणवामां छे के, जेने क्रोध आवे छे तेना शरीरनी पण विक्रिया जोवामां आवे छे. अने ते नवळो थयेलो जणाय छे. वळी तेना केटलाएक शुभ विचारोनो ते समये नाश थइ, अज्ञान अधिक प्राप्त थयेलुं जणाय छे. ते विवेकाहिन थवाथी, केटला एक अयोग्य कर्म पण क्रोधना आवेशमां करेछे. ए विगरे घणा दोषो क्रोधथी थायछे, अने क्रोधथी कलह अने विरोध थइ कुसंपनी वृद्धि थाय छे. माटे क्रोध अति दुष्ट दुर्गुण छे. माटे सघळा बाळक अने बाळकीओये नानपणमांथी क्रोधने वश करवानी टेव पाडवाथी, आगळ उत्तम सुखनो अतुल्य लाभ थइ शके छे. एवी रीते उपर कहेला सघळा सनातन धर्म द्रढ करी राखवानी अवश्य अगत्य छे; अने तेथीज दिर्घकाळ सुधी टके एवी ऐक्यता थइ प्रांपंचिक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मीक ए चारे स्थिति उतक्रष्ट थवानुं अमुल्य साधनछे. केम जे ए सनातन धर्म कल्पवृक्ष अथवा कामदुर्गा रूप छे. हवे अधर्म कीया छे. तेनो विचार आपणे आगळ प्रसंग आवेथी करीशुं.

चैत्र वद्य ७ रवीवार संवत १९४२.

प्रकरण ४ थुं.

उत्तम संस्कार थवानां साधनो.

जे प्रमाणे योग्य रीते अति उत्तम रीते (धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष) ए चारेनी सीद्धि थवा सारु आपणे पुर्वे कहेला सत्य अने सनातन धर्मनां लक्षणो सघळा मनुष्य प्राणीने द्रढ करी राखवानी जे प्रमाणे, अवश्य अगत्यछे; ते प्रमाणे उपर कहेली चारेनी प्राप्ती थई शुभ संस्कार थवा सारु, शुभ ज्ञाननी उन्नतीने पामेला एवाज धर्मजीज्ञासु पुरुष अने स्त्रियो, तेमणे बाळपणथी उपला धर्ममां द्रढ आग्रहथी वर्तवामां विक्षेप करनारा जे अधर्मना लक्षणो तेने यथार्थ जाणी अने ओळखीने, तेथी निरंतर विरक्त रहेवानी पण अवश्य अगत्य छे. हवे जे अधर्म व्यक्तप्रकृतीनी स्फुर्णा थयाथी तेमांथी नीकळेला छे, तेने माया अथवा आवृण पण कहे छे. ते पण दस छे ते मनुस्म्रतिना अध्याय १२ मां कहेला छे.

परद्रव्येष्वभिधानं मनसानिष्टचिंतनं ॥
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधंकर्ममानसम् ५
पारुष्यमनृतंचैव पैशुन्यंचापिसर्वशः ॥
असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयंस्याचतुर्विधं ६
अदत्तानामुपादानं हिंसाचैवविधानतः ॥

परदारोपसेवाच शारीरंत्रिविधंस्म्रतं ।७।

उपला श्लोकमां जे दश अधर्म कह्या, ते सघळा मनुष्य प्राणी मन, वाणी, अने शरीर ए त्रणेथी करी शकेछे; परंतु एमांथी मन, वाणी, अने शरीरना प्रथक प्रथक अधर्मनी व्यवस्था उपलाज श्लोकमां करीछे. ते एवी रीते पारका द्रव्यनी अभीलाषा राखवी, मनमां कोई पण प्राणीनुं भुंडु इच्छवुं, अने मिथ्या अथवा असत्य निश्चय करवो, ए त्रणे कर्म मनना अधर्म छे. हवे कठोर अथवा दुःख लागे एवुं भाषण करवुं, जुठुं बोलवुं, अथवा मिथ्या भाषण करवुं, चाडीचुगली अथवा जुठां कावत्रां करवा. अने कोइनुं काम नहीं कर्ता ऊडवा ऊडवी करवी, ए चारकर्म वाणीना अधर्म छे. चोरी करवी एटले लांच रुसवत विगरे अयोग्य रीते द्रव्य मेळववुं एनो समास चोरीमां थाय छे. बीजु सर्व प्रकारनुं क्रुरकर्म अने सुक्ष्म प्राणी आदिकनो वध करवो. अने त्रीजु पापकर्म परस्त्रिनी उपसेवा अथवा परस्त्रिगमन एटले संग ए त्रणे कर्मथी शरीरनां पाप थइ शकेछे. एवी रीते मनुस्म्रतीमां पापनी वीगत कही छे. परंतु साधारण मनुष्यने स्पष्ट समजवा सारु एनो कांइक अधिक स्पष्टार्थ आ प्रसंगे करीये.

आपणे घणे प्रसंगे कही गया छीये जे, मन अने शरीरनो अति निकट संबंध छे. माटे मनमां कांइ

पण जातनी शुभ कींवा अशुभ कल्पना करी एटले तेनी तद्रूप असर शरीर उपर थइ, तेवां कर्म शरीरथी मन करावे छे. ए अचल नियम नीरंत्तर लक्षमां राखी मनमां कदापी अयोग्य रीते द्रव्य मेळववा वीचार उत्पन थवा देवा नही, अने तेम थवाथी काया अथवा शरीरथी तेवां अयोग्य कर्म थइ शकशे नहीं. अने कदापी जाणे अजाणे मनमां दुष्ट वासना राखी अयोग्य रीते द्रव्य मेळववानी इच्छा उत्पन थवा दीधी तो, पछी मनने तेवाजवाट अने तर्को करवानी टेव पडवाथी, ते शरीरने तेवा अशुभ कर्म करवाने प्रवर्तावे छे. एवी रीते अयोग्य रीते जेना तरफथी द्रव्य मेळव्युं होय तेना मनमां ते द्रव्य मेळवनार उपर धिक्कार अने द्वेष आवे छे. मित्र होय तो मीत्रता तुटे छे. अने शत्रु उत्पन घणा थाय छे. माटे अयोग्य रीते द्रव्य मेळववाथी ऐक्यतानो भंग थइ कुसंपनी पण वृद्धि थायछे. माटे बाळपणाथीज, पुरुषोये सत्य पुर्षार्थथी, द्रव्य मेळववानो अभ्यास राख्याथी, आगळ तेमनी प्रतीष्टानी वृद्धि थइ, संसारमां उत्तम सुख भोगवे छे. अने मन एवा दुष्ट वीचारथी विरक्त रेवाथी ते निर्मळ थइ सारा उत्तम धार्मिक विचार करवाने योग्य थायछे. तेवीज रीते बीजो मननो अधर्म एछे जे, मनमां कोइ पण प्राणीनुं भुंडुं इच्छवुं. तेम करवाथी पण मन मलीन थइ, शरीर दुष्ट कर्म करवाने प्रवर्ते छे.

अने तेथी आगळ मोटी हानी अने कष्ट सहन करवा पडेछे; माटे नानपणथीज, बाळक अने बाळकीयोने सूक्ष्म एवा जे जीव जंतु तेनो वध करवानी इच्छा उत्पन थवा देवी नहीं. पण एवो बोध आपवो के, जे प्रमाणे कोइ आपणे व्यथा करे ने दुख थाय, तेज प्रमाणे सुक्ष्म प्राणीने पण दुःख थाय छे. अने तेवी दुष्ट टेव पडवाथी आगळ युवावस्थामां बीजा मोटा प्राणी अने मनुष्यने कष्ट करवानी इच्छा उत्पन थइ मलीन अंतःकर्ण थवाथी सारां कर्म करवाने मननी इच्छा थती नथी, तेणे करी तेनो व्यवहार पण चालतो नथी तो पछी बुद्धि ज्ञान प्राप्त करी उत्तम कर्म करवाने अधिकारी थवायज नहीं माटे नींरंतर शुभ इच्छा सर्व प्राणी उपर राखवानी अवश्य अगत्य छे, तेमां विशेषे करी मनुष्य प्राणी विशे नीरंत्तर शुभ इछा राखवानी अति मोटी अगत्यछे हवे त्रीजुं पाप मिथ्या निश्चय-करवानुं कह्युं छे. ए उपर हालना घणा धर्माधीकारी अने धर्मी गणायलां स्त्रि अने पुरुषोनुं लक्ष नथी तेथीज अंध परंपराने रस्ते चालवानी पद्धति आपणा आर्यबंधुमां चाली छे. ए विषे घणुं करी साधारण मानसीक ज्ञानवाळा पुरुषो पण निष्पक्षपात रीते विचार करशे तो तेमने जणाशे जे, मिथ्या निश्चय अथवा खोटो विचार करी, कोइ पण व्यवहारीक कार्य करवाथी, तेमां लाभ नहीं थतां, उटली हानी थाय छे.

माटे जे कांइ पण विचार वाळां स्त्रि अने पुरुषो छे, ते पोताना प्रापंचीक, सामाजीक, अने राज्यकीय कार्योमां प्रथम निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी जे सत्य जणाय तेनोज निश्चय करी कार्यो करेछे; तेथीज तेमां योग्य लाभ थइ धारेला कार्यनी सिद्धि परीपुर्ण थइ शकेछे. एम छतां पण तेवा विचारवाळा पुरुषो धार्मिक कार्यमां निष्पक्षपात रीते विचारकरी सत्य असत्यनो निर्णय करता नथी पण केटलाएक तेवा पुरूष अंधपरमपराने रस्ते दोराया जायछे, अने बीजा हालनी दोशित केळवणीनी सत्तावाळा केटलाएक स्त्रि पुरूषो तेमां कांइ पण लक्ष नहीं आपतां सघळां धार्मिक कार्यो मिथ्या अने असत्य मानी नीरंतर संसारना देखाता सुखनी अपरीमित त्रणा राखी तेमांज निमग्न रहे छे; तेणे करी तेवा पुरूषो अने स्त्रियोने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति थइ तेना योगे महा अदभुत कार्यो करी, अखंड अने अविनाषी सुखनी प्राप्तिना संस्कारो थइ शकता नथी. तेथी ते मंद बुद्धिना रेवाथी अने केवळ स्वार्थ करवा उपर द्रष्टि रेवाथी, व्यवहारीक कार्योमां घणु करी, अयोग्य रीते वर्तवाथी, कुसंप अने द्वेषनी वृद्धि थाय छे तेथी अंते प्रापंचिक सामाजीक अने राज्यकीय उत्तम सुखनी प्राप्ति करवाने, अशक्तिवान थइ तेवां स्त्रि पुरुषो माइक असत्य सुखमांज आनंद पामी तेमांज निरंतर निमग्न रहे छे. माटे

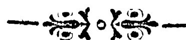
मिथ्या निश्चय करवाथी सर्वस्व हानी थाय छे. माटे बाळक अने बाळकीयोने नानपणथीज सघळां कार्योमां सत्य निश्चय करवानी टेव पाड्याथी आपणा देशनी उन्नति थइ शकशे. हवे वाणीथी जे, अधर्म अथवा पाप थइ शके छे, तेमां प्रथम कठोर अथवा कोइने दुःख लागे एवुं भाषण करवानी टेव पड्याथी परस्पर विरोध अने कुसंप वधी, शत्रुता वृद्धि पामे छे, तेणे करी सघळा व्यवहारीक अने धार्मीक ए बेउ कार्यो उत्तम रीते थइ, यथार्थ लाभ थतो नथी; पण उलटी हानी थायछे. एनो विचार साधारण मानसिक ज्ञानवाळा अने सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा जनो करशे तो तेमने जणाशे, माटे ए विषे अधिक बोलवानी आ प्रसंगे अगत्य नथी. बीजु वाणीनुं पाप अथवा अधर्म मिथ्या भाषण अथवा जुठुं बोलवुं. बाळपणमांथी जुठुं बोलवानी टेव पडवाथी आगळ व्यवहारमां उत्तम कार्यो करी उत्तम लाभ मेळवी शकाता नथी एटलुंज नहीं पण सारा अने विद्वान माणसमां तेनी अप्रतिष्ठा थइ अंते हानीज थाय छे, तो पछी सत्य धार्मीक कार्य करवाने तेवा स्त्री अने पुरूषथी संस्कारी थवातुं नथी त्रीजुं वाणीनुं पाप अथवा अधर्मचाडी चुगली अथवा छळभेद अने कावत्रां करवां एज छे. एवा स्त्रि पुरुषोने अंते व्यवहारमां पण हानी थाय छे. सत्य अने विचारवंत पुरुषो तेवा प्रपंची पुरुषोनो विश्वास क-

रता नथी तेथी तेवा निच मनुष्यनो संग अने प्रसंग कर्याथी संस्कारी पुरुषनी बुद्धि उत्तरोत्तर मंद थइ. ते निरंत्तर कुकर्म करवाने प्रवर्ते छे, तेनुं फळ अंते तेने भोगववुंज पडेछे. माटे बाळक अने बाळकीयोने, नानपणथी एवा अधर्मथी दूर राखवाने प्रयत्न करवानी अगत्य छे. हवे चोथुं वाणीनुं पाप अथवा अधर्म, जाणी जोइने उडवा उडवी करवी, एटले कोइनुं कार्य मनथी नहीं करवानी इच्छा छतां, बाहारथी उपलक तेने विश्वास आपी तेना कार्यनी हानी करवी. एवा स्त्रि पुरुषोनुं पण अंते आलोक अने परलोक ए बेउमां मोहुं वेहेलुं निश्चय भुडुं थया विना रेहेतुं नथी माटे ए विषे अधिक बोलवानी अगत्य नथी—हवे शरीर अथवा कायाथी जे पापकर्म थइ शके छे तेमां प्रथम द्रव्य मेळववा सारु न करवानुं करवुं एटले लांच लेवी, अथवा भरोसे रहेला मनुष्य पासेथी अधीक द्रव्य लेवुं, अने चोरी करवी वीगरे अयोग्य रीते द्रव्य संपादन करवानी टेव पड्याथी, अंतःकर्ण मलीन अने घातकी थाय छे. लोकोमां मोडी वहेली लाज पण जाय छे. स्नेह अने प्रिति तुटेछे अने सर्व प्रकारे ऐक्यतानो भंग थायछे माटे नानपणथी बाळक अने बाळकीयोने, एवा अधर्म अथवा पापथी जाणीता करी कांइ पण वस्तु सत्यताथी, अने नितिथी, मेळववानी टेव पाडवानी अवश्य अगत्य छे. बीजुं शरीरनुं पाप अथवा कर्म स-

वे प्रकारनी हींसा अथवा क्रूर कर्म नहीं करवानो बोध बाळपणथी नानां छोकरांओने करवाथी, ते मनुं लक्ष मोटपणे एवा क्रुर कर्म करवा भणी जतुं नथी. तेथी तेमने व्यवहारीक, अने धार्मिक ए बेउ कार्योमां उत्तम लाभ थइ निर्मळ अंतःकर्ण थवाथी निर्गुण महत्वनां कार्यो करवा भणी तेमनुं लक्ष जाय छे. त्रीजुं शरीर अथवा कायानुं पाप कर्म पुरुषे परस्त्रिनो संग करवो अने स्त्रिये परपुरुषनो संग करवो ए छे. एथी शरीरनी क्षिणता थइ मान प्रतिष्टानी पण हानी थइ सारा लोकमां निंदाने पात्र थायछे अने मन सदा सर्वदा एवा पाप कर्ममां प्रवर्तवाथी मानसीक ज्ञाननी पण क्षीणता थवाथी, एवां नर नारी पतित थइ मुआ पछी अधोगतिने पामेछे. अने पिशाच विगरेना सुक्ष्म देह धारण करी पोतानी मलीन वासना, पृथवीनी आसपास केटलोक काळ सुधी, भ्रमण करी ते त्रप्त करवाने दिर्घ प्रयत्न कर्या छतां शांति थती नथी, अने वारंवार पुनरावृतीना कनिष्टदेह धारण करी, कष्ट पाम्या करे छे माटे ए अति मोटुं पाप कर्म छे. तेथी सघळा विवेकी पुरूष अने स्त्रिओए नीरंत्तर सावध रही पोताना बाळक अने बाळकीयोने, सदा उत्तम नितिना बोध आपी एवा पाप कर्मनो अंकुर पण उत्पन थवा देवो नहीं एवी रीते अधर्मनी व्यवस्था प्राचीनकाळना महा परोपकार बुद्धिना रुषी अने मुनीओए करेली छे.

अने ते प्रमाणे ज्यां सुधी स्त्रि पुरूष दृढ आग्रहथी वर्तता हता, त्यां सुधी आपणा आर्य वर्गनी प्रापंचीक सामाजीक, राज्यकीय अने धार्मीक ए चारे स्थिति उत्तम थइ, आ लोक अने परलोकमां उत्तम सुखनी प्राप्ति करी शकता हता. ए आपणे प्राचिन इतीहाश उपरथी स्पष्ट जणायछे. माटे सघळा मतपंथवाळाओ अति प्राचिनकाळना निर्दोष धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां पोताना सेवकोने राखवानो आग्रह करशे, तोज तेमने पण लाभ थइ, आपणा आर्य वर्तनी उत्तम स्थिति थवानो संभव छे. एथी अधिक आ प्रसंगे कहेवानी अगत्य नथी.

वैशाक शुद ७ रवीवार संवत १९४२.



प्रकरण ५ मुं.

सामान्य धर्म.

सांपतकाळना आर्य वर्तना काळ चक्रमां आवेला अने निस्तेज थयेला आर्यबंधुना, बाळक अने बाळकीओने सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां द्रढ आग्रहथी रहेवानी टेव पाड्या पछी, ते आगळ युवावस्थामां आवी सघळा प्रापंचीक, सामाजीक, अने धार्मिक कार्यो करवाने योग्य थवा मांडे एटले तेओ ते सघळां कार्यो उत्तम रीते करी तेमनी उत्तम स्थिति थया पछी परस्पर स्नेह अने प्रिति उत्पन थइ,

दीर्घकाळ सुधी टकी शके एवी ऐक्यता थवा सारु अने पुर्व वयमां निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी सत्य स्फुर्णा थइ अखंड अने अविनाषी सुख प्राप्त करवानां साधन भणी लक्ष जवा सारु तेमने सतशास्त्र प्रमाणे सामान्य धर्मनी मर्यादामां रहेवानी अवश्य अगत्य छे; ते सामान्य धर्मनो विचार आ प्रसंगे कर्याथी, निष्पक्षपाती सत्य शोधकोने निश्चय लाभ थशे.

१. भगवतगीताना अध्याय १८ ना श्लोक ६१ मा एवुं कह्युछे जे "इश्वर अथवा महाप्रतापी अंतरात्मा अथवा सुत्रात्मा प्रत्येक मनुष्यप्राणीना अंतःकर्णमां रहेलो छे." एवी रीतनो द्रढ आग्रहथी मनपुर्वक सिद्धांत करवाथी, तेवा मनुष्यने अधीक बळ आवे छे; अने ते पोताने अति तुच्छ समजी, बीजा कोई अंतरे रहेला इश्वरनी कृपानी इच्छा राखतो नथी, ते इश्वरने निरंतर सानिध्य समजी जे कार्यो करेछे; तेमां प्रथम विवेकथी सत्य असत्यनो निर्णय करेछे. तेथी तेना कार्यमां घणु करी न्युनता आववानो संभव घणो थोडो रहेछे अने सघळामां साक्षी आत्मा समजवाथी, पोतानो अने बिजानो लाभ समान समजे छे, तेथी ते केवळ स्वार्थि थतो नथी, अने परमार्थना कार्यो स्वार्थरहित करवाने प्रवर्ते छे, तेणे करी ते पोताना कुटुंब, न्यातजात, अने घणुंकरी सघळा मनुष्य प्राणीमां भ्रातुभाव राखे छे, तेथी ते घणा समान स्वभावना मनुष्य प्राणीनी

प्रिति अने स्नेह संपादन करे छे एटलुंज नहीं पण, उत्तम प्रकारनी ऐक्यता करी, पोताना अने बीजाना व्यवहारिक अने धार्मिक, ए बेउ कार्यो उत्तम रीते करी, तेमांथी निर्दोष लाभ मेळवी शकेछे. माटे साक्षि इश्वर नीरंतर पोतानी पासे छे, अने ते आपणा सघळा कर्मो जाणे छे, एम समजी सदा सर्वदा सनातनधर्म अने अधर्मनी मर्यादामां रही सघळां कार्यो करवानो अभ्यास युवावस्थावाळा स्त्रि पुरुषोये पाडवाथी परीणाम अंते निश्चय उत्तम थशे.

२. मनुस्म्रतिना अध्याय ८ ना श्लोक ८५ अने माहाभारतना १ पर्वना ३०१५ मा श्लोकमां एवुं कह्युंछे जे "अरे मनुष्यप्राणी तुं एकलो जुदो छे, एम समजी तुं मायावी जीव स्वछंदपणे मरजीमां आवे तेम वर्ते छे. तारा अंतःकरणमां अनंत अने अवीनाशी शुद्ध आत्मा छे, तेने तुं जाणतो नथी. जे तुं कार्य करे छे ते शुद्ध आत्माने अजाण्युं नथी; तेनी स्म्रती नीरंतर ते राख्या करे छे. ते पोतपोतानो साक्षी छे, अने पोतानो रक्षण कर्ताछे तेज सर्वोपरी अने अनादी मनुष्य प्राणीनो साक्षी छे तेनी अप्रिति कोई समये थवा देतो नहीं.

एवी स्म्राति जे, स्त्रि, पुरुषोना मनमां नीरंतर रहेछे. तेनाथी अयोग्य कार्य थवानो संभव नथी. केमजे, ते इश्वरने सदा पोतानी पासे समजे छे. इश्वर कांइ बीजे अंतरे नथी, तेथी ते जो कांइ अ-

योग्य कर्म करेतो ते इश्वरथी अजाण्युं नथी, एवी रीते सघळा कार्योमां वर्तवाथी अंतःकर्ण नीरंतर शुद्ध रही, पोतानो जे स्वार्थ तेज पारकानो स्वार्थ समजे छे. पारकामां अने पोतानामां भेद तेवा स्त्री पुरुषो समजता नथी, तेथी तेमनाथी परोपकारना कार्यो करवामां द्रष्टि अधीक रहे छे. तेणे करी संप अने ऐक्यतानी वृद्धि उत्तरोत्तर अधिक थती जाय छे. अने कोइनी साथे पण कपट अने छळभेद करवाने तेनी वृत्ति थती नथी. तेथी तेमनां सघळां कार्यो नीर्गुणज थाय छे.

३. वळी माहाभारतना अनुसासन पर्वना अ. ८ श्लो. ३० मां. अने मनुस्म्रतिना अ. १२ श्लो. ३ अने विष्णु पुराण विगरे सतशास्त्रोमां एवुं कह्युंछे जे "जे प्रमाणे आपणा मानसिक, वाचिक, अने कांइक कुकर्मो शुभ अथवा अशुभ होय, ते प्रमाणे तेनां फळ सारां अथवा माठां थायछे. अने मनुष्यनां कार्यो उपरथीज तेना जन्म उत्तम, मध्यम, अने कनीष्ट थायछे. मनुष्य प्राणी जे सुख अने दुःख भोगवे छे, ते मात्र पोतानाज शुभ अने अशुभ कर्मनुं परीणाम छे. मनुष्य पोतानी वर्तणुकनुज शुभ कींवा अशुभ फळ भोगवे छे.

एनी सत्यता, महाविद्वान, अने दीर्घकाळना अनुभवी रुषी अने मुनीओए दीर्ध प्रयत्न करी, स्व अनुभव उपरथी सिद्ध करेली छे; ते सांप्रतकाळना

विद्वान, अने भणेला पुरुषोमांथी घणाने असत्य जणाय छे, तेनुं मुख्य कारण एछेजे, तेओ संसारना देखीता अल्प सुखनेज, सत्य मानी, तेज मेळववा परीपूर्ण लक्ष राखेछे, पण एवा महत्वना विषयो उपर तेमणे निष्पक्षपात रीते परिक्षा करी सत्य असत्यनो निर्णय करवा प्रयत्न करेलो नथी एज छे; एम छतां सांप्रतकाळमां पण केटलाएक निस्पृही अने केवळ सत्य जाणवानी इच्छा राखनारा परोपकार बुद्धिना पुरुषो, जेणे एनी निष्पक्षपात रीते परिक्षा करेली छे, तेमनेतो उपर कहेला महारुषीना सिद्धांत सत्य जणायां छे, माटे मिथ्या अभिमाननो त्याग करी सत्य असत्यनी परीक्षा करी, सघळां कार्यो करवानी टेव हालना युवावस्थावाळा स्त्रिपुरुषो राखशे तोज ते तेमने केवळ सत्य जणाई, तेमनी व्यवहारीक अने धार्मिक ए बेउ स्थिति उत्तम थवानो संभव छे.

४. मनुस्म्रतिना अ. ६ ना श्लो. ६४ अने १२ मां एवुं कह्युंछे जे. आसुरी प्रकृतिवाळा जीवात्माने जे संताप अने दुःख प्राप्त थयुंछे, ते पोताना सत्य कर्मनो त्याग कर्याथीज थयुं छे. अने जे अखंड अने अविनाषी आनंद अने सुख प्राप्त थाय छे, ते पोताना दैवी प्रकृतिना सत्य अने शुभ कर्म नीरंतर कर्याथीज थई शकेछे.वळी तारी निश्चयात्मक बुद्धिथी विचार करशे तो तने जणाशे जे, जीवात्माने पु-

नरजन्म अने मर्ण करावनारा सद्गुण अने दुर्गुणना कर्मो छे. ते माटे तारे निरंतर तारु अंतःकर्ण शुभकर्म करवाज प्रवर्तावववानी टेव राखवी अने सदा सर्वदा-काळ, मानासिक, वाचिक, अने शारीरिक ए त्रणथी विकार रहित अंतःकरणनी निर्मळता राखवी.

उपर कहेला चोथा नीयमनी सत्यता विषे, घणुं करी साधारण मानसिक ज्ञानवाळा स्त्रि पुरुषोने पण संसय उत्पन थाय एवुं नथी, माटे ए विषे आ प्रसंगे अधिक नहीं केतां एटलीज सुचना आपवानी अगत्यछे के, जे स्त्रि पुरुपने अखंड अने अवीनाशी सुख प्राप्त करवाना उत्तम साधनो मेळववानी इच्छा छे, तेमणेतो द्रढ आग्रहथी ए नीयम प्रमाणे वर्तवाने प्रयत्न करवानी अवश्य अगत्य छे.

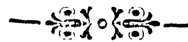
५. भगवतगीताना अ. ६ ना. श्लो. ४ मां एवुं कह्युं छे जे. तारे पोतानी मेळेज उत्तम स्थिति प्राप्त करवाने प्रयत्न करवानुं छे. पोतानो जीवात्मा जेम पोतानो उत्तम स्नेहीछे, तेमज ते पोतानो शत्रु पणछे.

उपर कहेला पांचमा नियम विशे आ प्रसंगे कांइक अधिक स्पष्टार्थ कर्याथी, अल्पज्ञानी अने केवळ धर्म भोळा स्त्रि पुरुषोने अधिक लाभ थई शकशे. एमां प्रथम कह्युं जे, तारे पोतानेज उत्तम स्थिति प्राप्त करवाने प्रयत्न करवानुं छे. एनी सत्यता आपणे साधारण विचार करीशुंतो जणाशे. घणु करी सघळाना जाणवामां छे जे बाळक नानप-

णमांथी जेवी उत्तम विद्या अतिश्रम सहन करी प्राप्त करेछे, तेम तेने ज्ञान प्राप्त थई ते प्रमाणमां तेने उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट स्थिति आगळ प्राप्त थाय छे. वळी आपणा जाणवामां छे जे, युरोप देशना विद्वान आजे जे अति उत्तम स्थिति अने सत्ता भोगवे छे, ते पोताना दीर्घ पुरुष प्रयत्नथीज छे, अने आपणे उत्तम स्थितिमांथी अधम स्थितिमां आववानुं कारण पण आपणी आळश अने बीजाना उपर आधार राखवानी टेव एज छे. अने ज्यारे संसारिक कार्यमां ए प्रमाणे छे तो, पछी धार्मिक कार्यमां पुरुष प्रयत्ननी अवश्य अगत्य होवीज जोइए. बीजा महान गणायला पुरुषनो मात्र आशरो करवाथी अने तेमनुं दासत्वपणुं करवाथीज धार्मिक अंतनी अति उत्तम स्थिति प्राप्त थई शकती नथी, माटे गितामां श्रीकृष्णभगवाने कहेला वचनो उपर निश्चय राखी द्रढ आग्रहथी, सघळा स्त्रि पुरुषोए, मानासिक, वाचिक, अने काइक ए त्रणे पुरुषार्थ करवाने निरंतर प्रयत्न करवाथीज, अखंड अने अविनाषी सुखनी प्राप्ति थई शकशे. वळी आगळ गितामां भगवाने कह्युं जे, जीवात्मा पोतानो स्नेही छे तेमज शत्रु छे. ए पण सत्यछे. केमजे दैवीप्रकृतिना योगे सत्य असत्यनो निश्चय करी निरंतर शुभ कर्म करवाथी, ते जीवनी उन्नति थाय छे. माटे ते स्नेही छे. अने अंध परंपराने अथवा आसुरी प्रकृतिना

मार्गे जवाथी तेज जीवात्मा अमावास्याना चंद्र जेवो खद्योत थायछे. माटे ते पोतानो शत्रुछे. एवी रीते आपणे जेम जेम एकाग्र चित्तथी, विचार करीशुं तेम तेम आपणे स्पष्ट जणाशे जे, गीतामां जे उपर कह्युं ते सघळुं सत्य छे. अने जीवात्माने प्रकाषमान अने पुर्णिमाना चंद्र जेवो करी तेने उत्तम स्थिति प्राप्त करवानुं साधन दैवीप्रकृतिना योगे पुरुष प्रयत्न छे. एटलुं कही आजना व्याख्याननी समाप्ति करीए छइए.

संवत् १९४२ ना वैशाख वद ५ रवीवार.



प्रकरण ६ ठुं.

आपणे निष्पक्षपात रीते आपणी सांप्रत आर्यवर्तनी धार्मिक स्थितिनो विचार करीशुं तो, जणाशे जे, आपणा उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा अने प्रापंचिक, अने समाजीक वीगेरे कार्योमां कुशळअने विवेकी सद ग्रहस्थोमांथी, घणा, मनुष्यो, धार्मिक कार्योमां अल्प मतीवाळानी पेठे सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय कर्या विना विवेक रहित धर्मनां सघळां कार्यो कर्या करे छे. अने केटलाएक मात्र पश्चिम देशनी केळवणीनी सतावाळा पुरुषो सघळा धार्मिक शास्त्रो उत्तम विवेकथी परीक्षा कर्या वीना असत्य अने मिथ्या समजी तेनो तीरस्कार करेछे. तेमां आपणा पुराणोने तो, केवळ असत्य अने स्वार्थ सिंधु स-

मर्जी तेनो दुराग्रहथी तीरस्कार करेछे. एवी रीतनी धार्मिक स्थिति निस्तेज दशामां आवी छे. माटे सां प्रतकाळमां परोपकार बुद्धिना अने निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी सत्सनुग्रहण करवानी इच्छा राखनारा विद्वान अने आग्रही पुरुषोने पुराणादीकमां पण अति उत्तम ज्ञाननां सुबोध वाक्यो घणां द्रष्टि पडशे.

६. मुख्यत्वे करी विष्णु पुराणना ९ अने ७ मा अध्यायना २९—३० श्लोकमां सर्वोपरी अति उत्तम बोध करेलो छे. तेमां एवुं कह्युं छे जे मनुष्य प्राणीना बंधन अथवा पुनर जन्म अने मर्णनुं कारण अने मोक्ष अथवा जन्म मर्णथी मुक्त थवुं. ए बेउनुं मुळ कारण मन छे. अने जे मन इंद्रियोना विषयनी अपरीमित त्रष्णानुं बंधायलुं छे, तेज तेना बंधन अथवा पुनर जन्म मर्णनुं कारण छे. अने इन्द्रियोना विषयो कदापी योग्य रीते भोगवतां छतां तेमां त्रष्णा नहीं राखता, तेमांथी मन विरक्त करवुं, ए मोक्षनुं साधनमांनुं एक साधन छे. ते माटे उत्तम मानसिक ज्ञानवाळां जे स्त्रि पुरुषो छे, अने जे उत्तम विवेकी छे ते पोताना मननी वृत्तिनो पंच विषयमांथी निग्रह करी परब्रह्म अथवा परमात्मानुं एकाग्रताथी ध्यान मात्र एक कैवल्य मोक्षनी प्राप्ती ने अर्थेज करे छे.

एवी रीते पुराणादीकमां अति उत्तम प्रकारना ज्ञाननां वाक्यो उपर,कथा करनारा पुराणी अने पं-

डीतो यथार्थ लक्ष आपी, केवळ शुभ इच्छाथी, श्रो ताजनने सत्यज्ञाननो बोध करे तो तेमने लाभ थाय, परंतु पोते त्रष्णाथी भरपूर होवाने लीधे तेनो शुभ अने सत्य मर्म अथवा भावार्थ नहीं समजवाथी वर्षा काळना परजन्यनी पेठे अति उत्तम ज्ञानरूपी अमृत मलिन अंतःकर्णरूपी मोरी अथवा गटरमां व्यर्थ जाय छे. अने तेणेज करी, कथा पूराणादिकनुं श्रवण दीर्घ काळ सुधी करेलुं छतां श्रोताजनो अमांवास्या ना चंद्र जेवा खद्योत रहे छे. तेथी कांइ पण लाभ नहीं थतां तेवा प्रसंगे मळेला स्त्रि पुरुषोना समागम-थी उलटी विषयनी त्रष्णा वृद्धिने पामे छे. तेथी बंध-न उत्तरोत्तर अधिक थाय छे. अने तेवी वृतिथी करेलुं दान अने पुन्य पण व्यर्थ जाय छे.

७ मनुष्य प्राणीने वर्तवा सारु सातमो साधारण नीयम मनुस्म्रतिना अ. ४ ना श्लो. २३७–२४१ मां एवुं कह्युं छे जे, "मनुष्यना पुनर जन्मना मार्गमां, तेना माता पिता, स्त्रि, पुत्र अने सगा संबंधी वीगरे कोइ पण साक्षी नथी. तेना जीवात्माने तेना कर्मनुंज लपन रहेछे एटले पोतानां कर्मज साक्षी छे, ते माटे सघळा मनुष्य प्राणीये नीरंत्तरनो साथी करी लेवा सारु जेम बने तेम सदगुण अने परोपकारना कर्मनी, स्वार्थ रहित, वृद्धि करवानी अगत्य छे. अने सदगुण रुपी साथीनी सहायताथीज, अंधकार अने महा विकट मार्गे उत्तम रीते जवाइ शकाय छे.

आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे. सघळा मत पंथना भावीक अने कल्याणनी इच्छा राखनारा स्त्रि पुरुषोये, सत्य विवेक द्रष्टिथी जोइ, नीरंतर पोताना व्यवहारीक कार्यमां कपट अने छळ भेदनो त्याग करी, सदा शुभ कर्मो अने स्वार्थ रहित परोपकारनां कार्यो करवानो अभ्यास राख्याथीज; आ लोक अने परलोकमां उत्तम सुखनी प्राप्ती थइ शके छे, परंतु दंभ, मिथ्या अभिमान अने दुर्गुण सहीत कोइ पण जातनी भक्ति, अने दान धर्म करवाथी ते सघळुं मिथ्या जइ. अंते परिणाम अशुभ थया विना रहेतुं नथी. माटे केहेवत प्रमाणे—पाणी आव्या पेलां तेनी पाळ बांधी, असत्य मार्गनो विवेकी पुरूष अने स्त्रिओए त्याग करी पोताना संप्रदायनी मर्यादामां रही सत्य शास्त्रमां उपर कह्या प्रमाणे सामान्य धर्म द्रढ आग्रहथी राखी नीरंतर निति अने सद्गुण विगरे उत्तम गुणोनी वृद्धि करवाने प्रयत्न करवानी अवश्य अगत्य छे.

८ आपणे उपर कह्युं जे, सद्गुणनी वृद्धि करवाथी आ लोक अने परलोकमां उत्तम सुखनी प्राप्ति थइ शके छे, माटे ते उत्तम गुणो कीया, ते जाणवानी अवश्य अगत्य छे मनु स्म्रतीना अ० ९ श्लो० १९२ मां मुख्य सद्गुण मनु भगवाने दश कह्या छे. तेनो विचार आ प्रसंगे करीये—१ संतोष. २ कोइ पण प्राणीने मिथ्या व्यथा अथवा दुःख

उत्पन थाय एवा कार्योथी विरक्त रेहेवुं. तन, मन, अने धनथी पोतानी शक्ती प्रमाणे सत्य परोपकार करवो. अपकारने बदले उपकार करवो ३ इन्द्रिओना विषयभोगनी त्रष्णानो निग्रह करवो एटले तेने उत्पन थतां अटकाववी, इन्द्रियोने विवेकथी नियममां राखवी. ४ कोइ पण रीते अशुभ अथवा अंयोग्य रीते द्रव्यादिकनो स्वार्थ करवो नहीं. ५ मन अने शरीरनी निर्मळता सदा राखवी अने ब्रह्मचर्य व्रत, पाळवानो अभ्यास राखवो. अने बाह्य अने अंत्तर शौचथी सदा निर्मळता राखवी. ६ पोताना मनना विकार उपर द्रष्टि राखी तेने उत्पन थता अटकाववा, ७ जेम बनेतेम ज्ञाननी वृद्धि करता जवुं. ८ निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञानना योगे सत्य इश्वरी ज्ञान प्राप्त करवुं. ९ सत्यता अने कोइना पण सदगुणनुं ग्रहण करवुं. अने दसमो सदगुण क्रोध करवो नहीं तेमज कोइनो पण तीरस्कार करवो नहीं एटले मननी शांती अने सर्व प्राणी विषे शुभ इच्छा राखवी.

एवी रीतना दश सदगुणनी द्रढता जेम जेम थती जशे, तेम तेम मन, बुद्धि, चित्त विगरे निर्मळ थता जशे; अने ते यथार्थ नीर्मळ थया एटले, अंतर आत्मा उपरथी माया अथवा आसुरी प्रक्रतीनो आव्रणरूपी पडदो खशी जई, आपोआप शुद्ध आत्मानी स्फुर्णा थई, अंतरमां दीव्य प्रकाष थई, महा अदभुत अने अलोकिक शक्ति वगर इच्छाए प्राप्त

थई शकशे. वळी ए सद्गुणो गुह्य विद्याना प्रथम विद्यार्थीने अति उपयोगी छे. अने एनी द्रढता थवाथी, ते विद्यार्थीनां साधनोनी प्राप्ती अल्पश्रमे अने अल्प काळमां थई शके छे. अने एज सद्गुणोना योगे मनुष्य प्राणीने संसारना विषयोनुं बंधन थतुं नथी एटलुंज नहीं पण, योगविद्या प्राप्त थया पछी महा अद्भुत अने अलौकिक शक्ति प्राप्त थया छतां, ते सदा सर्वदा निर्मळ रही, तेने पंचविषय अथवा आसुरी मायानुं आवरण लेपन करतुं नथी; तेथी ते पोतानी अद्भुत शक्ति, मान, प्रतिष्ठा, पुजा सेवा अथवा कोई पण जातना पोताना स्वार्थ सारू, साधनो प्रगट करता नथी. अने ते केवळ साधारण मनुष्य सरखो रही पोतानो काळ कमण घणु करी निवृति स्थानमां करे छे. अने काळचक्रना नीयममां रही प्रसंग आवेथी केवळ परोपकार बुद्धिथी, सत्यज्ञान मुमुक्षजनोने परोक्ष अने अपरोक्ष रीते आपेछे. अने एवाज पुरुषथी, 'आ कळीयुगना समये एटले विषयभोग अने संसारना सघळा क्षणिक सुखनी अपरीमित त्रणाना समये, कांइपण सत्य, धर्म अने सत्यविद्यानो अंश रह्यो छे. अने तेणे करी आगळ काळचक्रनो शुभ समय आवी मनुष्यना घणा समुहनुं वलण सत्य अने सनातन धर्मनी मर्यादामां रही, अति उत्तम विद्याना योगे, निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थयाथी, संसारना सघळा क्षणभंगुर

अने मिथ्या सुख समजी ते कर्मानुसार भोगवताछतां त्रष्णा रहित थई घणा मनुष्यो सत्यताथी वर्तशेतो पाछो सतयुग आववानो संभव छे. ए उपर सत्यशोधक पुरुषोए लक्ष राखवानी अवश्य अगत्यछे.

संवत् १९४२ ना वैशाख वद्य १२ ने रवावार.

प्रकरण ७ मुं.

उत्तम मानासिक ज्ञानवाळा पुरुषो अने स्त्रियो जेने, निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी केवळ सत्यमार्गे जई, निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान मेळववानी इच्छा छे. तेमने जे प्रमाणे सदगुणनी व्रद्धि करवानी अगत्यछे ते प्रमाणे पंचभुतवाळा देहथी केटलाक दुर्गुणो उत्पन्न थई शके छे. ते यथार्थ रीते जाणी तेनो त्याग करवानी पण अवश्य अगत्य छे. माटे आ प्रसंगे प्रथम मुख्य दुर्गुणो कीयाछे तेनो विचार करीए.

१. ए विषे मनुस्मृतिना अ. ४ ना श्लो. १६३ अने अ. १२ श्लो. ३२ मां स्पष्ट रीते मुख्य दुर्गुणो दर्शावेला छे. ते उपर मुमुक्षुजनोये निरंतर लक्ष राखी तेनो अंतःकरणमां प्रवेश नही थवा देवाने प्रयत्न कर्याथी, उत्तम लाभ थशे. दुर्गुणोमां प्रथम दुर्गुण "पोतानो केवळ स्वार्थ करी लेवानी अपरिमित त्रष्णा निरुद्योगी द्रव्यनो अपरिमित लोभ, कोइने दुषण देवुं, तथा कोइने मिथ्या आरोप मुकी तेनी प्रतिष्ठानो भंग करवाने प्रयत्न करवुं, असत्य, ता-

किकज्ञानना योगे नास्तिकपणुं निति अने सत्य धर्मना वाक्यो उपर अलक्ष रहेवुं. पोताने केवळ निर्माल्य समजी बीजानी सहायतानी नीरंतर अभिलाषा, सर्व कार्योमां राखवी. पुरुष प्रयत्न करी कार्यो करवामां अलक्ष राखवुं. अने धर्म छेज नही एम समजी स्वछंदपणे अविवेकथी वर्तवुं. पुनरजन्म मिथ्या अने असत्य समजवा. वेदादिक सतशास्त्र उपर अलक्ष रहेवुं. माहात्मादिक देवताने तुच्छ समजवा. ए शिवाय मलिन अंतःकर्णथी सर्व मनुष्य प्राणीनो धिक्कार करवो. पतराजी, गर्व, क्रोध, अने मनुष्य प्राणी उपर दुष्ट द्रष्टि राखवानो अभ्यास राखवो. ए वगिरे कह्या छे.

एवी रीते उपर कहेला सर्वे दुर्गुणथी, मनुष्य प्राणीनुं अंतःकरण नीरंतर मलीन रहे छे तेणे करी ते सदा दुष्ट कर्मो करवाने प्रयत्न करी, संसारना मिथ्या सुखनी प्राप्ति अयोग्य रीते करवाने मर्ण पर्यंत प्रयत्न करे छे. तेवां स्त्रि पुरुषने शांति कदी पण थती नथी; अने पोतानो अमुल्य मनुष्या देह व्यर्थ खोइ पुनापि नीच योनीने प्राप्त थइ, अनेक प्रकारनां कष्ट सहन करी, पुनरावृतिना दिर्घकाळ चक्रमां भ्रमण कर्या करेछे. तेवां स्त्रि पुरुषने पशुनी पण उपमा आपी शकाती नथी. माटे सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा उत्तम विवेकी स्त्रि पुरुषोए, एवा दुष्ट मनुष्यनो समागम सर्व प्रकारे वर्ज करवानी अव-

श्य अगत्य छे, केमजे आपणे पुर्वे कह्या प्रमाणे एवा महा पापी दुष्टना संगष्टणथी, तेना मलिन अने विकारयुक्त कल्पना, जे श्वास नीकळे छे, ते बीजाना निर्मळ अंतःकर्णमां जवाथी तेमने पण विकार करेछे; एवुं केवळ सत्य शोधक विद्वानोथी, सिद्ध थयेलुं छे, ते आपणे पूर्वे घणे प्रसंगे दर्शावेलुंछे.तेथी ए विषे आ प्रसंग अधिक कहेवानी अगत्य नथी.

१० वळी मनुस्म्रातिना अ० ४ना श्लो. २४६ मां एवुं कह्युं छे जे, "शुभ कर्मो करवाने अति आग्रह राखवो. तारा मनना सर्वे विकारो उपर सत्ता प्रबळ राखवी. अने दान धर्म पात्र जोइ योग्य मनुष्यने पोतानी शक्ति प्रमाणे करवानो अभ्यास राखवो. सदा नम्रताथी वर्तवानी टेव राखवी. धिर्यताथी कष्ट सहन करवां. दुष्ट अने दुर्गुणी मनुष्यनो समागम करवो नहीं. कोइ पण प्राणीने दुख अथवा व्यथा करवी नहीं. एवी रीते वर्त्या पछी मोक्ष थवानी इछा राखवी" एवी रींति मनु भगवाने कह्युंछे ते छतां सांप्रत काळमां परंपरानी पद्धती प्रमाणे नाम स्म्रर्ण, कीर्तन, अने पुजा सेवा माळा वीगरे भक्ति करनारा मोटा भक्तमां गणायेला मनुष्यो उपर कह्या प्रमाणे वर्तता नथी पण ते कोइ पण जातनो स्वार्थ करी लेवो अथवा मिथ्या कल्याण अथवा मोक्ष थवानी मीथ्या इच्छा राखी मात्र दांभिक भक्ति करे छे, ते छतां केटलाएक गुरु अथवा

धर्माधीकारी पोते उपर कह्या प्रमाणे मनु भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्त्ता पोताना भाविक सेवकोने सत्य उपदेश कर्ता नथी पण मात्र तेमनुं द्रव्य हरण करी पुजाय छे. माटे एवा गुरु अने चेला बने अधोगतीने पामे छे.

११ मुमुक्षु अने सत्य शोधक स्त्रि पुरुषोने सत्य उपदेश, मनुस्म्रतिना अ. २ ना श्लो. २३९अने अ.४ना श्लो. १७८ मां एवो करेलो छे जे "सत्य मार्गे गयेला पुरूषोने रस्ते तारे जवुं, जे मार्गे तारा अति प्राचिनकाळना पुर्वजो गयेला छे. ते मार्गे पण तारे जवुं. सघळा मनुष्य प्राणीमांथी तेमनी सत्यवर्तणुकनां द्रष्टांतो लेवां जे प्रमाणे उत्तम विवेकी पुरूषो विषमांथी अमृत ग्रहण करे छे तेम पण सत्यनुं ग्रहण करवुं वळी शास्त्रोमांथी नाना बाळकमांथी तेमना कोमळ अने मृदु भाषणनुं ग्रहण करवुं. जे प्रमाणे मलीन पदार्थोमांथी सोवर्णनुं ग्रहण करीये छइये. ते प्रमाणे पोताना शत्रुमांथी पण सदगुण अने सारी चालनुं ग्रहण करवुं.

सांप्रतकाळनी स्थिति जोतां एथी विपित वर्तणुक केवळ सत्य शोधकोने जणाय छे. केमजे, सत्य असत्यनो विचार नहीं करतां मात्र अंधपरंपराने मार्गे जवानी घणा स्त्रि पुरूषोनी. वृति छे. अति प्राचिन काळना पुर्वजो जे सत्य मार्गे गयेला छे तेनो त्याग करी पोताने व्यवहारमां अनुकुळ आवे एवे मार्गे जवानी हाल घणानी वृती थयेली जणायछे.

वळी पोताना मत पंथथी जे पोताने विरूद्ध जणाता होय, अने ते जो केवळ सत्य मार्ग जइ तेमनामां सद्गुण घणा होय तोपण तेमना सदगुणनुं ग्रहण नही करतां; उलटो तेवा पुरूषनो द्वेप करी, तेमनो तीरस्कार घणां स्त्रि पुरूषो करतां जणाय छे. एवी रीते अगीयारमा नियममां कहेला सघळा नीयमथी विरुद्ध चालता हालना भक्तमां गणायला स्त्रिपुरूषोमांथी घणा जोवामां आवे छे. एज कारणने लीधे तेवा स्त्रीपुरूषोनी पुजा सेवा अने भक्ति व्यर्थ जइ तेमने कांइ पण लाभ थइ शकतो नथी.

१२ वळी विद्वान अने सत्यशोधको, निष्पक्षपात रीते परीक्षा करवानी इच्छा राखी पुराणादिकमां अवलोकन करशे तो, तेमांथी पण घणां वाक्यो सत्य अने सनातन धर्मने पुष्टि करनारा मळी आवशे. विष्णुपुराणना अ. ११ना श्लो. २३मां स्पष्ट रीते कह्युं छे के, जे धर्मना सिद्धांतथी प्राणीमात्रनी रक्षा थइ, सघळा मनुष्य प्राणीना कल्याणनो मार्ग जडी शके, तेज धर्मनी वृद्धि करवाने निरंतर प्रयत्न करवुं.."

आ उपरथी केवळ सत्य धर्मनी इच्छा राखनारां स्त्रि पुरुषोने स्पष्ट जणाशे, जे, प्रथवी उपरना सर्वे धर्मो अने मत पंथमां पुर्वे अति प्राचिन काळना आपणे जे सनातन धर्मनुं यथार्थ वर्णन करेलुंछे तेज, सर्वे प्राणीनी रक्षा करी सघळा मनुष्य प्राणीमां

भ्रातुभाव राखी, कल्याणनो शुद्ध मार्ग देखाडनारा छे. माटे सघळा मतपंथना अधीकारीने, अवश्य ते सनातन धर्ममां पोते द्रढ रही, पोताना भोळा अने भाविकजनोने, ते धर्म प्रमाणे द्रढ आग्रहथी वर्तावी ते धर्मनी वृद्धि करवी. अने एवो सत्य उपदेश करवानी मुख्य अगत्य छेके, पुजा, शेवा, दान, धर्म वीगरे जे शारीरिक कर्मो ते सनातन धर्मनी मर्यादामां नहीं रहेवाथी नीष्फळ जाय छे. एवो सत्य उपदेश कर्याथी, पोतानो द्रव्यादिक स्वार्थ थइ सत्य कल्याणना मार्गे पोताना आश्रितो वर्त्याथी, परस्पर स्नेह अने प्रितिनी वृद्धि थइ, दिर्घकाळ सुधी टकी शके एवी ऐक्यता थवाथी, तमनी अने पोतानी आ लोक अने परलोकमां अति उत्तम स्थिति थवानो संभवछे. केमजे सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां रेहेवाथी सघळा सद्‌गुणनी वृद्धि थइ, अंतःकर्ण निर्मळ थइ, उत्तरोत्तर सत्य ज्ञाननी वृद्धि थइ, निस्तेज थयेला आर्योनी प्रापंचीक सामाजीक राजकीय अने धार्मिक ए चारे स्थिति, पुनर्पि उतक्रष्ट थइ, धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेनी सिद्धि नीश्चय थशे.

१३ "जो कदापी सत्य कर्म करी व्यवहार चलावता दळिद्रतानुं माहा कष्ट आवी पडे तो पण मनथी असत्य कर्म करवा सारु कोइ समये पण संकल्प थवा देवो नहीं." एवी रीते मनु भगवाने मनु

स्म्रातिना अ. ४ ना श्लो. १७१ मां कह्युंछे.

आवी रीते केवळ सत्यताथी वर्तवानी इच्छा, अपरीमित त्रष्णावाळा पुरुषोने कदापी थती नथी, अने ते पोताना स्वार्थ सारु पोते धार्मिक गणायलो छता, अनेक प्रकारना कपट छळभेद अने, विश्वासघात करवामां तेना इष्ट मानेला देवनो पण भय राखता नथी तेणे करी तेमनुं अंतःकरण सदा मलीन रहेवाथी असत्य अने अयोग्य कर्मो अधिक करवाने प्रवर्ते छे. तेथी तेवा पुरुषोने सत्य अने सनातन धर्म आप्रिय लागी. ते धर्मनी मर्यादामां रहेनारा स्त्रिपुरुषोनो समागम नहीं कर्ता उलटो तेमनो घणा मनुष्यो तीरस्कार पण करेछे, अने तेम करवाथी अंते परलोकमांतो विनाष थाय एमांतो संशय नहीं पण तेवा स्त्रिपुरुषने आ लोकमां पण मोडु वेहेलु कोइ पण जातनुं दुःख प्राप्त थया विना रेहेतु नथी, अन तेम थवा छता पण अज्ञान रूपी अंधकारने लीधे सावध थइ, सत्य मार्गे चालवानी वृति थती नथी.

१४ वळी जाणे अजाणे कोइ समये अल्प पाप थयुं होय तो ते विशे मनुस्म्रातिना अ.८ना श्लो.१५ मां एवुं कह्युं छे जे "पाप कर्या पछी मात्र एम केवुं जे हवेथी हुं पाप करीश नहीं, एथी पापनुं निवारण थइ शकतुं नथी, अने आगळ वळी पाप करवानी वृत्ति बंध पडती नथी. माटे पापनुं निवारण मात्र सत्य अंतःकरणथी पुर्ण पश्चाताप करी फरी कोइ

पण समये कोइपण जातनुं पाप मन, वचन, अने कर्मथी नहीं करे तोज, करेला पापनुं निवारण थइ शकेछे."

एवी रीते मनु स्म्रातिमां स्पष्ट कह्या छता सांप्रत काळमां विप्रित वर्तणुक थायछे. ते सघळाना जाणवामां छे. हालमां पापनुं प्रायश्चित कांइ पण दान धर्म अथवा कोइ पण जातनी कांइ शारीरिक क्रिया कीधाथी थइ शके छे, अने तेथी पापनुं नीवारण थाय छे, एवुं अल्पज्ञानी अने भोळाजनो पोते समजेछे; अने प्रायश्चित करावनारा पण एवी रीते पोताना आश्रितजनोने बोध करवानो घणो खरो अभ्यास पड्यो छे. तेणे करी उत्तरोत्तर पाप अधिक करवानो एक शुलभ मार्ग अज्ञानी अने मलीन अंतःकर्णना स्त्रिपुरुषोने थइ पड्योछे. माटे उत्तम वीवेकी अने सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा स्त्रि अने पुरुषोयेतो उपर मनुभगवाने कह्या प्रमाणे वर्तवानो द्रढ निश्चय राखवो. अने तेथीज नीरंतर अंतःकर्ण शुद्ध रहेशे. एटलुं कही आजनुं व्याख्यान समाप्त करीये छइये. संवत् १९४२ ना जेष्ठशुद ४ रवीवार.

प्रकरण ८ मुं.

ज्यारथी मात्र दांभिक भक्ति करवानो प्रचार आपणा घणा खरा भाविक भोळा पण कपटी आर्य बंधुमां चाल्यो छे. त्यारथी सत्य अने सनातन धर्मनो लोप थवा मांड्यो छे. तेणे करी सत्य बोली अने सत्य

कर्म करी सत्य वर्तणुक करवा तरफ जरा पण लक्ष आपता नथी एटलुंज नहीं, परंतु तेवा उपलक भक्ति करनारामांथी केटलाएक एवुं स्पष्ट कहेछे जे, संसार जुठो छे अने प्रपंची छे माटे तेमां व्यवहारना कार्यो करवा सारु केटलुंएक साचुजुठु करवानी अगत्य पडेछे माटे तेमां मोटु पाप नथी. एवा अल्प पाप इश्वरनी भक्ति करवाथी निवारण थशे, एवो मिथ्या निश्चय करी, कपट अने छळभेद मर्ण पर्यंत कर्या करे छे. ते माटे आ प्रसंगे ए वीषे अति प्राचिनकाळना निस्पृहि अने केवळ स्वार्थ रहित परमार्थनी शुभ इच्छा वाळा महारषीओये केवी सुचना करी छे. तेनो विचार करीये.

१५ सत्यता विषे, तैत्रिय उपानिषद, मंडुक अने सांडील्य उपनीषद तथा महा निर्वाण तंत्रमां एवुं कह्युं छे जे, सत्य बोलवानो निरंतर अभ्यास राख्याथी अंते पोताना कार्यमां जय थायछे. ते असत्यथी थतो नथी. परंतु ते सत्यता मन, वाणी अने कर्म ए त्रणेमां यथार्थ रीते राखवी. सत्यता कर्ता कोइ पण धर्म अथवा निति अधीक उत्तम नथी. अने असत्यना कर्ता अति मोटुं बीजुं कोइ पाप नथी. ए कारण माटे सर्व मनुष्य प्राणीने सत्यता द्रढ आग्रहथी सर्वे कार्योमां नीरंतर राखवानी अवश्य अगत्य छे. सत्य भक्ति सत्यताथीज जणाइ आवे छे. आपणा शुभ कर्मोनी शुभ असर समताथीज थइ शके

छे.सत्यता विना कोइपण वस्तु अधिक उत्तम नथी."

एवी रीते सत्यताथी वर्तवानो अभ्यास राख्याथी सर्व मनुष्यप्राणीमां परस्पर स्नेह अने प्रितीनी वृद्धि थइ, सघळाने उत्तम लाभ थइ, दिर्घ काळसुधी टकी शके एवी ऐक्यता थइ शकेछे ते छतां उपर कहेला शुभ शिक्षाना वचनो उपर हालना धर्माधिकारी अने तेमना शेवको, लक्ष नही राखवाथीज, सत्य अने सनातन धर्मनो लोप थयो छे, तेथी उत्तरोत्तर आपणी स्थिति अधम दसामां आवती जाय छे. ते छतां अज्ञान अथवा विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णाने लीधे ते जाणवामां आवतुं नथी.

१६ वळी सत्यताथी अने सर्व कार्योमां सत्य न्यायथी चालवा विषे मनुस्म्रतिना अ. ८ ना श्लो. १५ मां एवुं कह्युं छे जे, "सत्यताथी चालवानो नीरंतर अभ्यास राखवो, सत्यन्यायनो त्याग कर्याथी, सत्य इच्छानो नाश थाय छे, अने सत्यन्याय राखवाथी, शुभ सत्य इच्छानी रक्षा थइ शकेछे. ते माटे सत्यन्यायनो, कदापी भंग थवा देवो नही. एवी रीते लक्ष नहीं राखवाथी सत्यन्यायनो भंग थायछे. अने सत्य न्यायनो भंग थयो एटले आपणा सघळानुं अशुभ थयुं."

निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी सत्यमार्गे जवानी इच्छा राखनारा ग्रहस्थोने मनुस्म्रतिमां उपर कह्या प्रमाणे सघळुं स्वअनुभवथी सत्य जणाइ तेथी नीरंतर

सत्यताथी सत्य न्याये वर्तवाने प्रयत्न करेछे. पण जे दांभिक भक्तिवाळा अने केवळ स्वार्थ उपर द्रष्टि राखी, वर्तनारा स्त्रिपुरुषो छे, तेतो अज्ञानरूपी आवृणने लीधे तेमनाथी उपर कह्या प्रमाणे केवळ सत्यताथी नही वर्त्याथी तेमणे अनेक कष्ट अने विप्रित परीणामो सहन कर्या छतां तेमनुं सत्य कारण तेमने नही जणाइ पुनर्पी सत्यन्यायथी वर्तवानी इच्छा थती नथी. पण उलटा असत्यपणे उत्तरोत्तर अधिक वर्तता जायछे. तेथी अंते तेमनी सर्वस्व हानी थायछे.

१७ महाभारतना अनुसासन पर्वना अ. ११६ अने ५७–१७श्लो. अने १८ मां एवुं कह्युंछे जे कोइ पण प्राणीने दुःखी करवुं नही एटले मन, वचन, अने कर्म ए त्रणेथी कोइ पण प्राणीने दुःख उत्पन्न थाय एवी रीते कोइ पण समये वर्तवुं नहीं. सत्य दयानो धर्म एज छे जे मन, कर्म, अने वचनथी सघळा प्राणीनुं भलुं थाय एवीज रीते वर्तवुं, तेथी अंतःकर्ण निर्मळ थाय छे. एटलुंज नही. पण सत्य भक्ती अने सत्य इश्वर सेवा पण तेज समजवी. तेज आपणुं बळ अने तेज आपणो परम मित्र छे. अने तेज सघळा शुभ अने परमसुखनुं साधनछे."

आ उपरथी निष्पक्षपाती सत्यशोधकोने तो स्पष्ट जणाशे जे, ज्यारे सर्व मनुष्य प्राणी उपर कह्या प्रमाणे सघळा मनुष्यमां न्यात, जात, देश, अने शरीरना वर्ण विगेरेनो भेद नही गणता एक निष्ठाथी

सघळामां भ्रातृभाव राखी तेमनुं भलु करवुं एज परम उत्तम पुजा, अने भक्ती समजी वर्ते तो, ऐक्यता केवी द्रढ थाय, अने सर्वे कार्योमां परस्पर अती उत्तम लाभ थया विना रहेज नहीं. परंतु सांप्रतकाळनी आपणा घणा आर्यबंधुनी उलटी रीती छे. ते पोतपोताना इष्ट मानेला देवनी भक्ती पुजा सेवा उपलक करता जणाय छे. अने तेने अर्थे द्रव्यनो पण खर्च करेछे. परंतु पोताना सगा संबंधी न्यात, जात अथवा देश बांधुं तेमनी साथे केवळ पोताना स्वार्थने अर्थे कपट, अने छळभेदथी वर्त्याथी परस्पर कुसंप अने कलहनी उत्तरोत्तर वृद्धि थती जाय छे. अने तेथी अंते विनाश थाय छे.

१८ वळी परस्पर स्नेह अने प्रीती उत्पन्न थइ, अंतःकर्ण शुद्ध थवाना वचनो घणाछे. तेमां विष्णु पुराणना अ.१ श्लो. १ तथा २१ मा एवुं कह्युं छे जे, सत्यमार्गे जनारा मनुश्यने तो सत्यता एज पोतानुं बळछे. आपणी सांथे कोइ घातकी रीते वर्तेलु होय तोपण, तेने तेवो दुष्ट बदलो आपवो नही, पण आपने बदले शुभ आशीरवाद आपवानी टेव राखवी एवुं मनुस्म्रातिना अ. ६ना श्लो.४७ मां कह्युं छे. जे अती उत्तम गुणी पुरुष छे तेनी वृत्ति नीरंतर भलु करवानीज होयछे तेने शत्रुतानो विचार कोइनी साथे होतो नथी. ते एटलेसुधी जे कोइ तेनो नाश करवानी तैयारीमां होय, ते समये पण तेनुं भलु क-

रवानी इच्छा राखे छे. जे प्रमाणे चंदननुं झाड होय ते कपाइ नीचे पडता समये पण ते कापनार दुष्ट मनुश्यने पोतानी अति उत्तम सुगंध आपेछे. एवी रीते हितोपदेशमां कह्युं छे.

एवी रीते अति प्राचिनकाळमां आपणा आर्यबंधु परस्पर स्नेह अने प्रितिथी वर्तता हता माटेज अति द्रढ संप अने ऐक्यता थइ तेमनी प्रापंचिक, सामाजीक राज्यकीय स्थिति अति उत्तम थती हती एटलुंज नहीं पण अंतःकर्ण निर्मळ थवाथी सत्य अने सनातन धर्मनी मर्यादामां रही अंतर आत्मानी स्फुर्णाथी अति उत्तम धार्मिक स्थिति थवाथी कैवल्य मोक्षने मार्गे जइ मनुष्या देह धर्यानुं पुर्ण सार्थक करी लेता हता.

१९ रामायणमां किष्कीन्ध कांडना अ. ४३ ना श्लो. २ मां एवुं कह्युं छे जे, " ऋषीओये वध, चोरी, मद्यपान अने बीजां पापोने सारु प्रायश्चित कहेलुं छे. परंतु जे मनुष्यनें कोइये कांइ उपरकार कर्यो होय तेना उपर अपकार करवाथी जे पाप लागे छे ते कोइ पण प्रायश्चितथी नीवारण थइ शकतुं नथी.

एवी रीते अति प्राचिनकाळमां अपकारनुं अती मोटुं पाप गणी नीरंतर सावधानपणे रही कोइना पण कीधेला उपकारना ओशींगण थवाथी, अति नीकटनी मीत्रता थती हती. अने हालतो एवा पाप·

नो बोध नहीं मळवाथी केवळ पोताना स्वार्थ उपर द्रष्टी राखी, पोताना उपर उपकार करनारानुं पण भुंडुं करवाने विचार करता नथी तेथी कुसंप अने परस्पर विरोधनी वृद्धि थती जाय छे.

२० "कोइनुं पण भलुं अथवा कल्याण करवा ने कदी पण विसरवुं नहीं. जे स्त्रिपुरुष अल्प मन अने विचारना छे, ते एवुं कहेछे जे, आ मनुष्य आ पणा कुटुंबनो छे ? परंतु जे दीर्घबुद्धि अन उदार मनना छे, ते तो सघळा मनुष्य प्राणी उपर समान भाव अने प्रिति राखे छे, जे मनुष्य पोताना अंतः करणथी कोइने पण पीडा करवानी इच्छा अथवा कल्पना करतो नथी, पण सघळानुं पोतानी शक्ति प्रमाणे भलुं करवाने नीरंतर प्रयत्न कर्या करेछे,तेने-ज अति उत्तम नीरंतरनु सुख प्राप्त थाय छे." एवी रीते तैत्रीय उपनीषदमां शिक्षावलीमां अने हितोप-देशना अ. १ ना श्लो. ७९ मां अने मनुस्म्रतिना अ. ५ना श्लो. ४६ ए विना महा उपनीषद विगरे सत शास्त्रोमां शुभ उपदेश करेला छे. अने ए प्रमाणे पुर्वे सर्व आर्यजनो वर्तता हता माटेज अति उत्तम सुख भोगवता हता.

परंतु हालना समये आपणे अनुभव उपरथी ज-णाय छे जे, कुटुंबना मनुष्य उपर पण द्रढ सत्य प्रिति आपणा आर्यबंधुओ राखता नथी, परंतु घणा अल्प ज्ञानी पुरुष अने स्त्रियो, अति अकुंचित बुद्धि-

थी अने प्रमादने लिधे, पोताना कुटुंबी साथे कदापी प्रिति दर्शावे तोपण ते उपरनी दांभिक होय छे. अने अंतःकरण केवळ मलीन होवाथी अंतरमां दूषनोज सदा नीवास होयछे, तेणे करी सत्य स्नेह अने ऐक्यता थती नथी, ज्यारे ए प्रमाणे समीप कुटंबीमां जोवामां आवे छे. तो सघळा आर्यजनोमां समान भाव राखी भ्रातृभावथी, वर्तवानी इच्छानो तो संभव छेज नहीं. तेणे करी स्वार्थ अने परमार्थ ए बेउनी अंत हानी थइ, शत्रु अधीक उत्पन थवाथी उत्तरोत्तर आर्यबंधु निस्तेज थता जाय छे, ते लक्षमां आवतुं नथी, एज हालनी पुनरावृतिना काळ चक्रनो नियम छे.

संवत १९४२ना अषाड शुद्ध १० रवीवार.



प्रकरण ९ मुं.

हालना समयमां आपणा आर्य बंधुओमां दान अने धर्म करवानो प्रचार चालेलोछे ते केवळ विवेक रहीत, अने पुर्वेना सत्य धर्मनी आज्ञानुं उलंघन करीने करवानो अभ्यास चालतो जणाय छे, माटे आ प्रसंगे प्रथम आपणा सत्य शास्त्रमां दान अने धर्म करवानी आज्ञा केवी रीतनी करेली छे. तेनो विचार करीये.

२१ सांन्डील उपनीषदना अ० २ अने मनुस्म्रातिना अ० ४ना श्लोक ३२मां एवुं कह्युं छे जे

" शुभ कर्मथी संपादन करेलुं जे धन अने धान्यादीक वस्तु तेनुं दान अनाथ, अशक्त, अने आश्रय वीनाना पात्र मनुष्यने केवळ शुभ इच्छाथी करवुं. ते दान पोतानी शक्ति प्रमाणे तेवा साधु, ब्राह्मण, अथवा कोइ पण मनुष्य प्राणी जे निराधार अने दान करवा योग्य होय, पछी ते संप्रदाय धर्म विरोधी होय तो पण तेने करवुं. पण जे पोताना संबंधी जेने बीजा कोइनो आश्रय नही होवाथी,पोतानाज आधार उपर होय तेमनुं प्रथम पोषण, वीगरे करी तेथी धन धान्यादिक अधीक होय तो,बीजाने दान धर्म करवुं. एवी रीते पोताना धन अने धान्य मांथी कांइक भाग जे मनुश्यदान करवाने पात्र होय तेमने सारु राखवो.

एवी रीते प्राचीन काळमां दान अने धर्म करवानी योग्य आज्ञा छता, सांप्रतकाळना घणा धर्माधिकारी अने तेमना शेवको दान धर्म करवा अने करावबाने पोतांनी बुद्धिनो सत्य उपयोग करी, विवेकथी दान धर्म करता नथी; परंतु घणा खरा पोतानी कीर्ति अने माननी वृद्धि थवाना हेतुथी, अयोग्य रीते पोताना द्रव्यनो खर्च करेछे. केटलाएकने पात्र अपात्र जोवानो विवेक होतोज नथी; परंतु जे कोइ साधु तथा फकीर विगेरेनो वेश धरी दान मागे अथवा कोइ पण देवने नीमिते धन, धान्य, अने वस्त्र अलंकारादिक मागेतो ते नीयम प्रमाणे आप्या क-

रेछे बीजा केटलाएक पोताना मानी लीधेला गुरुने एवी रीते धनधान्य अने वस्त्र अलंकारादीक आप्याथी धर्म थयो एम समजे छे. पछी ते गुरु गमे ते अयोग्य मार्गे तेना दान करेला धन धान्यनो उपयोग करे तोपण तेना उपर लक्ष नहीं आपता, अंध परंपराने मार्गे जइ पोते व्यर्थ खर्च कर्या छतां,तेथी पुन्य मानेछे. ए सघळानुं कारण गुरू लोभी अने चेला लालचुं एजछे. एवा केवळ स्वार्थी गुरुने सत्य अने सनातन धर्मनुं ज्ञान नहीं होवाथी, विषय भोगनी अपरीमित त्रष्णाने लीधे पोताना भाविक अने भोळा सेवकोनुं द्रव्य हरण करवाना विचार निरंतर करी तेवा मार्ग उत्पन करेछे. अने सेवक पण तेवा त्रष्णावाळा तेथी तेमनाथी सनातन धर्मनी मर्यादामां रही शकाय नहीं, माटे एवी रीतना दांभिक गुरुना फांसामां पडी व्यर्थ पोताना धन,धान्यादिकनो खर्च करी, पोते द्रव्यादिकना संकोचना कष्ट पण कोइ समये सहन करेछे. एवी रीते सांप्रतकाळमां धर्म संबंधी केवळ अज्ञानछे. माटेज कलीयुग केहेवायछे.एम छतां कोइ स्वार्थ रहित आचार्य, अने निष्काम वृत्तिवाळा पवित्र पुरुषो मात्र परमार्थना हेतुथी, पुर्वेना महारुषीना वचनोनो बोध करशे तो तेथी निश्चय पुनरावृत्तिना नियम प्रमाणे कळीयुगमां सतयुगनो प्रवेश थया विना रहेशे नहीं.

२२ वळी उपर कहेला सत्य शास्त्रमां केवळ प-

रोपकार बुद्धिना कृपाळु रुषी अने मुनीओये, एवो शुभ उपदेश कर्यो छे जे "केवळ स्वार्थि थवुं नही स्वार्थनी जे इच्छा तेज, वे जातना महा कष्टनुं मुळ छे, माटे स्वार्थनी इच्छाने निरंतर लक्ष राखी दाबेलीज राखवी. इश्वर सत्ताथी जे आपणा पोषण सारु निर्माण थयुं छे, तेने माटे अपरीमित आतुरताथी प्रयत्न करवुं नहीं. प्राणीनो जन्म थयो एटले तेनी माताना स्तनमांथी दुध उत्पन थाय छे."*

हालना समयमां जोता जे अति धार्मिक केहेवाय छे तेमांथी घणाने अति घणो स्वार्थ होय छे. तेमने केवळ स्वस्वार्थने लीधे माता पीता भ्रातृ पुत्र पुत्री, भगीनी विगेरे उपर अप्रिति उत्पन थइ, तेनी कांइ पण दरकार नहीं राखता, सघळो स्वार्थ पोतें स्त्रि, अने मात्र तत संबंधी जनोमांज रहेलो होय छे. ते विना एवीज रीते घणुं करी केटलाएक धर्म रहित केवळ पश्चिम देशनी दोषित केळवणीनी सत्तावाळा स्त्रि पुरुषो सांप्रतकाळमां वर्तता जणायछे. ए सघळा कारणने लीधे, आपणा आर्य बंधुनी हालनी प्रापंचिक, समाजीक राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति, अति अधम दशामां आवीछे.

मनुस्म्रतिना अ. ७ श्लो. ४९ अने हीतोपदेशमां अति उपयोगी अने अगत्यना वचन कह्या छे. "ते एवी रीते जे सत्य विवेकी अने बुद्धियान छे, ते पोताना द्रव्यनो खर्च बीजाना कल्याणने अर्थे करेछे

एटलुंज नहीं, पण कोइ अगत्यना प्रसंगे पोतानो देह पण अर्पण करेछे. अने तेवा पुरुष शरीर अने द्रव्य ए बंने निश्चय नाशवंतछे, एम समजी कांई शुभ हेतु सारु तेनो खर्च थाय तो तेनी चिंता राखता नथी. एटलुं निरंतर लक्षमां राखवुं जे आपणा नाशवंत शरीर अने आपणा सदगुण एमां अति घणो भेदछे शरीरनो क्षणवारमां नाश थइ जायछे.पण सदगुणनी कल्पना अंतसुधी रहेछे."

हालना धर्मभ्रष्ट थयेला आर्य बंधुओ, उपर कहेला परम पवित्र सुबोधना वचनो प्रमाणे अति आग्रहथी वर्ते तो अति उत्तम प्रकारनी ऐक्यता थइ परस्पर स्नेह अने प्रितिनी वृद्धि थइ, अति घणो सर्वेने लाभ निश्चय थइ,कलीयुगमां सतयुग प्रवर्तवानो समय समीप आवे.

२३ इसा वास्य उपनीषदना अ. ६ अने सान्डिल्य उपनीषदना १ अध्यायमां एवुं कह्युं छे के "जे वस्तु बीजानीछे, ते पोताने प्राप्त करवानी अपेक्षा अथवा त्रष्णा राखवी नहीं, वळी चोरीना कर्म करवाथी, विरक्त रहेवुं. एटले कोइ बीजानी कांइपण वस्तु प्राप्त करवाने मन, वचन, अथवा शरीर ए त्रणमांथी एकेथी कोइ पण जातनुं कर्म करवाथी विरक्त रहेवुं."

ए सघळा शुभ वाक्यो, दीर्घकाळ सुधी टकी शके एवी ऐक्यता तथा परस्पर स्नेह अने प्रितिनी सघळा

मनुष्यप्राणीमां वृद्धि करनारा छे. हाल जे परस्पर द्वेष अने गुप्त शत्रुवट प्रापंचिक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे कार्योमां करवानो प्रचार अति घणो चालेलोछे, तेनो प्रतिबंध करवाना एज शुभ साधनोछे. माटे सघळा मनुष्यप्राणीओने ए प्रमाणे वर्तवानी अवश्य अगत्यछे.

२४ जे प्रतिष्ठा, तारां पोतानां शुभ कर्म अने पुरुप प्रयत्नथी प्राप्त थइ शके तेनीज मात्र इच्छा राख, अने तेथी जेवी स्थिति प्राप्त थाय तेमांज संतोप पामवो, एवुं विष्णु पुराणना अ० १ अने ११ ना श्लो. २२ अने २९मां कहेलुं छे.

एवी रीते सांप्रतकाळना आर्य बंधु विवेकथी वर्तेतो, केवी रीतनो आनंद रही लाभ थाय. एनो बुद्धिवान पुरुपो विचार करशे तो तेमने जणाइ आवशे माटे ए विशे आ प्रसंगे अधीक बोलवानी अगत्य नथी.

२५ वळी मनुस्मृतिना अ. ११ ना श्लो. ९-१० मां एवी आज्ञा करी छे जे, "सदा संतोष राखी तृप्ति राखवी. संतोष एटले गमेतेवुं सुख अथवा दुःख प्राप्त थाय तो पण तेथी अपरीमित हर्ष अने शोक नहीं थतां, प्रथमनो केवळ शुभ अने निर्मळ संतोष अक्षय रहे. कांइ पण वस्तु अथवा पदार्थनी इच्छा राखी, ते प्राप्त थया पछी, तेनो उपभोग कर्याथी पुर्ण संतोप अने शांति थती नथी, परंतु उ-

लटुं जे प्रमाणे अग्निमां ग्रत नांख्याथी अग्नि छंटातो नथी, पण अधिक प्रदीप्त थाय छे." तद्वत त्रष्णा बळीष्ट थाय छे."

आ उपर कहेली शुभ सुचना उपर, हालना समयमां मानासिक ज्ञानवाळां स्त्रि पुरुपोनुं लक्ष कांइज नथी, तेथी ते विषय भोगना पदार्थो अने वस्तुओ प्राप्त करवा सारु, योग्य अने घणा खरा अयोग्य रीते पण प्रयत्न करी, विपय भोग जेम बनेतेम अधिक भोगवता जाय छे. अने जेम जेम विपय भोग अधिक भोगवता जाय छे,तेम तम पुनर्पी तेवाज विपय भोग भोगववानी त्रष्णा अधिक बळीष्ट थती जाय छे. ते एटली जे, पोताना विपय भोगनी इन्द्रिओ असक्त थइ ते भोग भोगववाने असमर्थ थायछे, तो पण तेनी अंतरमां त्रष्णा अशक्त नहीं थतां उलटी बळीष्ठ थवाथी, ते विपय भोगना विचार निरंत्तर अंतरमां कर्या करी, मानासिक विपयभोग भोगवे छे तेणे करीने अयोग्य त्रष्णा अपरीमित बळीष्ट थया पछी ज्यारे स्थुळ देहनो साग थाय सारे सूक्ष्म देहथी ते मननी त्रष्णा केटलाएक काळ सुधी भोगवतां छतां तेथी शांति थती नथी माटे पुनर्पि जन्म मर्णने प्राप्त करवो पडे छे माटे विवेकी अने ज्ञानी पुरुषोये तो निरंत्तर विषयभोगना पदार्थोथी विरक्त रही जेम बने तेम ते न्युन भोगववानी इच्छा राखवी

एज उचित छे.

संवत् १९४२ना आषाड शुद्ध ११ रवीवार.

प्रकरण १०मुं.

आपणा आर्यबंधुनी प्रापंचिक. सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति उतकृष्ट थइ, ए सघळामां अति उत्तम लाभ थवाना जे मुख्य साधनो, आपणा अति प्राचिन ग्रंथोमां केवळ परोपकारी अने कृपाळु महा रूषीओए दर्शावेला छे.तेनो विचार आ प्रसंगे करीये.

२६ सांडिल्य उपनीषदनो मं. १ अने भगवतगिताना अ० २ ना श्लो० ५६मां एवी आज्ञा करी छे जे. विवेकी पुरुषे मुख्यत्वे करी धिर्यता दृढ करवानो अभ्यास राखवो, एटले निरंतर सर्वकाळमां एटले सुख अने दुखना समये, एटले जे समये द्रव्यनो अथवा अति प्रितिवाळा सगा अने स्नेहीनो नाश थाय, ते समये द्रढ धिर्यता राखी अपरीमित शोक नहीं करतां सत्य विवेकथी वर्तवुं; अने कदापी एकाएक अतुल्य द्रव्यादिकनो लाभ थाय ते समये पण, मनने चलित थवा देवुं नहीं; पण पुर्ववत मननी साम्यावस्था राखवी. अने निरंत्तर चिंता, भय, अने शत्रुता ए त्रणेनो मनमां प्रवेश थवा देवो नहीं. अने पोतानी सत्य वर्तणुक उपर नीरंत्तर विश्वास राखी वर्तवुं."

आ उपरथी विद्वान अने केवळ सत्य शोधकोने तो स्पष्ट जणाशे जे, एवी रीते सुख अने दुखना समये सनातन धर्मनुं लक्षण जे धिर्यता तेने द्रढ राखी, मनमां चिंता, भय, अने शत्रुता ए त्रणेनो प्रवेश थवा नहीं देवाथी, पोताना व्यवहारीक अने धार्मिक ए बंने कार्योमां अति उत्तम रीते लाभ करी शकाय एटलुंज नहीं पण शरीर अने मननी आरोग्यता रही सघळां कार्यो उत्तम रीते करवाने आगळ पण हिम्मत आवेछे. अने तेवी रीते नहीं वर्तो भय, अने चिंताने आधिन थइ, पोताना संबंधी, अने स्नेही वीगरे साथे शत्रुता करी, धिर्यतानो भंग थवाथी, सघळां कार्योमां सर्वश्व हानी थया विना रहेती नथी माटे ए उपर लक्ष राखवानी अवश्य अगत्य छे.

२७ वळी महारुषीओये मनुस्म्रातिना अ० २ ना श्लो. ९६ अने विष्णुपुराणमां एवुं कह्युं छे जे, मनुष्य प्राणी जे कोइ पण जातनुं पाप करे छे ते पोतानी इन्द्रिओने स्वाधिन थइ विषय भोगनी अपरिमित त्रष्णा उत्पन्न थयाथीज करे छे. ते माटे सदा सावधपणे रही पोतानी सघळी इन्द्रिओने नीरंत्तर द्रढ आग्रहथी, नीयममां राखवी, अने तेम करवाथी, अंते अधिक स्थाइक उत्तम सुख प्राप्त थइ शके छे. क्रोधनो जे विकार ते अल्पज्ञानी अने मुर्खनो छे. जेनामां ए विकार छे. ते कदापी उत्तम सत्य विवेकी अने सत्य उत्तम पुरुष थइ शकतोनथी.''

उत्तम विवेकी अने सत्य शोधक पुरुषोने, सांप्रत काळना अनुभव उपरथी स्पष्ट जणाशे जे, पोतानी पंच इन्द्रियोने स्वाधीन थइ, अपरीमित विषय भोगनी त्रष्णा उत्पन थवाथी, सर्वस्व व्यवहारीक अने धार्मिक ए बेउ कार्योमां हानी थाय छे. माटे इन्द्रियोने नीयममां राखवानी अवस्य वीवेकी स्त्रि पुरुषोने अगत्य छे. इन्द्रियोने स्वाधीन राखी, नीयममां राखवानुं मुख्य साधन सत्वगुणी भक्ष अने पान करवानो अभ्यास राखवानी भगवतगीतामां श्रीकृश्न भगवाने आज्ञा करी छे. ते छतां सांप्रतकाळना घणाखरा धर्माधीकारीओ ते उपर लक्ष नहीं राखता उलटा घणा पोताना इष्ट देवोनी प्रसादीने नामे, नाना प्रकारना भिन्न भिन्न रस उत्पन करी सघळी इन्द्रियोने प्रबळ करनारा पदार्थोनो उपयोग वारंवार करवाने उत्तेजन आपे छे. तेथी हाल केटले एक प्रसंगे एवुं जोवामां आवे छे जे, कदापी कोइने द्रव्यनो संकोच होय तोपण; मोटा उत्स्वने दीवसे केटलीएक तेवी सामग्री मिथ्या अभीमानने लीधे देवने निमीते करी आगळ द्रव्य संकोचना अनेक प्रकारनां कष्ट सहन करवां पडेछे. माटे जेने सत्य आत्मज्ञान मेळववानी इच्छा छे, तेणे तो भगवत गीतामां कहेला उत्तम प्रकारमां सत्व गुणी भक्ष अने पान नीयमीत करवानो अभ्यास राखवानी अगत्य छे.

२८ "आपणां सघळां कार्यो जे आपणे उत्तम विवेकथी सत्यताथी करेला छे, ते सघळानी सिद्धि थइ, तेमां जय प्राप्त थया विना रहेतो नथी" एवुं विष्णु पुराणना अ. १३ ना श्लो० ७८ मां कह्युं छे.

उत्तम विवेकथी अने सत्यताथी कार्यो करवा सारु, पोताना मनना काम, क्रोध, लोभ, मोह, अने मद ए पंच विकारोने स्वाधीन राखवानी, प्रथम अवश्य अगत्य छे.

२९ वळी मनु स्म्रतीना अ० ४ना श्लो० १३९ मां एवी आज्ञा करी छे जे "सदा सर्वदा प्रिति उत्पन करे एवुं अने मीष्ट भाषण करवानो अभ्यास राखवो. भीन्नता कोइ साथे राखवी नहीं. अने विना कारण नीरउपयोगी भाषण कर्या करवुं नहीं"

घणुकरी सघळाना जाणवामां छे जे, कटु अथवा कोइने दुःख उत्पन थाय एवुं भाषण करवाथी अने विना कारण अधिक बोलवानी टेव पड्याथी, घणे प्रसंगे स्नेहनो भंग थइ शत्रुता उत्पन थायछे. एटलुंज नहि पण तेथी घणा पौष्टिक परमाणुंओनो लय थाय छे ते छतां केटलाएक उत्तम मानसिक ज्ञानवाळा पुरुषो मिथ्या अभीमानने लीधे अथवा कांइ पण पोताना स्वार्थनी सिद्धि करवा सारु, उपर कहेलां सत्य वाक्यो उपर लक्ष नहीं राखतां अयोग्य भाषण करवाथी, घणे प्रसंगे पोताने, अने

बीजाने हानी करे छे. ए विद्वान अने सत्य कुलीनने अति मोटुं दुषण छे.

३० वळी महाभारतना अनुसासन पर्वना अ० ११६ना श्लो० ५६९ अने हितोपदेशना अ० १ना ११-१२ श्लोकमां अगत्यनो जे बोध करेलोछे,तेनो विचार करीये. तेमां एवुं कह्युं छे जे “ विवेकी बुद्धिवान स्त्रि अने पुरुषोए नीरंतर लक्षमां राखवुं के; जे प्रमाणे आपणो जीव आपणे प्रिय छे ते प्रमाणे सघळा जीवन प्राणीने पोतपोतानो जीव अति प्रिय छे. माटे जेम आपणा उपर बीजा मनुष्य शुभ इच्छा राखे एवी इच्छा आपणे राखीये छइये, तेमज आपणे पण सघळा जीव प्राणी मात्र उपर नीरंत्तर शुभ इच्छा राखवी. तेथी आपणे सदा सर्वदा आपणां सघळां कार्यो बीजाना कार्योनी साथे सरखावी जोइ, जेम बने तेम पोतानी शक्ति प्रमाणे बीजानुं भलुं अने कल्याण थाय एवीज रीतना शुभ कर्मो करवाने प्रयत्न कर्या करवुं, अने एवी रीते सदा शुभ द्रष्टि राखी कोइने सुख अथवा दुख करवामां पोतानी साथे सरखावी जोयाथी अने अति उत्तम लाभ निश्चय थया विना रेहेतो नथी.’

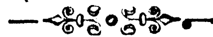
एवी रीते जे स्त्रिपुरुष वर्ते छे, तेनुं अंतःकरण उत्तरोत्तर नीर्मळ थइ, ते बीजा सघळा प्राणीनी प्रीति संपादन करी शके छे. तेथी तेमने आ लोकमां उत्तम लाभ प्राप्त थइ, परलोकना पण उत्तम साधन करवा

भणी तेमनुं लक्ष जायछे तेणे करी तेवा स्त्रीपुरुषोने, सत्य मोक्षनो मार्ग अल्प श्रमे मळी शके छे. तेथी मनुष्य देहनुं सार्थक थइ अंते कैवल्य मोक्षने पामेछे.

३१ शुभ संस्कारी थवा सारु धर्मजीज्ञासु स्त्रि अने पुरुषोने, महापरोपकारी बुद्धिना रुषी अने मुनीओये मैत्री उपनीषदमां अने त्रियदारुण्य उपनीषदमां अने श्रिकृश्न भगवाने भगवतगीताना अ. ६ ना श्लो. १७ मां अती अगत्यनी जे सुचना करीछे ते आ प्रसंगे विवेकी श्रोताजनो आगळ प्रसिद्ध कर्याथी निश्चय लाभ थशे. तेमां एवुं कह्युं छे जे—सात्विक वृतिवाळा अने निरंतर सात्विक कार्यो करनारा मनुष्यो निरंतर मांस भक्षण अने मद्यपान, ते वीना सघळी जातनी माद्य वस्तुनो, अती आग्रहथी त्याग करेछे.वळी नीर्गुण भक्ष अने पान करवामां पण नीयम राखवो, अने सदगुणी कर्म अने नितिना भोग पण मध्यम रीते नीयम प्रमाणे भोगववा, तेमज निद्रापण नियमीतपणे लेवी.एवी रीते जे स्त्रिपुरुष उत्तम विवेकथी, वर्तवानो अभ्यास राखेछे. ते घणुं करीं त्रिविधी ताप अने अस्वभावीक दुःखथी मुक्तथायछे.

आ अति अगत्यनी सुचना प्रमाणे, अति उत्तम एवा जे धर्मजीज्ञासु स्त्रि अने पुरुषो, ए बेउने निरंतर वर्तवानी, अवश्य अगत्य छे. अने एथी आगळ अंतःकरण उत्तरोत्तर शुद्ध थतां थतां अंतर आत्मा अथवा साक्षी चैतन्य उपर मायाना आवर्णरुपी प-

हदो खशी जइ शुद्ध चैतन्यनो पुर्ण प्रकाश थवाथी, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञानना योगे ते स्त्रिपुरुषो योगादिक गुप्त विद्या अने श्रष्टिना महाअदभुत अने चमत्कारी नीयम जाणवा अने समजवा अधीकारी थइ शकेछे. माटे द्रढ आग्रहथी धर्मजीज्ञासु जनोये उपर कहेली शुभ आज्ञा प्रमाणे वर्तवानो निरंतर अभ्यास राखवो.संवत् १९४४ना आषाडवद ३नेरवीवार.



प्रकरण ११ मुं.

घणुं करी सघळा विवेकी स्त्रिपुरुषोना जाणवामां छे जे, सांप्रतकाळमां केटलाएक मंदबुद्धिना, निरुद्योगी, अने सत्य विद्याहिन स्त्रिपुरुषो, उत्तमज्ञान प्राप्त थवाना साधनो मेळववाने प्रयत्न नहीं करतां, उलटा पोताना अवकाशनो समय महादुष्ट एवी जे द्युत अथवा जुगार रमवानी अनेक प्रकारनी रमतो रमवामां काहाडेछे. ए आपणा अति प्राचिन सतशास्त्रमां कहेली आज्ञाथी उलटुं छे. तथी अंते अनेक प्रकारना कष्टो सहन करवा पडेछे,माटे मुख्यत्वे करी हालना समयना उगता वगर अनुभवी स्त्रिपुरुषोना कल्याण सारु आपणा प्राचिन सतशास्त्रमां ए वीषे केवी अगत्यनी सुचना करेली छ तेनो प्रथम आ प्रसंगे विचार करीये.

३२ मनुस्मृतिना अध्याय ९ ना श्लो.२२७मां एवी आज्ञा करेली छे जे, "अति प्राचिनकाळथी

द्युत अथवा जुगार रमवाथी अति मोटी हानी थाय छे. अने ते महा दुःख उत्पन कर्ता छे. ते माटे ज्ञानी एवा जे मनुष्यप्राणी तेमणे जुगार रमवानो अति आग्रहथी त्याग करवो. वळी इन्द्रिओनी कर्मणुक सारु पण कोइ प्रकारनी जुगार अथवा दुष्ट रमत कदी पण रमवी नहीं."

ए स्पष्ट समजवा सारु मुख्य द्युत अथवा जुगारनी रमत कइ छे तेनो विचार आ प्रसंगे कर्याथी, वगर अनुभवी अल्पबुद्धिना स्त्रिपुरुषोने मुख्यत्वे करी विशेष लाभ थशे. आपणा जाणवामां छे जे हाल केटलाएक मंदबुद्धिना अविद्वान अने घणे प्रसंगे प्रानासिक ज्ञानवाळा अने भणेला पुरुषो पण पैसा अथवा रुपीया मुकी अथवा तेवी शरतथी, जुगार खेले छे. तेनो प्रतिबंध हालना विवेकी राज कर्ताये पण करेलो छतां,मात्र इन्द्रिओनी मलीन वासनाने लीधे, तेना उपर पण लक्ष नहीं राखता तेवी दुष्ट रमत रमी पोताना द्रव्य अने प्रतिष्ठानो नाश करी, राज्यना दंडने पात्र थइ अनेक प्रकारना कष्ट सहन करवा पडेछे. वळी केटलाएक निरुद्योगी स्त्रिपुरुषोने, चोपट अने सोगटा रमवानी दुष्ट टेव पडी होय छे. तेवा अल्प बुद्धिना जनो, एवुं समजेछे जे, तेवी रमत रमवाथी कोइ पण जातनो दोष नथी,पण ते कर्मणुक करवा सारू छे. एवी रीतनी समज तेमनी अति दोष रुपछे.ए द्रष्टांत आप्याथी स्पष्ट समजाइ शकशे.

चोपट अथवा सोगटा रमवाथी मानसीक ज्ञाननी उन्नति थती नथी, पण ते टेव पड्याथी आळशनी वृद्धि थइ, शुभ उपजीवीकानो उद्योग करवा भणी अने ज्ञाननी वृद्धि करवा भणी उत्तरोत्तर लक्ष आपवानुं न्युन थतां थतां, इन्द्रियोनी कर्मणुक करवानो हेतु नहीं रेहेता चोपट अने सोगटा रमवामां द्रव्यादिकनी आंट अथवा शरत करवानी वृत्ति थवाथी, आगळ सर्वस्व नाश थायछे. एवुं स्पष्ट दृष्टांत माहाभारत विगेरे शास्त्रोमां छे. तेमांथी आ प्रसंगे कह्याथी विवेकी अने सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा स्त्रि पुरुषोने पुर्ण निश्चय थशे.

पुर्वे कौरवोये कपट अने छळभेद करी, विवेकी अने बुद्धिवान एवा जे पांडवो तेमने चोपट अथवा सोगटा रमवानो आग्रह करी, अनेक प्रकारनी युक्तिथी ते दुष्ट रमत रमवा बेसाड्या, तेमां द्रव्य विगेरे सघळी समृद्धिनी अटक अथवा शरत करी; तेथी तेवा दुष्ट कर्मनुं फळ तेमने भोगववुं पडयुं. वनवास गया त्यां अनेक प्रकारना महाकष्ट सहन कर्यां, मीत्र अने सगा संबंधी विगेरेनो वध करवो पड्यो. आगळ राज्य प्राप्त थयुं छतां ते धर्मजीज्ञासु होवाने लीधे तेमना करेला दुष्ट कर्मोनो पश्चाताप अति घणो थइ देहांत दंड महाधार्मिक एवा धर्म राजाये भोगववाना हेतुथी हिमालयमां जइ त्यांनी अति दारुण शीतथी पोतानो अंत आण्यो, अने तेमना सुज्ञ बंधुनी पण ते-

बीज माठी अवस्था थइ. ए उपरथी आपणे स्पष्ट समजवुं जे, एवा महासमर्थनी एवी दशा थइ तो, आपणे एवी दुष्ट रमत रमवाथी परिणाम, निश्चय अति दुखदायक थया विना रेहेज नहीं. माटे निरंतर सावध रही, पोताना अवकाशनो समये सत गा· गनी वृद्धि करी, सत्य एवुं जे आत्मज्ञान ते मेळववा भणी दिर्घ प्रयत्न करवाथीज, महा अमुल्य एवो जे मनुष्यादेह ते वडे अखंड अने अवीनाशी सुखनी प्राप्ती थइ, अंते कैवल्य मोक्षनी प्राप्ती थइ शकशे. अने तेज आपणुं आ लोक अने पर लोकनुं मध्य पुरुषार्थ समजवुं.

३२ हवे अनुभव वगरना युवावस्थावाळा एवा जे स्त्रिपुरूषो, तेमनुं आ लोक अने परलोकमां कल्याण थवा सारु तैत्रिय उपनीषद, अने शीक्षावल्लीना अ. ११ मां तथा मनुस्म्रतिना अ. ४ ना श्लो. १३४ मां अनुभवि वडीलोनी आज्ञामां रेहेवाना नियमो कह्या छे.

तेमां एवुं कह्युं छे जे. "तारी माताने तेमज तारा पीताने मान आप. वळी तारा गुरू अने तारा वडील अथवा वृद्धोने पण मान अने सत्कार कर."

ए विषे आ प्रसंगे एटलुं केहेवानी अगत्यछे जे, मात्र उपर कहेला वचनो उपर आधार राखी अविवेकथी अंधपरंपराने मार्गे वर्तवुं उत्तम मानासिकज्ञान वाळा स्त्रि अने पुरूषोने उचित्त नथी. अर्थात् मान

सघळाने आपवुं परंतु तेमनी आज्ञा जो दोष रहित अने आ लोक अने पर लोकमां कल्याणकारी होय तोज तेनुं ग्रहण करी ते प्रमाणे वर्तवुं.

३४ वळी मनुस्म्रातिना अ. ४ ना श्लो. १४१ मां एवी आज्ञा करेलीछे जे "ताराथी जे कोइ गुणमां उतरतो होय तेनो धिक्कार अने अप्रतिष्टा करवी नहीं, तेमज कोइ अवयवनी खोडवाळो होय, अथवा अविद्वान अने वृद्ध होय, वळी जेनी पासे द्रव्य नहीं होय अथवा कुरूप होय, अने जे कोइ नीचा कुळमां जन्म पांमेलो होय, ए सघळानो द्रोह अथवा धिक्कार अने अप्रतिष्ठा करवी नहीं."

ए विषे आ प्रसंगे एटलुंज केहेवुं अगत्यनुं छे के एवी रीते जो हालना भणेला अने विद्वान गणायला पुरुष तेमज रूप, गुण अने द्रव्यवाळी पण वगर अनुभवी अल्प बुद्धिनी स्त्रीओ, सघळा मनुष्य प्राणी साथे भावथी वर्तेतो पोताना कुटुंब तेमज बीजानो पण स्नेह अने प्रिति संपादन करी ते सघळां दुख अने सुखना समये तन, मन, अने धनथी मनपूर्वक परस्पर सहाय कर्याथी केटलो लाभ थइ शके ए केहेवानी अगत्य नथी.

३५ हवे हितोपदेशना श्लो. ३१ अने भगवत गीताना अ. २ अने त्रीजाना श्लो. ४७ अने ४८मां जे अगत्यनी सुचना आपेळी छे, तेनो विचार करीए तेमां एवुं कह्युं छे जे "कदापी मनुष्य सिंह अथवा

वाघ जेवो बळवान अने हिम्मतवान होय, तोपण तेने उद्योग अने श्रम सहन कर्या विना धन संपादन थतुं नथी. ते माटे तेवा मनुष्ये पण तेवा कार्य सारु नीयमित शुभ कर्म करवाने प्रयत्न करवानी अगत्य छे केमजे आळसु रही निरोद्योगी रहेवा करतां उद्योग करवो ए उत्तम प्रकारछे. अने निरोद्योगी रहेवाथी तेवा मनुश्यनु आयुष्य व्यर्थ जइ, संसारमां निर्माल्य गणाय छे.

सांप्रतकाळमां घणुं करी आपणा आर्य बंधुनुं एवुं वलण थयुं छे जे, पोतानो निर्वाह कोइ पण रीते चाली शके एवी स्थीति थइ एटले, उत्तम लाभ मेळववाने कष्ट सहन करी उत्तम प्रकारना उद्योग करवा भणी लक्ष जतुं नथी, पण उलटी विषयभोगनी त्रष्णा प्रवळ थवाथी, तेमां आसक्त रेहेवाथी, आळस अने बीजा दुर्गुणोनी वृद्धि थायछे. एज कारणने लीधे सत्य सनातन धर्म अने आत्म ज्ञान संबंधी विचार शुन्य थयाथी, कळाकौशल्यादिक उत्तम साधनो मेळववाने अशक्तीवान थवाथी, उत्तरोत्तर सघळा आर्यबंधुनी प्रापंचिक, सामाजिक, राज्यकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति अधम दशामां आव्याथी निस्तेज थया छे.

३६ सत्य उद्योग अने सत्य मार्गथी धन संपादन करवा विषे परोपकारी बुद्धिना मनुभगवाने मनुस्मृतिना अ० ७ ना श्लो० १२४ मां एवुं कह्युं छे जे

" आ संसारमां सघळी स्वच्छ अने निर्मळ वस्तुमा सत्य मार्गथी धन संपादन करवुं ए अति उत्तम निर्मळता छे. ते माटे धन संपादन करवाने, सघळा साधनो स्वच्छ अने निर्मळ करवां जोइए. तेमां विशेषे करी जे मनुष्यो आगळ पडता अने उत्तम मानसिक ज्ञानवाळाछे. अने जेना उपर बीजा अल्प अने न्युन ज्ञानवाळा पुरुषोनो आधार छे. तेमणे तो मुख्यत्वे करी तेवा मध्यम अने अधम स्थितिना मनुष्योना दुख निवारण करवा सारु निरंतर प्रयत्न करवानी अवस्य अगत्य छे. तेमां राजाओएतो जे दुष्ट मनुष्यो मध्यम, अने अधम स्थितिना मनुष्यने पीडा करता होय तेमनुं द्रव्यादीक सर्वश्व हरण करी तेमने पोताना राज्यमांथी काहाडी मुकवा.

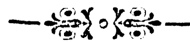
हालना समयमांतो घणा उत्तम मानसिक ज्ञान वाळा अने धनाढ्य पुरुषोनुं लक्ष मात्र पोताना स्वार्थ करवा भणीछे, ते पोताना समीपना सगासंबंधनुं दुःख निवारण करवा भणी एकक्षण पण लक्ष आपता नथी, तो बीजा गरीब अने अनाथ मनुष्योनी चिंता राखेज क्यांथी पोतानो स्वार्थ थयो एटले विषयना भोग अपरीमित भोगववामां निमग्न रहेछे. अने तेज प्रमाणे घणुं करी सघळा देशी राजानी पण वर्तणुक छे. जे कांइ करेछे ते दंभ अने पोताना स्वार्थनेज माटे करेछे. तेथी अंते सघळानी अधम स्थिति थइ परीणाम दुःखदायक थया विना रेहेतुं नथी.

३७. हवे आ विषयोमां अंतनी अति अगत्यनी सुचना इषाउपनिषदना ६ ठा मंत्रमां करेलीछे तेनो विचार आ प्रसंगे करीये. तेमां एवुं कह्युंछे जे सघळा प्राणीओनु "निवास स्थान एक परम शुद्ध अने सर्वोत्तम चैतन्य परमात्माछे; अने ते परमात्मा सर्वमां व्याप्त रुपे रहेलोछे. एवुं जेने सत्व ज्ञानछे. अने जेना अंतःकर्णमां एज "विचार सदोदित रहेलो छे तेनाथी कोइपण जातनुं पापकर्म थइ शकतुं नथी."

जेने अती उत्तम मानसिकज्ञानना योगे अनुभव सहित नीश्चात्मकबुद्धि ज्ञाननी परीपूर्ण उन्नति थइ उपर कहेलो सिद्धांत अंतकर्णने विषे द्रढ थयोछे,तेने हुं अने मारु ए भेद द्रष्टि रेहेती नथी ते सघळा जीव प्राणीं सरखा समजी सघळाने समान समजेछे. माटे माटे सघळाने विषे समान भ्रातृभाव समजी दया अने नम्रता आदीक उत्तम गुणोना योगे ते जे कार्य अथवा कर्म करे छे ते सघळा प्राणीने केवळ परोपकार बुद्धिथी, जेम कल्याण थाय तेवाज शुभ कर्मो करेछे, तेनाथी अयोग्य अथवा पापनुं कर्म कदीपण थइ शकतुं नथी. अने ते निरंतर दिर्घकाळ सुधी टकी शके एवी, सघळा मनुश्य प्राणीओ साथे, भिनभेद रहित सघळानो समान स्वार्थ समजी ऐक्यता करवाने प्रयत्न करेछे.माटे सघळा उत्तम ज्ञानी विवेकी अने सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखनारा पुरुषोये उपर कहेला केवळ परोपकारबुद्धिना महारुषीयोना वचनो

सत्य मानी ते प्रमाणे वर्तवाने द्रढ निश्चय करी, आग्रहथी प्रयत्न करवो, जेथी आलोक अने परलोकमां अति उत्तम लाभनी प्राप्ति निश्चय थशे.

संवत् १९४२ ना आषाडवद्य ९ने रवीवार.



द्वितीय खंड.

प्रकरण १ लुं.

पुर्वे प्रथमखंडमां अगीयार प्रकरणमां, पुरुष अने स्त्रिने उत्तम संस्कारी थवा सारु, सामान्य धर्मना साडत्रीस नीयमो कह्या. परंतु पुनरावृत्तिना थता बाळकोने नानपणथी नीति वीगरेनां शुभ गुणोनां बीजो तेमना कोरा अने निर्मळ अंतःकरणमां. आरोपण करवाथी आगळ मानसीक ज्ञाननी उन्नती थवा मांडी एटले, ते शुभ बीजोना अंकुर फुटी तेना वृक्ष थयाथी, आगळ युवावस्थामां, शुभ अने निर्विकार ज्ञाननां फळ आव्याथी, तेओ प्रापंचिक, सामाजीक, अने राजकीय विगरे कार्यो निर्दोष रीते करी शके एटलुंज नहीं, परंतु धार्मिक कार्यो पण उत्तम विवेकथी सत्य असत्यनी परीक्षा करी ते करी शके अने ते करवाथी, बुद्धि अने निश्चयात्मक ज्ञाननी उन्नति यथार्थ थइ एटले, आत्मा अने अनात्मानुं ज्ञान प्राप्त थयाथी, अती उत्तम गुप्त विद्या समजवा योग्यपात्र

थवाथी, श्रीष्टिनी गुह्य चमतक्रातिना नियमो जाण्याथी संसार असत्य अने मिथ्या जणाइ, तेमां लुब्ध नहीं थतां, ते स्थुळ देहना क्षणभंगुर कार्यो समजी ते उत्तम रीते भोगवतां छतां आत्म स्वरुपनुं सत्य ज्ञान मेळववामां पोतानो सघळो अवकाषनो समय काडवाथी पुनार्पि जन्म मर्ण उत्पन करे एवा क्रीयमाण कर्म तेवां स्त्रि पुरुषो करतां नथी, पण पोताना सांमत जन्ममां प्राप्त थयां एवां जे प्रारब्ध कर्मो तेथी अनियमित हर्ष अने शोक नहीं पामता, ते भोगवी, तेनो लय थया पछी कैवल्य मोक्षने पामे छे. ते माटे बाळपणथीज, बाळक अने बाळकीयोने उत्तम सद्‍गुण अने नीतिनी केळवणी आपवानी अवस्य अगत्यछे.

आपणे अनुभव उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, बाळक.अने बाळकीयो, घणु करी घणो समय पोतानी माता पासे रहेछे, तेथी ते तेना गुण अने दोषोनुं ग्रहण करे छे. पछी मोटपणे ते गुण दोषो प्रफुल्लित अने बळवान थइ, ते बाळक अने बाळकीयोनी वृति ते प्रमाणे वर्तणुक करवानी थायछे, ते माटे स्त्रियोने उत्तम प्रकारनी नीतिनी केळवणी आपवानी प्रथम अवश्य अगत्य छे, तेथी आ प्रसंगे ते विषे निषपक्षपात रीते विचार करीये.

हवे प्रथम पुरुष अने स्त्रि शुं वस्तु अथवा पदार्थ छे, अने तेनुं मुळ शी रीते छे. एनो विचार आपणे सुबोध पत्रीकाना पुर्वार्धमां करेलोछे, परंतु तेनो आ

प्रसंगे विशेष विचार कर्याथी मुमुक्षु श्रोताजनने निश्चय अधिक लाभ थशे.

प्रथम मात्र एकज अखंड अविनाशी निर्गुण आदी अंत अने रूप रंग वीनाना एक परब्रह्म अथवा परमात्मा प्रज्ञात छे; पछी काळांतरे ते प्रज्ञातमांथी प्रकृतिना किर्णनी स्फुर्णा थवा मांडी जेमां सर्व महाभुतो अति सुक्ष्म रीते रहेला छे. तेमां स्फुर्णाथी शक्ति उत्पन थइ, तेना द्विप्रकार थया, एक प्रेरिक अने बीजा ग्राहक अथवा ग्रण करनारी शक्ति, तेथी आगळ ब्रह्म, प्रकृति, अने शक्ति मळी त्रिवर्ग केवाया, अने तेमांथी सत्व, रज, अने तम ए त्रिगुण पृथकर्णथी विरक्त द्रष्टोत्तपति थया, पण तेमां उपर कहेला ब्रह्म, प्रकृति, अने शक्ति मळी त्रीवर्ग रहेला छे. तेथी आगळ उपर कहेला त्रण गुणमांथी स्थुळ श्रष्टि थवानो प्रारंभ थयो. माटे त्रिगुणात्मक श्रष्टि केवाइ ए त्रण गुणना उत्पत्ति, स्थिति अने लय ए त्रण प्रथक कार्यो थयां एज पुराणादीकमां ब्रह्मा, विष्णु अने रुद्र ए त्रिगुणवाळा देव केवाया, तेथी आगळ स्थावर जंगम अने जड चैतन्य विगरे श्रष्टि थइ, तेनुं विशेष विवेचन सुबोध पात्रिकामां करेलु छे तेथी, आ प्रसंग ए विषे अधिक समय काडवानी अगत्य नथी. ए महा भुतना जड चैतन्यना परमाणुओनुं सामिलन थइ, तेना उपर पुनरावृतिना संस्कार थतां थतां आगळ अर्धांगना सहित पुरुष अने स्त्रिनी

उत्पत्ति थइ, पछी तेना उपर संस्कार थइ ते प्रथक थया पछी केटलेएक काळे मैथुनी श्रष्टिनो आरंभ थयो. अने स्थुळ अने सूक्ष्म प्राणीओने रहेवानां मुख्य स्वर्ग, मृत्यु, अने पाताळ ए त्रण लोकनी व्यवस्था करी पछी ओंकार प्रणवनी स्फूर्णा प्रथम थइ, परा, पश्याति, मध्यमा, अने वैखरी ए चार वाणीथी वाक अने भाषा उत्पन थइ. पछी ज्ञाननी उत्पत्ति थइ मुख्य प्रथम रघु, यजुर, अने साम ए त्रण वेद ज्ञानमां गुप्त हता ते प्रसिद्ध थया ज्ञान उत्पन थइ, कर्म करवा मांड्या पछी,संचित, क्रियमाण अने प्रारब्ध ए त्रण कर्म थयां अने तेथी आगळ स्थुळ, सुक्ष्म, अने कारण ए त्रण देह थयां, तेमां जाग्रत,स्वप्न अने सुसुप्ति ए त्रण अवस्था थइ, अने पछी वर्तमान, भूत अने भविष्य ए त्रणकाळ नरिर्माण कर्या. तेमांथी आगळ विस्तार थतां थतां सप्तरुषि अने सप्त मुनी थया, पछी पुराणादिकमां सप्त उर्ध्व अने सप्त अधो एवा चौद लोकनी कल्पना करी, तेमज सप्त सागर अने सप्त द्विपनी कल्पन करी अने आगळ अधिक स्पष्ट समजवा सारु मनुष्यनी स्थुळ सूक्ष्म आदी लइ सप्त स्थिति दर्शावी तेनुं आपणे सुबोध पत्रिका पुवार्धमां स्पष्ट वर्णन करेलुं छे.

एवी रीते श्रष्टिनी वृद्धि थइ, मनुष्य प्राणीना कर्मानुसार देह प्राप्त थया पछी विशेष ज्ञान विद्याना योगे प्राप्त थया पछी, उत्तम, मध्यम, अने कनिष्ट

ए त्रण स्थितिने प्राप्त थता गया. अने ज्यारथी पंच इन्द्रीयोनी त्रष्णा वृद्धि पामी अति प्राचिनकाळना सनातन धर्मनो लोप थइ कल्पित विषय उत्तेजक कर्म अने धर्मनी वृद्धि थवा मांडी त्यारथी आपणा आर्यो निस्तेज थता गया, तेमां मुख्यत्वे करी स्त्रि वर्ग अविद्वान अने मुर्ख रह्याथी, तेमना कुमळा बाळकोमां शुभ ज्ञाननी प्रेरणा बाळपणथी नहीं थवाथी, अल्प ज्ञानी रह्याथी, विषयनी अपरीमित त्रष्णा उत्पन थवाथी, बीजाना शुभ गुणोने बदले अशुभ गुणो ग्रहण करवानी वृत्ति विशेष थवा मांडी, ए आपणे हालना अनुभव उपरथी स्पष्ट जणायछे, माटे ए विषे अधिक कहेवानी अगत्य नथी. परंतु हालनी स्त्रि केळवणीनी पद्धती केवी रीतनी छे, अने तेनुं परीणाम केवुं नीष्फळ थायछे, तेनो कांइक विचार आ प्रसंगे प्रथम करीए.

आपणा जाणवामांछे जे, आपणादेशमां, सांप्रत काळमां केळवणीनी पद्धती, पश्चिम देशना मानसिक ज्ञाननी उन्नतीने पामेला तार्किक ज्ञानी अने प्रापंची, सामाजीक, अने राजकीय ए त्रणे हालनी उत्तम स्थितिना विद्वानोनी पद्धति प्रमाणे चाले छे. तेमां घणा देहनेज घणुं करी आत्मा माने छे. एटले स्थूल देहनी आगळ पाछळ कांइज नथी. माटे मनुश्य प्राणीनुं कर्तव्य अने पुरुषार्थ एटलुंज, समजे छे के आ संसारमां प्रापंचिक,सामाजीक, अने राजकी-

य ए त्रणे स्थिति अति उत्तम प्रकारनी करी लेवानां साधनो अने विद्या मेळवी संसारनी दृष्टांतपत्तिमां आवेला पंच विषयनां सुख यथास्थित भोगवी लेवां. तेमां निति अने सत्यता आदीक उत्तम गुणो, उपर कहेला पंच विषयादिकनां सुख मेळववा सारु अने जे सुखो मेळवेलां होय तेनी न्युनता नही थवा सारु अथवा जन अपवाद शिक्षा, अने डंडना भयथी एवा केवळ संसारी स्त्री पुरुषो राखवानी अगत्य समजे छे. ते माटे तेवा जनोनी विद्यानी केळवणीमां अति आग्रहथी नीति अने सत्यताना विशेष बोधनां वचनो होय तो घणां थोडांज होय छे. परंतु तेवा केवळ स्वार्थी विद्वानो मात्र व्यवहारमां उपयोग आवे एवी विद्या अने ज्ञाननी वृद्धि थाय, तेवीज योजना तेमनां पुस्तकोमां करेली छे. परंतु निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति करी, आत्मा अनात्मानी निष्पक्षपात रीते परीक्षा करी, तेनुं साधन करी केवळ सत्य आत्मज्ञाननी केळवणीनां साधन भणी लक्ष सांप्रतकाळमां घणा समूहनुं नथी; तेथी तेवा सद्ग्रंथोनी यथार्थ उत्पात्ति अने प्रसिद्धि ते देशमां थइ नथी. तेथी आपणा देशमां सांप्रत काळमां जे विद्यानी केळवणी मळे छे ते मात्र साधारण मानसिक ज्ञाननी उन्नती थइ पोतानी प्रापंचिक स्थिति साधारण रीते उत्तम दशामां आवी संसारना पंच विषयोनां सुख भोगववा विषे त्रष्णा अधिक उत्पन थाय एवी छे.

अने तेम थवाथी आपणा देशनी अति प्राचिन उत्तम निति, सत्यता, अने सनातन धर्म एनुं सोधन करवामां अरुची थइ तो, आत्मा अनात्मा विगरेनुं सत्य ज्ञान मेळववुं तेवा पुरुषो निर्थक अने मुल्य विनानुं समजे; तेमां कांइ आश्चर्य नथी. अने एज प्रकारनी केळवणी हालमां आपणी कन्या अथवा बाळकीयोने मळवाथी ते सत्य निति अने अतिउपयोगी जे, सनातन धर्म शुं वस्तु छे. अने तेथी आ लोक अने परलोकमां केटलो लाभ थाय छे, तेथी केवळ अजाण्या होय छे; तेमां वळी तेमने जे लेखक वाचक आदिक अल्प विद्या मळे छे, तेना योगे तेमना वांचवामां घणुकरी विषय उत्तेजक ग्रंथो आव्याथी, तेमनी पंच विषयनी त्रष्णा उत्तरोत्तर अधिक बळवान थती जाय छे. तेणे करी तेमनुं लक्ष निरंत्तर उत्तम, खान, पान, वस्त्र, अलंकार अने विषयभोग भोगवा ते तरफज होयछे, ते पोतानुं सत्य कर्तव्य शुं अने ते पोतानी प्रापंचिक अथवा घरनी स्थिति उत्तम करवानां साधनो सोधी काडवा भणी लक्ष कदी आपता नथी तो पछी तेमनाथी पोतानी अने पोताना संतान वीगरे बाळकोनी आरोग्यता राखी तेमना कोरा अने निर्विकार अंतःकर्णमां स्त्रि केळवणी उत्तम निति अने बोधना बीजानुं आरोपण करी तेमने मानसिक अने बुद्धिज्ञाननी उन्नति करवाना साधनो आपी शकायज क्यांथी अने एज कारणने लीधे

आपणी सांप्रत प्रजा उत्तरोत्तर निर्बळ, निर्माल्य, अने निस्तेज थती जायछे. ते हालना भणेला अने विद्वानमां गणायला पुरुषोना जाणवामां आवतुं नथी, परंतु ए प्रमाणे आगळ जारी रेशे तो, थोडा समयमां पश्चाताप थया विना रहेशे नहीं; एवुं निस्पक्षपात रीते परीक्षा करी जोशे तो तेमने जणाशे. माटे आपणे उत्तम प्रकारनी स्त्रिकेळवणी केवी अने तेथी थता परीणाम एनो विचार करवानी अवश्य अगत्य छे. ते आगळ अवकाश आवेथी करीशुं.

संवत् १९४२ श्रावणवद्य १. रविवार.



प्रकरण २ जुं.

उत्तम प्रकारनि स्त्रि केळवणी.

आपणे पाछळ कह्युं जे, व्यक्त प्रकृतीमांथी प्रेरक अने ग्राहक अथवा ग्रहण करनारी शक्ति उत्पन थइ. ए बेउनुं समीलन थइ, प्रकृतीना तात्विक पंचमहाभुतना परमाणुओनो संग्रह थइ, तेना उपर संस्कार थता थता केटलेएक काळे अर्धांगना सहित पुरुषनी प्रगट उत्पाति थइ. त्यार पछी तेना उपर संस्कार थता थता काळांत्तरे उपर कहेला अर्धांगनाना जोडका विरक्त थइ स्त्रिपुरुष जुदा पड्या पछी, पौष्टिक भक्ष अने पान करता करता अन्नमांथी रेत उत्पन थया पछी विषयभोगनी त्रष्णा स्त्रिपुरुषोने उत्पन थवाथी,

मैथुनी श्रष्टि थवा मांडी. ते समये प्रथम काळमां पुरुष अने स्त्रियोना शुद्ध अने निर्मळ अंतःकर्णमां ब्रह्मलोकमां रहेवा निर्विकार महासमर्थ देवोनी शुभ प्रेरणा थती हती, तेणे करी पुरुष अने स्त्रि ए बेउनी वृत्ति निर्मळ हती तेथी निर्मळ एवुं जे सत्य तत्वज्ञान अने आत्मज्ञान ते मेळववा तरफज तेमनी वृत्ति थती हती. वळी तेमां ते समये श्रष्टिमां पंचविषयोने उत्तेजन करनारा भक्ष पान अने बीजा पदार्थो हालना जेवा उत्पन थयेला नोता, तेथी ते समयना पुरुष अने स्त्रिओने विषयभोगना सांप्रतकाळना समय जेवी अपरीमित त्रश्ना उत्पन थती नोती तेथी स्त्रि अने पुरुष बंने एक सरखो पोताना समयनो काळक्षेप, केवळ शुद्ध अने सत्यज्ञान मेळवी निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति करवा तरफज करता हता.

पछी आगळ जेम जेम, मनुष्य प्राणीनी वृद्धि थती गइ, तेम तेम महासमर्थ अने केवळ परोपकार बुद्धिना रूषी अने मुनीओये, नवा उत्पन थता मनुष्यप्राणीओने, सनातन धर्म अने अधर्मनो उपदेश करी अति उत्तम अने आलोक अने परलोकमां उत्तम सुख प्राप्त थवानी, उत्तम नितिनी केळवणीना ग्रंथोनी व्यवस्था करवा मांडी. पछी प्रथक प्रथक मनुष्यप्राणीनी वृत्ति अने ज्ञान एने अनुसार वर्णाश्रमना धर्मनी मर्यादा गुणानुसार करी तेथी योग्य वर्ग बंधाइ, तेमां परस्पर उत्तम स्नेह अने ऐक्यता

थइ, एक बीजाने सर्व कार्योमां सहाय करवाना प्रापंचिक, सामाजीक, राज्यकीय, अने धार्मिक कर्मो उत्तम रीते करवा मांड्यां; तेथी सघळाने उत्तम लाभ थइ, ज्ञाननी पण अती उत्तम प्रकारनी उन्नती थवा मांडी. माटे ते समये बाळपणथीज, बाळक अने बाळकीयोने सनातन धर्मनी मर्यादामां राखी, उत्तम नितीनी केळवणी आपवानो अभ्यास पड्यो हतो पछी संसारनी वृद्धि थवाना शुभ हेतुथी, बळवान विर्यवान, अने बुद्धिवान प्रजा उत्पन थइ शके, एवी रीते लग्ननो काळ निर्माण करी, नियमित विषय भोग भोगववानो काळ निर्माण कर्यो. ए विषे राजरुषी ग्रंथमां विस्तारथी विवेचन करेलुंछे. ते छतां आ प्रसंगे मळेला धर्मजीज्ञासु भ्रातुने अधिक लाभ थवा मारु तेनुं कांइ विशेष वर्णन करीये.

पूर्वे बाळक अने बाळकीयोने नानपणथीज, निर्गुण भक्ष अने पान करवानो अभ्यास पडी, पहेरवाने सादां वस्त्र अलंकार अने सुवाने प्रथ्वी उपर सादा बीछाना, अने उपदेश पण सनातन धर्मनो अने ज्ञाननी उन्नती करवानो अभ्यास पडवाथी, स्वाभाविक रीते शरीरनी परीपुर्ण पुष्टि थया पछी, पूर्ण युवावस्थामांज; विषय भोगनी त्रष्णा उत्पन थती हती, तेथी ते समये बाळ लग्न चारे वर्णमांथी कोइपण वर्णमां थतां नहीं, माटे योग्य वये लग्न करी विषय भोगनो योग्यकाळ विद्वान अने दिर्घद्रष्टा रुषीओए

जे नीर्माण करेलो छे, ते राजरूपी ग्रंथमां दर्शावेलो तेनी आ प्रसंगे अल्प सुचना आप्याथी विवेकी श्रोताजनोने लाभ थशे; तेनुं प्रमाण एवुं छे जे-
श्लोकः॥ पंच विंशततो वर्षे पुमान्ना रीतु षोडशे ॥
समत्वा मत वियौंतौ जानियात्कुशलो भिषक॥
एटले पुरुषनी वय पचीस वर्षनी थाय ते समये अने स्त्रिनीवय सोळ वर्षनी थाय, त्यारे ते बंनेना विर्य परीपक्क थाय छे. माटे तेमांथी जे प्रजा उत्पन थाय, ते पण आरोग्य रही वियॅवान, अने बळीष्ट थाय छे अने शरीर बळीष्ट थावाथी, मन पण बळीष्ट थइ, उत्तम मानसीक ज्ञान मेळवी, निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान यथार्थ मेलववाने ते संत्तती शक्तिवान थाय छे. एनां प्रत्यक्ष प्रमाणो प्राचीन ग्रंथमां घणां छे ते मांथी कांइक आ प्रसंगे कह्याथी; विवेकी श्रोताजनने यथार्थ निश्चयनी पुष्टि थशे. पूर्वे मैत्री अने गार्गि नामनी स्त्रियो ते समयना रूपीना उत्तम ज्ञान ग्रहण करवाने योग्य हती, एटलुंज नहीं पण तेमणे उत्तम आत्मज्ञान अने तत्वज्ञानना बोध बीजा पुरुषोने पण करेला छे तेवी रीते सीता, पार्वती, सावित्री, अनुसूया, नर्मदा, लोपामुद्रा, भोगवती, द्रौपदी; अने दमयंती वीगरे उत्तम प्रकारनी पतिव्रता स्त्रियो थइ गइ, तेमनी संतती पण वीर्यवान अने बळवान थइ छे ते पुराणादीकमां प्रसीद्ध छे ते समयनी स्त्रीओ उत्तम नीतीवान छतां, प्रापंचीक अथवा घरनो पग

व्यवस्था उत्तम रीते करी, पोताना बाळकनी सामान्य आरोग्यता राखी तेमना कोरा अंतःकरणमां सनातन धर्म अने नितीनां बीजोनुं आरोपण करती हती.

पछी आगळ विषय उत्तेजक भक्ष अने पाननी वृद्धि थइ, वस्त्र अलंकारादीक नाना प्रकारना भिन्न भिन्न उत्पन थइ, तेनुं ग्रहण करवानी वृत्ति बाळपणमांथी थवा मांडी; अने नरम अने शुशोभीत बीछाना उपर सुवा मांडयुं अने प्रसंग पण सर्व प्रकारे विषय उत्तेजक अने आखो दविस स्त्रिओये वार्ता पण नाना प्रकारनां आभुपण अने खानपान वगेरे विषयनी करवा मांडी, त्यारथी तेमना अंतःकर्णमां अपरीमित विषय भोगनी त्रणा उत्पन थइ एटलुंज नहीं; पण ते स्त्रिओना कुमळा बाळकोने पण तेमना अहोनीष प्रसंगथी तेवीज त्रणा बाळपणमांथी उत्पन थवा मांडी. तेथी अंते युवावस्थामां तेवाज समागम अने बोधथी, तेमनी विषय भोगनी त्रश्णा उत्तरोत्तर वृद्धिने पामती गइ; तेणे करी अल्प वयमां विषयभोग भोगववानी प्रबळ इच्छा थवा मांडी, तेथी तेवा समयना पंडीतोये कन्याना लग्ननो काळ तेज प्रमाणे अल्प वयनो निर्माण कर्यो. तेमां काशीनाथ नामे पंडीते सिघ्रबोध नामे ग्रंथमां एवुं कह्युं छे जे.

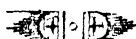
श्लोकः॥अष्ट वर्षा भवेद गौरी नव वर्षातु रोहिणी॥
दश वर्षा भेवत कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला॥

एटले आठ वर्षनी बाळकी गौरी कहेवाय छे. नव वर्षनी रोहीणी अने दश वर्ष थयां एटले ते कन्या थइ, अने तेथी उप्रांत ते कन्याने रजस्वळा समजवी. माटे दश वर्षनी कन्या थइ, एटले तो अवस्यज लगन करवुं जोइए. अने एज आधारथी सांप्रतकालमां भरतखंडमां घणुकरी चारे वर्णमां लग्न करवानो अभ्यास पडयो छे, अने घणुंकरी अगीयार वर्षथीज विषय भोग पण करेछे. तेथी तेनुं परीणाम आपणा जोवामां प्रत्यक्ष तेमनी संत्तती निर्बल अने निर्माल्य थइ, ते माता पण अशक्त थइ आयुष पण अल्प भोगवे छे.

एवी रीते विषय भोगनी अपरीमित तृष्णाने लीधे अज्ञान प्राप्त थइ, सत्य विवेक रहीत भरतखंडना आर्यो घणां वर्ष थयां थएलाछे अने थता जायछे माटे अकस्मात सांप्रत स्त्रि अने पुरुषनी स्थिति बदली अति प्राचिन कालनी सर्वोतकृष्ट अति उत्तम स्थिति पाछी आणवाने प्रयत्न करवो अति दुर्लभछे, जेम महा नदी अथवा समुद्रनो प्रवाह अकस्मात अथवा एकदम बंध करवाथी उलटु परीणाम विप्रित थाय छे. तदवत आपणा, निस्तेज थयेला आर्योनी सांप्रत स्थिति अति उत्तम दशामां आणवानुं कार्य महा विकट छे. ते छतां जेवी रीते महानदी अथवा महासागरना अति बळीष्ट प्रवाहने अटकाववो होय तो प्रथमथी ते प्रवाह जवाने बीजो मार्ग करी आ-

प्या पछी ते प्रवाह अटकी शकेछे. तेज प्रमाणे स्वाभाविक चालती रुढीने कांइक अनुसरी स्त्रिपुरुषनी सांप्रत स्थिति पुर्ववत दशामां आणवाने प्रयत्न करीये तो ते,बनी शके. माटे आपणी सांप्रत स्त्रिपुरुषनी स्थिति उत्तम प्रकारनी थइ, प्रापंचिक समाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे कार्यो अति उत्तम रीतना थवाना साधनोनो विचार आपणे आवते प्रसंगे करीशुं.

संवत् १९४२ श्रावणवद्य ७ रवीवार.



प्रकरण ३ जुं.

संसारीक अने धार्मिक कार्योनी उन्नति थवाना साधनो.

आपणे पाछळ एवुं कह्युं जे, सांप्रतकाळना निस्तेज थयेला भरतखंडना आर्योनी स्थिति तेमना अति प्राचिन पुर्वजोनी जेवी स्थिति अती उत्तम करवा सारू सांप्रतकाळनी केटलीएक प्रापंचिक अने सामाजीक रुढीने अनुसरी, उपदेश करवाथी अवश्य लाभ थइ शकशे. माटे तेनो विचार प्रथम आ प्रसंगे करीये.

उत्तम प्रकारनी स्त्रिकेळवणी करवाना साधनोमांनु मुख्य साधन ए छे जे, आपणी कन्याने बाळपणाथी निर्गुण पण पौष्टि भक्ष पान करावनानो अ-

भ्यास रखाववो, एटले दुध, चोखा, घी, जुआर नहींतो घउं, विगेरे अन्न आपवुं अने तेल, खाटुं अने विशेष खारु जेम बने तेम कमी, अपाय तो सारु. तेज प्रमाणे पेहेरवाने सादा अने अल्प मुलना घणा झीणा नहीं तेवा साधारण वस्त्र अने साधारण अलंकार पेरावावानो अभ्यास राखवो सुवाने प्रथवी उपर घणा नरम बीछाना नहीं, पण साधारण अने सादा, तेमज नीच, तमासा विभिस्त नाटक अने इंन्द्रिओने उत्तेजन आपनारी रमत पण रमवा देवी नहीं; तेवीज रीते बाळकोने सांभळवामां, जोवामां, अने कोइ पण जातना अपशब्द बोलवामां, अने विषय उत्तेजक पदार्थो जेम बने तेम तेमने नही लेवामां आवे तेम करवुं, तेमज भजन कीर्तन पण विषय उत्तेजक अने बीभत्स होय ते सांभळवानो अने गावानो प्रतिबंध करवो. अने पोतानी संसारी स्थिति अने उपजीविकाना प्रमाणमांज खान, पान, वस्त्र, अलंकार विगेरेनो उपयोग करवो, पण कोइना वस्त्र अथवा अलंकार मागी लावी ते पोतानी बाळकी अथवा बाळकने पेहेरावी, तेमनी बाह्य अने अंत्तर इंद्रियोने जाणी जोइने उत्तेजन आपवुं नही. वळी मुख्यत्वे करी बाळकीयोने मात्र बाळबोध अक्षर अने लीपोनो लखवा वांचवानो अभ्यास कराववो; तेमां प्रत्येक पाठोमां निति अने शीखामणना वाक्यो आणवानो अगत्य छे. पछी आगळ तेमना वांच-

वामां पण सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादा दर्शावे एवा पुस्तकोनी अवश्य अगत्य छे. तेमज बाळपणथीज, बाळक अने बाळकीयोने सनातन धर्म अने अधर्म शुं छे, ते समजावी तेनी यथार्थ मर्यादामां राखवाने, तेमना माता पीता अने विद्या गुरुये द्रढ आग्रहथी प्रयत्न करवो. तेमज बालकीयोने, भरता, शांवता, शीखवी. नाना प्रकारनी भिन्न भिन्न सामग्रि रांधतां शीखवबुं अने पोताना घरने वाळीने स्वच्छ राखी वस्त्र अलंकार अने वासण विगेरे स्वच्छ अने निर्मळ राखवानी टेव बाळपणथीज रखाववी, अने गरीब अने साधारण घरनी व्यवस्था युक्तिथी चलाववानी रीतीथी बाळकीओने, तेनी माताओये अवश्य जाणीती करवी जोइये. केमजे तेने पती अथवा वर तेवी मध्यम स्थितिनो मळे तोपण पोतानो व्यवहार कांइ पण पश्चाताप थया विना निर्विघ्नपणे चाली, बेउ सुखी थइ, आनंदथी प्राप्त थयेलुं सुख भोगवे, पण बीजाना उत्तम सुख जोइने ते पोताने प्राप्त करवानी त्रष्णा तेवी विवेकी स्त्रीयोने थाय नहीं. एवी रीते साधारण बाळकीयोने साधारण उपयोगी रीतीभातीथी जाणीती करवी. हवे तेना लग्ननी व्यवस्था केवी रीतनी करवी तेनो विचार करीये.

बाळकीओना लग्न हाल आधुनीक उपर जणावेला ज्योतीष ग्रंथना आधार प्रमाणे दसवर्ष पुरा थया पछी अगीयारमे वर्षे ओछामां ओछा शोळवर्षना

पुरुष साथे करवानी अडचण नथी, परंतु तेनी अंदर नहीं करवाने चारे वर्णना आर्यजनोये आग्रह राखवो. लग्न थया पछी, पाछळ कह्या प्रमाणे उत्तम निति अने सनातन धर्मनी मर्यादामां कन्याने राखवाने अति आग्रहथी प्रयत्न करवो, तेमज संसारना साधारण घर कामथी पण तेमने संपुरण रीते जाणीती करवी. अने वस्त्रअलंकारादीक पेहेरवानी पोताना पती अथवा वरनी स्थिति उपरांत त्रष्णा उत्पन थवा देवी नहीं. एवी रीते कर्या पछी, ते कन्याने कोइ पण रीते विषय उत्तेजन थवानी वार्ता अथवा प्रसंग थवा देवो नहीं; पण ज्यारे स्वभाविक रीते ते कन्याना अंतरमांथी विषयभोगववानी योग्य इच्छा उत्पन थाय त्यारेज, विषयभोग भोगववा देवा, एटले घणुं करी स्त्रियोने विषयभोगनी योग्य त्रष्णा, प्रथम रजस्वळा थया पछी, उत्पन थायछे. माटे तेज समय योग्यछे. अने तेवी रीते घणुं करी महाराष्ट्र देशमां अने आखा दक्षणदेशमां सघळी जातना आर्यजनोमां पद्धती हालपण घणुं करी चाले छे, तेवी रीते गुर्जर देशमां चालेतो अति उत्तमछे. अने एज पद्धती सत्य शास्त्रना आधार प्रमाणे छे. माटे ए वीशे हालमां अंधपरंपरानी चालती रुढीनो त्याग करवाने अती आग्रहथी प्रयत्न करवानी भणेला अने विद्वान पुरुषोने तो अवश्य अगत्यछे. केमजे तेवी रीते यथार्थी स्त्रि अने पुरुष ए बंनेना विर्य परीपक्व

थइ संतती पण नीरोगी अने संपुर्ण बळीष्ट थइ तेना माता अने पिता बेउनी आरोग्यता पण यथार्थ रही शकेछे. वळी युवावस्थामां पण विषयभोग नीयमित रीते भोगववाथीज आरोग्यता रही शकेछे.

एवी रीते योग्य समये लग्न थया पछी स्त्रि अने पुरुष ए बंनेमां परस्पर सत्य स्नेह अने योग्य अंतःकर्णनी प्रिति उत्पन थइ, संसारना मानेला सुख योग्य रीते भोगवी शकाय, तेना नियमो विगेरेनो विचार आगळ प्रसंग आवेथी करीशुं.

संवत् १९४२ भाद्रशुद्ध ८ रवीवार.

प्रकरण ४ थुं.

नितिनी केळवणी.

आ संसारमां स्त्रि अने पुरुष ए बेउने परस्पर सत्य स्नेह अने प्रिति उत्पन थइ, संसारनुं सुख भोगववाना साधनोमां प्रथम स्त्रिये पाछळ कह्या प्रमाणे योग्य समये विशय भोग भोगववा मांड्या, एटले तेणे पोताना स्वामिनी शुभ आज्ञामां रहावाथी, तेनी सत्य प्रिति संपादन थायछे. अने जेवी पोताना स्वामिनि स्थिति होय, ते प्रमाणे पोते वस्त्र अने अलंकार पेहेरवानी इच्छा राखवी, पण बीजी स्त्रियोना वस्त्र अलंकारादी जोइ, ते मेळववाने पोताना पतिनि स्थिति उपरांत प्रयत्न करवुं नहीं, अने कोइ पण प्र-

संगे पारकु वस्त्र अथवा अलंकार मागी आणी पेहेरवानी त्रष्णा राखवी नहीं; पण पोताने जे शुभ कर्मथी प्राप्त थयुं होय तेमांज संतोष मानी आनंदमां रहेवुं. वळी पोताना पतीनी स्थिति उत्तम होय अने घेर चाकर विगेरे होय, तोपण पोते पोतानी शक्ति प्रमाणे घरनी स्वच्छता राखवाने चाकर विगेरेने पोताने हाथे काम धंधो करी देखाड्या पछी, तेमना उपर नीरंतर नजर राख्याथी, पोतानुं घर अने वांसण कुशण विगेरे निर्मळ अने स्वच्छ रही शके छे. एटलुंज नहीं; परंतु पोताना हाथपग विगेरे अवयवोने थोडी घणी मेहेनत आपवाथी, पोताना शरीरनी आरोग्यता रहेछे; तेवीज रीते पोताना प्राणनाथने प्रिय लागे एवी रसोइ पण करवानी टेव राखवानी अवश्य अगत्य छे. एवी रीते घरना कामथी परवार्या पछी अवकाशना समये थोडो समय भरवा शीववामां काहाडवो अने केटलोएक समय नितिना ग्रंथो विगरे वांचवामां राखवो. परंतु कोइ पण समय अनितिनां काव्यो अथवा शृंगारनां भजन कीरतन पण विषय उत्तेजक होय तो ते क्यारे पण वांचवा नहीं; अने सांभळवा पण नहीं; अने नितिवाळी स्त्रिओज, समागम निरंतर करवानो अभ्यास राखवो. नित्य सवारमां सुर्य उदय थयानी अगाउ पोताना पतिने उठ्यानी पूर्वे पोते उठवानी टेव राखवी, अने दातण पाणी स्वच्छ रीते करी,

निर्मळ पाणीथी पोतानुं शरीर सारी रीते चोळी स्नान करवुं. वस्त्र सहित स्नान करवानो अभ्यास राखवो. घणुकरी गुर्जर देशमां स्त्रिओने वस्त्र विना स्नान करवानो अभ्यास छे, एवी वदंता चाले छे. माटे एम जो होय तो ए चाल अति निंदवा जोग छे. एमां घणे प्रसंगे पोतानुं पतिव्रत्तपणुं जाळवी शकवुं अति कठण पडे छे. माटे ते विशे मनुस्मृतिना अध्याय ४ना ४५मा श्लोकमां कह्युं छे--

नान्न मद्या देकवस्त्रो न नग्नः स्नानमाचरेत् ॥
नमुत्रपंथि कुर्वीत न भस्म निनगोत्रजे ॥

एटले स्त्रिये एक वस्त्रथी एटले चोळी वगर रांधवुं अने जमवुं नहि. वस्त्र विना नाहावुं नहीं. अने मारग तथा राखोडी, अने गायनी कोहोड वीगरे स्थानमां मळ मुत्र करवुं नहीं. एवी रीते सघळी अयोग्य रुढीनो आपणा शास्त्रमां प्रतीबंध कर्योछे. एवी रीते नाना बाळक अने बाळकीयोने पण प्रातःकाळे मुख मार्जन कराव्या पछी स्वच्छ रीते स्नान करावी स्वच्छ वस्त्र पेरावर्वा, तेथी सामान्य आरोग्यता रहे छे, त्यार पछी पोताना बाळकोने सत्य अने सनातन धर्मनो उपदेश करी, थोडुं घणुं लखक वांचकादीकनुं पण ज्ञान बाळकनी वय पांच वर्षनी थया पछी तेनी माताए आप्याथी अधीक लाभ छे; एवी रीति कर्याथी ते बाळकनुं मानासिक अने बुद्धि ज्ञान ए बउनो साथे प्रकाष थइ शके छे.

एवी रीतना स्त्रियोने वर्तवाना सामान्य धर्म छे. पण हवे तेमना विशेष धर्मनो विचार करीये.

१ आपणे पाछळ कह्या प्रमाणे कन्याना लग्न सारु वरना सामान्य गुण रूप, विद्या, अने सामान्य संसारनी स्थिति तथा योग्य वय एटलुं तो अवश्य कन्याना माता पिताये प्रथम जोवानी अगत्य छे, परंतु कदापी कन्याना प्रारब्धना योगे लग्न थया पछी, तेनो स्वामि दरीद्र, रोगी, अथवा कदापी अंध अने नपुशक थाय तोपण कुलिन अने पतिव्रता नारीए तो तेनी इश्वरनी पेठे सेवा करवी अने, तेनो तिरस्कार अथवा तेने कटु वचन पण कोइ समये नज कहेवुं. एवी रीते आपणा सत शास्त्रमां कह्युं छे.

१ पतिव्रता एवी जे स्त्रि तेणे पोताना पति शीवाय बीजो पुरुष अधिक रूपवान, द्रव्यवान, गुणवान अने युवावस्थावाळो होय तोपण तेनो प्रसंग, अथवा तेनी साथे विना कारण सेहेज, स्वभावे बोलवुं नहीं.

२ पतिव्रता स्त्रिओये, परपुरुषने, पोतानी नाभी, साथळ, अने छाती वीगरे विषय उत्तेजक अवयवो, देखाडवा नहीं, अर्थात शरीर उपरथी वस्त्र खशी जाय एवी रीते परपुरुष आगळ वर्तवुं नहीं; तेमज विषय उत्तेजक भांड भवाइ, अने तेवां नाटको तथा तेवा देवमंदिर वीगरे स्थानमां जवानो

प्रसंग राखवो नहीं.

४ वळी सौभाग्यवाळी पतिव्रत्ता स्त्रिये, पोताना पती परदेश गयो होय ते समये तो अवश्य रुडां आभुषण अथवा घरेणां पेहेरवां नहीं अने मुल्यवान विषयने आकर्षण करवावाळां वस्त्र पण धारण करवां नहीं, पारके घेर विना कारण कर्मणुक करवा सारु बेसवा जवुं नहीं. अने हास्य एटले हसवुं अने विनोद अथवा महा मुस्करि थट्टा विगेरे करवां नहीं.

हालना समयमां सनातन धर्मनी मर्यादामां रही एवी रीते सत शास्त्रमां कह्या प्रमाणे पतिव्रत पाळवा उपर लक्ष स्त्रिओनुं जणातुं नथी. घणी स्त्रियो पोताना पतिने पोतानी विषइ कामना पुरी पाडनार अने नाना प्रकारनां आभुषण वस्त्र, तथा- रशस्वाद पुरा पाडनारो एक पुरुष मात्र समजे छे. अने पोते निरंत्तर स्वछंद अने स्वतंत्रपणे वर्तवानी इच्छा राखे छे कोइक नियममां रह्या जेवी स्त्रियो जणाय छे.ते मात्र लोक लाज अने पोताना कांइ पण स्वार्थ सारूज छे.

एवी स्त्रियोने स्वच्छंद अने स्वतंत्रपणे चालवाने हालनां प्रपंचि साधनो आति उतकृष्ट उपयोगमां आवेछे. तेवी स्त्रियो पोताना घरमां अने पोताना पती सनमुख जीर्ण वस्त्र, अने घणुं करी अंलकार विनानी सादी रहेछे एटलुंज नहीं पण पोताना प्राणनाथ साथे मिष्ट भाषण करी तेनी साथे विशेष हास्य विनोदनी इच्छा राखती नथी, परंतु

एथी उलटुं विहीवाना समये अथवा कोइ पण सामाजीक कार्य सारु न्यातजात, अथवा देव मंदीर जवाने समये नाना प्रकारना विषय उत्तेजक झिणा वस्त्र, अने दांभिक अलंकारो पेहेरी, तथा काजळनुं अंजन करी जे समये बाहार नीकळे छे, ते समये केटलीएक पशुवत स्त्रीयो, अंजन करेली चक्षुना बाणथी तथा विषयना हाव,भाव, अने विलक्षण चाल अने कोइ समये भाषणथी परपुरुषना अंतःहकर्ण घायल करे छे. परस्पर स्त्रियोमां तो हास्य विनोद ज घणी स्त्रिओ कर्या करे छे.अने केटलीएक हालनी केळवणी पामेली लेखक वाचकवाळी स्त्रियो पर पुरुष साथे पण अनेक प्रकारनी, अयोग्य स्वतंत्रा ले छे. तेथी अंते परीणाम विप्रित थता छतां,तेमना माता पिता अने पतीयो विगरे सगा संबंधी विशेष लक्ष आपता नथी. तेथी व्यभीचारादीकनी वृद्धि उत्तरोत्तर अधिक थयाथी आर्यजनो तन, मन, अने धनथी निर्माल्य थता जाय छे.

प्राचीनकाळमां पतिव्रता स्त्रिओनो मुख्य धर्म शुं छे. अने तेमनुं कर्तव्य शु.अने तेमणे धर्म संबंधी शुं करवुं के जेथी आ लोक अने परलोकमां तेमनुं कल्याण थाय. अने स्त्रि पुरुषमां परस्पर सत्य स्नेह अने प्रितिनी द्रढता थइ, पोतानी प्रापंचिक अथवा घरनी स्थिति उत्तम दशामां आवे, ए विशे प्राचिन काळना केवळ परोपकार बुद्धिना विद्वान अने सत्य

पुरुषोये अनेक प्रकारना बोध करेला छे. अने तेनुं परीणाम आपणे प्राचिनकाळना इतिहास उपरथी स्पष्ट जणाय छे. पूर्वे मैत्रि, गारगि, तेमज सिता, अने दमयंती विगरे पाछळ कहेली पतीव्रत्ता स्त्रियो विद्वान अने गुणवान छतां पोताना स्वामि अथवा पतिनेज इश्वर गणी तेमनी आज्ञामां रहेती हती. तेओ हालनी स्त्रिओनी पेठे पोताना स्वामीने मात्र विषय भोगनी त्रप्ति करवा सारु अने सुंदर वस्त्र अलंकार पुरा पाडवा सारु अगत्य समजती नोती, पण ते पोते पतिनी अर्धांगना एटले अर्धु शरीर समजी तेनी सेवा अने आज्ञा प्रमाणे वर्त्ताथी, धर्मनुं कार्य थयुं एम समजती हती. तेथी स्त्रि पुरुषोनो सत्य स्नेह अने प्रिति अक्षय रहेती हती तेथी संतती पण उत्तम मानसिक ज्ञानना अंकुरवाळी अने सुद्रढ थती हती; माटे ए विषे आ प्रसंगे शास्त्रनां कांइक प्रमाण दर्शाव्याथी विवेकी श्रोताजनोने द्रढ निश्चय थशे.

व्रतार्क नामे सुबोध ग्रंथमां पतिव्रता स्त्रिओये पुजा सेवा केवी रीतनी करवी ए स्पष्ट दर्षावेलुं छे.

श्लोकः

नास्ति स्त्रिया यज्ञोनो व्रतं नाप्यु पोषणं ॥
भर्तृ शुश्रूषणे नैव, लोका निष्टा व्रजे तिता ॥१॥

एटले "पतिवृता एवी जे स्त्रि तेने वृत अने उपवासादीक प्रथक करवानी अगत्य नथी, तेणे तो पोताना पतिनी आज्ञामां सदाकाळ रही, तेनी सेवा

करवी एज मुख्य तेमनो धर्म अने वृत्त छे." केमजे स्त्रिनो पुरुषनी अर्धांगना केहेवाय छे, तेथी पुरुष जे सत्य कर्म अने धर्म करे छे, तेनो श्रेय अथवा तेनुं अर्ध फळ ते पतिवृता स्त्रीओने मळे छे. एवो सत्य शास्त्रनो सिद्धांत छे.

वळी लघु पारासर नामे शास्त्रमां पतिव्रता नारीने एवो बोध करेलो छे.

श्लोक.

पत्यै जीवति या नारी उपवासं व्रतं चरेत ॥
आयुष्य हरते भर्तुः सानारी नर्क व्रजेत॥१॥

एटले स्त्रिनो पति जीवन छतां ते जो उपवास अने व्रतादीक कर्म करे तो, तेथी तेना पतिनुं आयुष न्युन थायछे. अने ते व्रत आदीक करनारी नारी नर्कमां जाय छे.

वळी मनुस्म्रतिना पांचमा अध्यायमां एवुं कह्युं छे जे,–

नास्ति स्त्रीणां पृथक यज्ञोन व्रतं नाप्यु पोषितम् ॥
पति शु श्रुषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥ १५६ ॥

एटले सुवासनी स्त्रीओने पोताना पतिथी जुदा यज्ञ, अने वृत्त तथा उपवासादीक बीजा धर्म करवानो अधीकार नथी पण ते जो पतीनी सेवा अने आज्ञा प्रमाणे वर्तेतो ते स्त्रियो स्वर्गमां पण पूजायछे वळी महाभारतना आदी पर्वमां कह्युं छे.

एत द्वापरंमनार्य्याःकार्यं लोके सनातनम् ।
प्राणानपि परित्यज्य यद्भर्त्तुर्हित माचरेत् ॥

एनो भावार्थ एछेजे लोकमां नारीओए निरंत्तर सनातन धर्मनी मर्यादामां रही पोताना प्राणनाथना हितने अर्थे पोताना प्राणनी पण रक्षा नही करतां पोताना पतिनुं जेम हित थाय तेमज नीरंतर वर्तेवुं ए पण पोतानो सनातन धर्म समजवो. वळी भारतना अनुशासन पर्वमां धर्म भागिनी स्त्री विशे एवुं कह्युं छे.

पतिवृता पति प्राणसा नारी धर्म भागिनी ॥
शुश्रूषां परिचर्य्यांच करोत्य विमनाःसदा ॥

एनो अर्थ एवो छे के जे स्त्री पतिवृता अने पतिनो प्राण रुप थइ सर्वदा आनंदथी तेनी सेवा करी तेनी आज्ञामां रहे छे. तेज धर्म भागिनी थाय छे.

वळी सुपात्र अने पतिवृता नारीने आलोक अने परलोकमां केवी प्राप्ति थाय छे ते वीशे मनुस्मृतीना पांचमा अध्यायमां कह्युं छे.

पति या नाभिचरति मनो वांग्देह संयता ।
साभर्तृ लोक माप्नोतिसद्भिःसाध्वीति चोच्यते॥१६५।
अनेन नारी वृत्तेन मनो वांग्देह संयता ।
इहाग्र्यां कीर्तिमाप्नोति पति लोकं परत्रच ॥१६६॥

एटले जे स्त्री पोताना पतिनुं कोइ पण रीते अपमान नहीं करतां पोताना मन, वाणी अने देहथी एक सत्य निष्टाथी वर्तेछे ते आ लोकमां साध्वि ए-

टले पतिवृता गणाइ परलोकमां पण निरंतर पोताना स्वामीनी पासेज रहे छे.

सनातन धर्म संपन, अनुभवी, संतोषी, विवेकी, मर्यादावाळी, दयाळु एवी स्त्रियोने सतशास्त्रमां केवी उपमा आपी छे ते सांभळो. परोपकार वृत्तिवाळी नम्रतावाळी, स्वच्छतायुक्त, घरकाममां कुशळ, वीगरे गुण युक्त नारीनेज शास्त्रमां पण सारी उपमा आपी छे.

साभार्या या शुचिर्दक्षा साभार्याया पतिव्रता ॥
साभार्या या पति प्रीता साभार्या सत्य वादिनी ॥

एवी भार्या एटले स्त्रि सुलक्षण, पतिव्रता, पतिने प्रिय अने सत्य वक्ता पण केहवाय छे.

वळी सत शास्त्रमां स्त्री अने पुरुषने निरंतर चींता रहित अंतःकरण राखवानी अगत्य दर्शावेलीछे.

श्लोकः

चिंता चिंता समानेव बिंदुमात्र विशेषतः ।
सजीवं दहत चिंता निर्जीवं दहते चिता ॥

एटले चींता चीता समान छे. केमजे चिंताना एक बिंदुथी जीवता मनुष्यनुं रक्त बाळी नांखे छे. अने मरी गयला देहने चीताना अग्नीनी एक चणगारी बाळी राख करी नांखे छे.

एवी रीते पतिव्रता स्त्रियोये पोताना ज्ञानवान सनातन धर्म संपन्न अने उत्तम बुद्धिवान पतिनी आज्ञामां नीरंतर रही तेमनीज सेवा कर्याथी, उत्तम धर्मनुं

कार्य ते नारीये कर्युं ए निश्चयछे. परंतु कदापी प्रारब्धना योगे पति मुर्ख अने दुर्गुणी होय तो, तेनी स्त्रिये उत्तम विवेकथी योग्य रीते मीष्टवचनथी वर्तवुं. परंतु तेवा पतिनो पण तिरस्कार कदापी करवो नहीं, अने कटु वचन कहेवुं नहीं.

आ उपरथी अंतनी सुचना एटली आपवानीछे के, सांप्रतकाळनी स्त्रियो साधारण विद्या अने ज्ञान सामान्य मेळवी एवी रीते वर्तशेतो स्त्रिपुरुषमां सत्यप्रेम अने प्रिति उत्पन थइ, पोतानी प्रापंचीक स्थिति उत्तम प्रकारनी थशे. एटलुंज नहीं परंतु एवा सम प्रितिवाळा स्त्रिपुरुषथी तेमनी प्रजा, पण विर्यवान, बळवान, अने उत्तम मानसिक, अने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञान मेळवी शके, एवी थशे; अने तेथी अति निस्तेज थयेला आर्योनी उन्नति पुर्ववत थवानो संभवछे.ते माटे सांप्रतकाळना विवेकी युवावस्थावाळा स्त्रि अने पुरुषोये ए प्रमाणे वर्तवा अने वर्ताववाने प्रयत्न करवानी अवश्य अगत्यछे.

संवत् १९४२ भाद्रशुद्ध ४ रवीवार.

प्रकरण ५ मुं.

विधवा स्त्रियोना धर्म.

आपणे पाछला व्याख्यानमां सुवासणी अथवा पतिवाळी स्त्रियोना धर्मनी सुचना आपी, हवे वि-

धवा अथवा जेनो पति मृत्यु पामेलो होय एवि अने जेने पति प्रत्ये सत्य अने अतुल्य प्रिति अने स्नेहना योगे पतिना मृत्यु पछी सघळा विषयभोगनी इच्छा अथवा त्रष्णा अंतरमांथी समुळ नाश पामेली होय, एवी विधवा स्त्रियोना धर्मनो विचार करीये.

आपणे पुर्वे जणाव्या प्रमाणे जेवी रीते कन्या अथवा बाळकीने लग्न थयानी पुर्वे निर्गुण भक्ष, पान, अने पेहेरवाने सादा वस्त्र तथा सुवाने प्रथवि उपर सादी पथारी वीगेरेनी अगत्य जणावी तेवीज रीते जेनो स्वामी अथवा पति मृत्यु पामेलो होय एवीं सत्य धर्मशीळ विधवा स्त्रियोये पण निर्गुण भक्ष, पान, एटले चोखा, जव, नागली, अने जुआर विगेरे अंन तथा पीवामां मात्र निर्मळ जळ अथवा पाणीनोज उपयोग करवो. अने पेहेरवाने पोतानुं कोइ पण अंग नहीं देखाय एवा अने अल्प मुलवाळा वस्त्र पेहेरवा, अने सुवाने पोतानी पथारी घणी नरम नही एवी अने सादी पृथवी अथवा जमीन उपरज करवी पण खाटलो अथवा कोइपण जातनो ढोलीयो विगेरे उची वस्तु उपर सुवुं नही, विधवा स्त्रियोये पाछळ कहेला सघळा सुवामणी स्त्रिना नीतिवाळा धर्म प्रमाणे तो चालवुं पण ते शीवाये तेमणे केवी रीतना विशेप धर्मो राखवानी अगत्य छे एनो विचार आ प्रसंगे करीये.

तेमणे निद्रा पांच अथवा छ कलाक अथवा वे पो-

होरथी अधीक करवी नही अने प्रातःकाळमां सूर्य उदय थवानी अगाउ मुखमार्जन, अने बाह्यशौच, एटले दातणपाणी अथवा मळ शुद्धि कर्या पछी, स्नान करवुं. अने एकांत स्थानमां देव विगेरेनी प्रतिमा सानिध्य अथवा मतःह जे प्रमाणे निश्चात्मक बुद्धि-ज्ञान होय ते प्रमाणे अंतरना सर्व विकार अथवा अ-मंगळ कल्पनाथी मुक्त थइ, धार्मिक कर्म अने उपा-सना पोतानी वृत्ति.केवळ स्थिर होय, त्यांसुधी कर-वी.पछी पोताना घरनुं कामकाज अथवा पुत्रपुत्रादिक अने पोताना समिप सबंधिनी संभाळ अने रसोइ वी-गेरेनुं सर्व कार्य उत्तम रीते प्रितिपुर्वक पोतानुं कर्तव्य जाणी यथास्थित कर्या पछी, निति विगरेना शुभ उपदेश पोताना संबंधवाळा बाळक अने बाळकीओने आपवामां पोतानो बाकीनो काळक्षेप करवो.

१ विधवा एवी जे स्त्रिओ तेमणे निरंतर इश्वर संबंधि कल्पना, करवानो अभ्यास राखवो, अने बुद्धिज्ञाननी उन्नतिने पामेली एवी जे विधवा स्त्रियो तेमणे तो निरंतर आत्मस्वरुपमांज निमग्न रहेवुं; अने व्यवहार अने विषय संबंधी कल्पना अथवा विचार कदीपण मनमां उत्पन थवा देवा नहीं. अने पोताना योग्य विवेकी अने सनातन धर्म संमत एवा पिता, माता, पुत्र, अने संबंधीओने खेद थाय एवी रीते वर्तवुं नहीं, अने पोते जे शुभ कर्म अथवा कार्यो करे, तेमां तेमना अभिप्राय अवश्य लेवा जोइये.

२ वळी विधवा स्त्रिओये पोताना समीप सगा-संबंधी शीवायना जे युवावस्थावाळा पुरुष तेमनी साथे विना कारण बोलवानो अने एकांत प्रसंग करवानो अभ्यास राखवो नहीं अने तेमने स्पर्ष पण करवो नहीं, हास्य विनोदादिकनो त्याग करवो. अने पारके घेर बेसवा उठवानो विना कारण प्रसंग राखवो नहीं. ते शीवाय विषय उत्तेजक, भजन, कीरतन विगेरे गावा नहीं, अने सांभळवा पण नहीं. पण त्याग अने वैराग्यना भजन कीरतन गावा अने सांभळवानो अभ्यास राखवो.

३ विधवा स्त्रिओये, पोताना समिप सगासंबंधी शीवायना पुरुष पासेथी विद्यापण नज भणवी अने पोताना देहनी, आरोग्यता राखी व्रत उपवासादीक कर्मो करी बाह्य इन्द्रिओनुं दमन करवुं तेमज मन, बुद्धि, चित, अने अहंकार आदिक अंत्तर इन्द्रिओनुं दमन करवानो अभ्यास राखवो.

४ विधवा स्त्रिओये, पोताना पोषणथी अधिक द्रव्य होय तोज, तेमांथी कोइ योग्य अने पात्र होय तेने दान धर्म करवुं. पण पोताना मर्ण पर्यंत चाले एटलु धन, धान्यादिक होय तो तेमांथी दान धर्म पण कोइ प्रसंगे नज करवुं.

५ वळी सुपात्र एवी जे विधवा स्त्रियो, तेमणे मिताहार बने तो एकजवार करवो अने मैथुनासक्त एवा पशु पक्षी आदिक जीव तेमने पण जाणी

जोइने जोवा नहीं.

६ धर्मजीज्ञासु एवी जे विधवा स्त्रियो तेमणे सुवासणी स्त्रियोना वस्त्र आभुषण पेहेरवा नहीं, अने सुवासणीनो वेश नज धारवो तेमज वेरागण, अने सन्यासणी जेवा पोताना कुळ अने आचार अथवा पद्धतीने विरुध वेश कदी पण धारवो नहीं.

७ सनातन धर्म संपन विधवा स्त्रिओये विषय लंपट अने गर्भ पाडनारी जे, पापी स्त्रिओ तेमनो संग क्यारे पण करवो नहीं, अने तेमनी साथे भाषण पण कोइ प्रसंग करवुं नहीं. ते शीवाय देव अने पुरुषादिकना रसश्रृंगार संबंधी जे वार्ता ते क्यारे पण करवी नहीं अने सांभळवी पण नहीं.

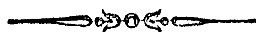
८ वळी युवावस्थावाळी अने सनातन धर्म संपन एवी जे स्त्रिओ तेमणे जुवान अवस्थावाळा, पोताना सगा संबंधी होय, तेमनी साथे पण कांइ अवश्यना कार्य शिवाय अथवा आपतकाळ वगर सेहेज स्वभावे एकांत स्थानमां रेहेवुं नही. अने ठठा मश्करी करवा नहीं.

९ सत्य धर्मवाळी सघळी स्त्रिओये होळीनी रमत रमवी नहीं, अने विधवा स्त्रिओये आभुषणादीकनुं धारण कोइ समये पण नज करवुं तेमज सुवर्णादिक तारे युक्त एवा अमुल्य अने जीणावस्त्रनुं पण विधवा स्त्रिओये धारण विवाइ आदीक प्रसंगे पण नज करवुं.

१० वळी धर्मशीळ एवी जे सुवासणी अने विधवा स्त्रियो, तेमणे रजस्वळाना समये ओछामां-ओछा त्रणदीवस सुधी वस्त्रादीक कोइ पण पदार्थने अने कोइ पण मनुष्यने अडवुं नहीं. अने निरंतर स्नानादीक क्रिया करवाना समये वस्त्र पेहेर्या विना नाहावु नहीं. अने रजस्वळापणु कोइ पण प्रसंगे गुप्त राखवुं नहीं.

एवी रीते सनातन धर्म संपन• सधवा अने विधवा स्त्रिओये द्रढ आग्रहथी, सामान्य धर्म प्रमाणे वर्तवुं. अने उत्तम प्राचिनकाळनी निति अने आत्मज्ञाननी उन्नति करवानो अभ्यास निरंतर राखवो; अने तेम कर्ता कर्ता विपइ कल्पनानो स्वप्नावस्थामां पण संपुर्ण नाश थयो एटले, सुबोध पत्रिकाना उत्तरार्धमां योग विद्याना विद्यार्थिने जे अध्यन,श्रवण, अने मनन करवानुं कह्युं छे. ते करी तेनो निदिध्यामर्ण पर्यंत कर्याथी पुनर्पि जन्म मर्णथी मुक्त थइ उत्तम आत्मज्ञानीने जे कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थायछे तेज स्त्रिओने पण निश्चय थशे.

संवत् १९४२ भाद्रशुद्ध १५ रवीवार.



प्रकरण ६ ठुं.

प्राचिन तिर्थना स्थानमां रहेला गुह्य हेतुओ.

शुभ संस्कार थइ, निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्यनुं सत्य ज्ञान मेळव्या पछी, तथा महा अद्भुत, अलौकीक अने चमत्कारी लाभ मेळवी, अखंड अने अविनाषी सुख प्राप्त करवानी इच्छा राखनारा जे आग्रही श्रोताजन हशे तेमना लक्षमां तो हशे जे, पाछला पांच प्रकरणमां सधवा अने विधवा ए बेउ स्त्रिओना मुख्य विशेष धर्मनुं व्याख्यान थयेलुं छे. ते उपर सत्य प्रेमे श्रद्धा राखी स्त्रियो वर्तशे तो प्रापंचिक अथवा घरनी उत्तम स्थिति थइ, पोताना कुटुंबमां सत्य प्रेम अने स्नेहनी वृद्धि थयाथी, क्लेष अने कलहनो समुळ नाष थइ, अंते सामाजीक अथवा न्यात जात विगरेमां पण सत्य कीर्ती थइ, सघळाने सत्य लाभ थइ शकशे.

पाछला सघळा व्याख्याननुं मनपूर्वक मनन, अने निदीध्यासन करेला धर्म जीज्ञासु, स्त्रि अने पुरुष ए बेउना बुद्धिज्ञाननी अधिक उन्नति थइ सत्य विद्या ग्रहण करवाने अधिक संस्कारी थवाना विषयोनुं व्याख्यान हवे पछी थशे. तेमां प्रथम आ प्रसंगे सनातन धर्म सम्पन अने बुद्धि ज्ञाननी उन्नति थवानी इच्छा राखनारा स्त्रि पुरुषोने आपणा पुर्वेना

पवित्र गणायला स्थानमां जइ तिर्थ अने यात्रा करवानो शुं हेतु छे, अने तेमां गुह्य मर्म शुं रह्यो छे, तेनो अल्प विचार कर्याथी सुज्ञ श्रोताजनोने कांइ पण लाभ थइ शकशे.

भरतखंडना घणुंकरी सघळा स्त्रि अने पुरुषो, तेमां बुध अने जैन्य सुधां एवुं समजे छे जे, प्राचिन अथवा अर्वाचिन काळना महान, रुषी, मुनी अने महा पुरुषोये जे स्थानमां देवालय विगरे बांधेला छे तथा तेमां जे देवोनी स्थापना करेली मुर्ति विगरे छे. तेनां दर्पण कर्याथी, अति मोटुं पुन्य थाय छे. तेथी घणां स्त्रि पुरुषो अनेक प्रकारनां कष्ट सहन करी तथा द्रव्यादिकनो खर्च करी त्यां जइ दर्पण करे छे अने तेवा पवित्र गणायला स्थानमां मृत्यु पाम्याथी मोक्ष थाय छे एवुं पण केटलाएक समजे छे परंतु तेवा पवित्र स्थानना देवालय विगरेमां जे सत्य गुप्त अर्थ रहेलो छे ते हालना धर्म भोळा समजी शकता नथी. ते माटे हालना समयना सनातन धर्म संपन धर्म जीज्ञासुजनो जेनुं मानसिक ज्ञान उन्नतिने पामेलुं छे, अने जेनी निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति करवानी इच्छा छे, तेमने आ प्रसंगे अल्प सुचना आपवाथी निश्चय कांइक लाभ थशे.

प्रथम एटलुं केवानुं अगत्यनुं छे के, जेटला प्राचिन तिर्थ अने यात्रानां स्थानो छे त्यां प्राचिनकाळमां योगी, मुनी, अने महापुरुषोनो घणो निवास

हतो, तेथी त्यां ब्रह्म विद्या, अने योगविद्या विगरे निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननुं अध्यन, मनन, अने निदिध्यास करवानो अभ्यास हतो तेथी त्यां केवळ शुद्ध अने निर्मळ परमाणुओनो आधिक संग्रह थयाने लिधे, त्यां जनारा मुमुक्षुजनोना अंतःकरण अधिक निर्मळ थइ, परम सत्य शांति वार्ति सनातन धर्मनी मर्यादामां रही, उपर कहेली सत्य विद्यानुं श्रवण, अने मनन करनारां स्त्रि पुरुषोने प्रिती थती हती. परंतु तेवा प्राचिन काळना त्रिकाळज्ञानी योगेश्वरोना जाणवामां हतुं जे, आगळ विप्रितकाळने लीधे पवित्र स्थान मदांध अने घातकी पुरुषोथी भ्रष्ट थशे एटलुंज नहीं पण तेवि सत्य विद्यानां पुस्तकोनो पण घणो नाष थशे, एम जाणी तेवा पवित्र स्थानना देवालयो अने तेमां स्थापन करेली मुर्त्ति विगेरेमांजे गुह्यार्थ राखेला तेनो अज्ञानी धुर्त अने घातकी पुरुषथी लय नहीं थतां उत्तम निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नतीने पामेला अने योग विद्या आदिक गुप्त विद्याना विद्यार्थि, अने योगीओने अति प्राचिन काळनुं सत्य ज्ञान रही शके, एवी नीशानीयो करी राखेली छे. पवित्र स्थानमां रहेलुं गुप्त सत्य ज्ञान समजवाने योग्य संस्कारी स्त्रि पुरुषो केवां होवां जोइये ते श्रीमत शंक्राचार्ये दर्शावेलुंछे.

श्लोकः दुर्लभं त्रयमेवै तत् देवानुग्रह हेतुकं ।
मुमुक्षत्वं, मनुष्यत्वं नही पुरुष संश्रयः ॥

एटले पुर्वेना शुभ कर्मवाळा, अथवा मुमुक्षु मनुष्यपणु एटले जेनामां पशुना गुणो नथी एवा अने मात्र मोक्षनी इच्छावाळा, एटलाज संस्कारी केहवाय छे. अने ए त्रणे गुणो प्राप्त थवा अति कठण छे. अने ते प्राप्त थवा मारु देव अथवा महापुरुषना अनुग्रहनी पण अगत्य छे.

हवे पवित्र यात्राना स्थानमां अति प्रख्यात जे काशीनुं स्थान तेमां शु गुह्यार्थ रहेलोछे. तेनो प्रथम विचार करीये.

सत्य ज्ञानानंद तिर्थयती नामना अमुल्य ग्रंथमां एक समर्थ योगीये एवुं कह्युंछे जे काशी ए महेश्वर अथवा परब्रह्मनी एक महाशक्ति छे. शिव एटले अक्षय आनंद अथवा प्रज्ञा जे के ब्रह्मांडनी गर्भरुप स्थिति दर्शावेछे, अने तेने चिदाकाश अथवा व्योम पण कहेछे, अने ते ओंकार प्रणव उपर जे अनुस्वार छे ते दर्शावेछे. वळी मनुष्य प्राणीना चक्षुना भवां उपर जे जे शक्ति रहेलीछे, ते अर्धचंद्राकारना उपर जे, अनुस्वार छे, तेनी साथे तेनो संबंधछे. अने ते योगीयो यथार्थ रीते समजेछे. वळी श्रिमंत शंकाचार्य आनंद लेहेरी नामना ग्रंथमां काशी ते महा विज्ञानमय अने सच्चिदानंद शक्ति कहीछे. ते शक्ति हरी, हर, अने विरंन्चि पण कही छे. हरी अथवा विष्णुने ब्रह्मांडनी स्वप्नावस्था कहीछे, अने हर एटले ब्रह्मांडनी उत्पत्ति काळनो प्रथम तम अथवा अंधका-

रनो नाश कर्ता कह्यो छे, अने ए पद शीवने आपेलुं छे. तिर्थयतिमां श्रष्टिनी अनवचनीय स्थितिनो प्रकाश करनार शीव कह्याछे. अने ते स्वप्नावस्थानी आगळनी तुर्यावस्थानी स्थिति छे. शिवने पर नीर्वाण पण कह्याछे अने हरीने नीर्वाण कह्याछे. हरी तेज आत्मा अने ते पोतानी प्रथम हिरण्यगर्भनी स्थिति जाणनार छे. हवे विरंन्चि अथवा ब्रह्माने उत्पत्ति कर्ता कह्याछे, ते श्रष्टिनी द्रश्यास्थितिनो जाणनार आत्माज छे. ए उपरथी शक्ति ए त्रणेनी उपर छे. अने ते उपर कहेला शिवनी अर्धांगना केहेवायलीछे. एज कारणने लीधे काशिने त्रिपुराध्वि कहेली छे. एटले उपर कहेली त्रणे स्थितिनो लय करनार पुरुषनुं पवीत्र स्थानछे. हवे पिंडब्रह्मांडमां मनुष्य जीवात्माना त्रण पुर ते, स्थुळ सुक्ष्म अने कारण ए त्रण देहछे. तेनी पेली तरफ आत्माछे. ए उपरथी स्पष्ट जणाय छे जे, काशि ते अनादि चित्त यात्राछे.वळी काशीने एक रीते प्रज्ञा कहीछे. एटले तत्वमसी दर्शावेछे. एटले त तुं छ. अने ते प्रज्ञाने मुक्तिनी माता अथवा मोक्ष एवुं उत्तम वेदांती कहेछे. वळी तिर्थयतिमां एवुं कह्युंछे जे, काशीनी कृपाथी हुं शीव थयो छु अने एज शीव सर्व वस्तुनो भुतात्मा अथवा अंत्तर आत्माछे. एज काशीने हुं प्रणाम करुछं. ए काशी प्रज्ञाद्दष्टि अने शक्ति अथवा मायाछे. ए श्रष्टिमां सर्व व्यापिक इश्वरी अलौकिक शक्तिना प्रथक प्रथक

नामो आपेला छे. परंतु वास्तविक जोतां ते एकज आत्मानी एकज स्थिति छे. वळी उपर कहेला योगीनुं एवुं कहेवुं छे जे ए काशी शिवनी शक्ति छतां तेथी भिन्न नथी. माटे जे सर्वोपरी अखंड अने अविनाशी सुख अने आनंदछे तेज शीव अथवा काशीछे.

काशी शब्दथी आत्मानी सत्यतानो बोध थाय छे. ते जाते सत्य ज्ञान छे. अथवा सत्य ज्ञान तेमां रहेलुंछे. ते चिन्ह मात्र छे.ते माटे अति उत्तम जे विज्ञान तेने हुं नमस्कार करुछुं. वळी कोइ ठेकाणे काशीने श्यामा एटले तम अथवा अंधकार पण कहीछे एटले ब्रह्मांडनी मुळ व्यक्त प्रकृति जेनी पेली तरफ सुवर्ण वाळो आत्मा रहेलो छे. अने तेनी आसपास तम विटलाइ रहेलुं छे; ए यथार्थ अनुभवथी समजाय छे.

हवे आपणे बुद्धिना संबंधमां काशीनो विचार करीये. एटलुं लक्षमां राखवानुं अगत्यनुंछे जे, बुद्धि ए प्रकृतीनुं प्रथम द्रश्य कार्यछे. कपिलमुनीना सिद्धांतमां बुद्धिने मध्यायवसाय कहेछे एटले प्रकृतीनो स्वभाविक गुण जे अहंकार उत्पन करवानो ते छे. बुद्धिनी त्रण स्थिति अथवा प्रकारछे. तेनी पोतानी अगत्यनी निर्मळ स्थितिमां ते प्रकृती रूपजछे. एटले ए बेउमां अभेदछे. तेमां सत्व, रज, अने तम ए त्रण गुणो स्थाइ रहेला छे. परंतु ए त्रणे ज्यारे साम्यावस्थामां रहेला होय छे, त्यारे तेनी उत्पति नथी. ज्यारे बुद्धि रजोगुणनी सत्तामां होइने, सत्वगुण प-

धानपणे वर्ते त्यारे धर्म, वैराग्य, ऐश्वर्य, अथवा सत्ता, अने मोक्ष ए चारे वस्तुनी उन्नतिनो अभ्यास करवानी वृत्ति थायछे. ज्यारे सारा अथवा उत्तम प्रवाहनी अपरीमित वृत्ति थायछे त्यारे बुद्धि पोतानी मुळ निर्मळतामां पाछी समाइ जायछे. पण ज्यारे तमोगुणनी कांइक सत्ता प्रधानपणे वर्ते त्यारे, उपर कही तेथी उलटी चार स्थिति अथवा वृत्ति उत्पन थायछे. तमोगुण पोतानी आवरण शक्तिने लीधे सघळी श्रष्टि, द्रश्य प्रक्रतीनी सत्य बनेली श्रष्टि छे एवो सिद्धांत करावेछे. अने तेनी सत्तामां आवेलो रजोगुण विशेष अथवा चलीत मानासिक ज्ञानना योगे अनेक जातनी त्रणाना विकार उत्पन करेछे. अने तेज मोक्षना कार्यमां बंधन रूप थायछे. अने ज्यारे अक्रत अने केवळ शुद्ध बुद्धि वर्ते त्यारे निर्विरोष केहेवाय छे. अने ज्यारे सत्वगुण प्रधानपणे वर्ते त्यारे निर्मळ बुद्धि थायछे ज्यारे तमोगुण प्रधानपणे वर्ते तारे जडबुद्धि कहेवायछे ए त्रणे स्थितिने तिर्थयतिमां काशीनी उपमा आपेलीछे. ए उपरथी स्पष्ट जणायछे जे अल्प ज्ञानी धर्म भोळा तमोगुणनी सत्ताने लीधे काशीने बीजा पुर अथवा नगरोना जेवुं एक सत्य नगर समजेछे. माटे सत्य शास्त्रमां "दोत्ररुपाजडाकाशा" एवुं कह्युं छे. हवे शुद्ध कल्पनाने लीधे जे शुद्ध काशी समजायलीछे तेमां पण कोइ जातना रूपोनी मर्यादा रहेलीछे. तेने माटे एवु

પ્રમાણછે જે—

શ્લોકઃ॥મુર્તિ રૂપાતુ યાકાશી શુદ્ધ સચ્ચિન્મયો સતી॥

એટલે જે સત્વગુણની સત્તામાં રહી સદગુણનાં વૃદ્ધિ કરે છે તેને પણ પોતાની આસપાસની શ્રષ્ટિમાં શુભ અને અશુભની કલ્પનાઓ રહેલી છે.

પરંતુ જ્યારે કાશીને ઉત્તમજ્ઞાની નિર્વિશેષ સ્થિતિમાં સમજેછે ત્યારેજ તેનો સત્ય મહીમા સમજાય છે તેને વિશે એવું કહ્યું છે.

શ્લોકઃ॥ પુરીરૂપા સ્વમાહાત્મ્યં સ્વયમેવ વિચારયેત ॥
નિર્વિશેષાંતુ મુક્તાનાં શિવસ્ય પરાગતિ ॥

એટલે નિર્વિશેષ સ્થિતિમાં "કાશી પોતે સત્ય મહિમા રૂપ છે" એટલે તે શિવ અથવા 'મુક્તોનું' અંતે આવરણ રહીત આત્માનું મોક્ષનું પરમ ઉત્તમ ઐશ્વર્ય છે, એટલું કહી એ વિષય આજ બંધ કરીયે છઇએ પણ એ વિષે બાકી રહેલી અધિક અગત્યની સુચના આવતા પ્રસંગે કરીશું.

સંવત ૧૯૪૨ ના ભાદ્ર વદ્ય ૧૪ રવીવાર.



પ્રકરણ ૭ મું.

પ્રાચિન તિર્થના સ્થાનમાં રહેલા ગુહ્યાર્થ.

પાછલા વ્યાખ્યાનમાં તીર્થ અથવા પ્રાચિનકા-

ळना पवीत्र स्थान विशे जे अल्प सुचना करी ते सत्यशोधक अने विवेकी श्रोताजनना लक्षमां हशे. हवे एनाज संबंधमां शास्त्रमां एवा वचनछे जे--

अन्यक्षेत्रे कृतं पाप तिर्थ क्षेत्रे विनश्यति।
तिर्थ क्षेत्रे कृतं पाप वज्रलेपन भविश्यति॥

एटले तीर्थ विनाना अन्यस्थानमां जे पाप थाय छे, तेनो तिर्थमां गयाथी लय थायछे पण जे पाप तीर्थमां थायछे, ते वज्र लेप थायछे. एनो गुह्यार्थ भाविक भोळापण अल्प ज्ञानी नहीं समजता मात्र एटलुज समजेछे के, कोइपण पवित्र स्थानमां मात्र गयाथी पूर्वे कीधेला पापनो नाश थायछे. एम समजे छे, माटे केटलाएक स्वार्थि अने अपरीमीत तृष्णावाळा स्त्रिपुरुषो तीर्थ यात्रा कर्ता छता कपट छळभेद अने अयोग्य विषयभोग करवाने किंचितमात्र पोताना साधारण ज्ञाननो उपयोग करता नथी. एवीपे आ प्रसंग अधिक समय नहीं काहाडतां, उपला श्लोकमां गुह्यार्थ केवो रहेलोछे. तेनो विचार करीये.

सर्वथी मोहोटुं पाप आत्म हत्यानुंछे. एटले जे पापो इन्द्रि विगेरेने स्वाधिन थयाथी अज्ञानपणामां थाय छे तेनोतो नाश कोइ पण दीवशे थइ शके छे, परंतु जे स्त्रिपुरुष पोताना स्थुळ देहरुप तीर्थना स्थानमां रही नीति अनीति सत्य, असत्य अने धर्म, अधर्म विगेरे समजतां छतां पाप करेछे; ते वज्र लेप थायछे. तेमां पण मुख्यत्वे करी जे स्त्रिपुरुषो

जाणी जोइने, मंत्र शास्त्र अथवा वाम प्रयोग करी, पोतानी अपरीमित त्रष्णा पुर्ण करवाने, मर्णपर्यंत प्रयत्न करेछे; ते आत्महत्यारा केहेवायछे. अने तेमने यमपुरीना स्थानमां अति दारूण कष्ट सुक्ष्म देहथी घणाकाळ सुधी भोगववा पडेछे. ए माटे आपणे पाछळ कहेला तिर्थयति नामना अमुल्य ग्रंथमां एवुं कह्युं छे के, जे मनुष्य देहरूप काशीमां रही, पाप करेछे ते अति कठण छे केमजे, बीजा ठेकाणा करतां शुक्षदेहमां पिशाच योनी प्राप्त थयाथी अति मोटुं कष्ट सहन करवुं पडेछे. ते माटे सत्य आत्मज्ञान प्राप्त थयाथी क्रियमाण विगरे अल्प पापो चिदाग्निकुंडमां लय पामे छे. परंतु जे मनुश्य मंत्र शास्त्र अथवा वाम प्रयोगथी पोताना जीवात्मानो नाष करवा इछे छे. तेना पापना निवारणनुं कांइ पण प्रायश्चित नथी.

हवे काशी वीगरे जे अति प्राचिन तिर्थना स्थान छे, तेमां धातू अने पाषाणादिक देवोनी प्रतिमा तथा त्यांना देवालयो उपर केटलीएक गुह्य निशानी यो छे. ते उपरथी उत्तम संस्कारी सत्य ज्ञाननी इच्छा राखनारा शिश्य अथवा चेला विगरेने जे, अति गुह्य ज्ञान मळेछे ते, बीजा ग्रंथोथी मळी शकतुं नथी तेमां चिदांमबरम नामना पवित्र स्थळमां जे देवळ योगेश्वर पतंजळीए बांधेलुं छे. त्यां अति जाणवा जोग गुह्यार्थनी नीशानीयो छे. ए मात्र मनन अने निदिध्यासथी जणाइ शके छे.

अवे आ प्रसंगे भेळा थयेला मुमुक्षु श्रोताजनने तिर्थना स्थान विषे गुह्यार्थनो अधिक स्पष्टार्थ समजवा सारु, आपणा शास्त्रमां जे मुख्य सप्त पवित्र तिर्थनां स्थान गणेलां छे तेना गुह्यार्थनो स्पष्टार्थ कर्याथी अधिक लाभ थशे. ते पवित्र स्थानमां १ अयोध्या, २ मथुरां, ३ मया, ४ काशी, ५ कांचि, (कंजीवरम) ६ अवंतिका, (उज्जन) अने ७ द्वारका, ए सप्त स्थान आपणा स्थुल देहमां जे सप्त भूमीका छे. तेमां प्रथम सहाश्रन, २ अजिय, ३ विशुद्धि, ४ अनहतम, ५ स्वाधिस्थानम, ६ मणिपुरकम अने सातमु मुळाधरम ए सप्त भूमीकानो स्पष्टार्थ योगीओये जे महा शक्तिना स्थान देहमां दर्षावेला छे, तेनुं ज्ञान थवाथी, यथार्थ रीते समजी शकाशे. हवे साधारण अल्प ज्ञानी अने भोळा भक्तोना समजवामां एवुं छे जे, काशीमां रही मृत्यु पाम्याथी मोक्षनी प्राप्ती थाय छे. एवुं समजी केटलाएक पोताना घर अने सगा कुटंबी वीगरेनो त्याग करी काशीमां मर्ण पर्यंत नीवास करेछे ए वात तार्किक ज्ञानीने हसवा जेवी लागेछे खरी परंतु आपणे पाछळ कह्या प्रमाणे काशी एटले स्थूळ शरीरमां रहेलुं अंतःकर्ण अने तेमां रहेली सप्त भूमीका एमां वृतिओनो नीवास करवाथी निश्चय मोक्षनी प्राप्ती थाय छे. ते केवी रीते एनो विचार करीये.

आपणा स्थुळ शरीरमां जे अंतःकर्ण छे, ते

काशी, अने तेना मध्य भागमां योगीओनुं अनहत चक्र रहेलुं छे. एनी सत्यतानी पुष्टि एवी रीतेथाय छे जे, केटलाएक नीत्य संकल्पो ब्राह्मणो करेछे तेमां एवुं कह्युं छे जे काशी ए अशि अने वरुण ए बेनी वचे छे एटले काशी आनंद वनमां छे अने गौरीनी सामा छे. अने तेने शिवना त्रीशुळनी सहायता छे अने ते काशी ब्रह्म नळमां छे अने उत्तरे जतां ते मणिकर्णिका अथवा प्रणव कर्णिकाना छेडा आगळ छे. हवे ए अलंकारनो योगीना अनहत चक्रनी साथे केटलो संबंध छे ए अल्पश्रमे समजाइ शकशे. ए अनहत चक्र इंडा अने पिंगळा ए बे नाडीयोनी वचे छे. अने तेनेज अशी अने वरुण ए बे नामना नाना प्रवाह कह्या छे ज्यारे योगी पोताना ज्ञानने प्रज्ञाना विजमां एकाग्र करेछे, त्यारें समाधीनी स्थिति बरोबर ओळखाइ शकाय छे. अने ते प्रज्ञा अनहत चक्रमां रहेली होयछे.अने एज उपरथी ए स्थानने काशी अथवा आनंद वन कह्युंछे. ए आनंद वनमां ज्यारे प्रज्ञानाना बीजमां जे ज्ञान रहेलुं छे तेनी एकाग्रता थइ एटले स्थुळ अने सुक्ष्म ए बेउ शरीरमां जे ज्ञाननो अनुभव थयलो होय छे तेनो संपूर्ण लय थाय छे ते समयनी स्थिति सुसुप्तिनी अवस्थाना जेवी होय छे. परंतु तेवी स्थितिमां जे समये संस्कार पामेला आत्माने, अंत्तर आत्मानी स्फुर्णाथी, आत्मज्ञान प्राप्त थाय छे. ते समये सर्वज्ञ इश्वर पोतेज

थाय छे. अने एज समय संपूर्ण आनंद अने शांतीनो छे. ते माटे काशी अथवा अनहत चक्र जेमां एवी स्थिति प्राप्त थाय छे. अने तेज स्थानमां मायावी जीव अने तेनी सघळी त्रष्णा तेनो नाश थाय छे अने प्रज्ञानी उत्तम स्थिति प्राप्त थयाथी, आत्मज्ञानना बळथी सघळी मायाना आवरणनो नाश थइ सर्वोपरी ऐश्वर्य प्रकाश तेनी सनमुख आव्याथी, गुह्यार्थमां रहेला अनेक देव अने देवीओनुं सत्य ज्ञान तेने ओळखाइ आवे छे. ते माटे एवुं जे स्थानकाशी अथवा अनहत चक्र तेने गौरीमुखम पण कह्युं छे.

संस्कार पामेला आत्माने जे, साधारण स्थितिमां समाधीनी स्थितिमां अने तेथी उपरना देवलोकनी स्थितिमां जे ज्ञान मळी शके छे, तेना अनुभवनुं ज्ञान उपर कहेली उत्तम प्रज्ञानी स्थितिमां होयछे. एटलुंज नहीं पण तेनुं नीराकरण पण ते करी शके छे.

उपर कहेली जे त्रण स्थितियो, ते अंतर प्रज्ञानी त्रण उत्पतीनी स्थिति छे, माटे ते शिवनुं त्रीशूळ पण केहेवाय छे.

वळी अनहत चक्रने शुशुम्ना नाडी कहेली छे. ए नाडी एक सांकडा मार्गे बरडानी घोरी नसमांथी जइ, मस्तकना अग्रभाग सुधी छे, अने तेमांथी चैतन्य वियुतनो प्रवाह वहे छे. ते माटे काशी तेज ब्रह्मनळ कहेवाय छे. ते शुशुम्ना नाडीनुं बीजुं नाम छे.

ए स्थिति ओं प्रणवना उपर जे अनुस्वार छे ते दर्शावे छे. माटे काशी मर्णीकर्णिका कहेवायली छे.

ए उपरथी स्पष्ट जणाशे जे काशी तेज योगीओनुं अनहत चक्र छे. ते माटे काशीमां मृत्यु एटले सघळी माइक कल्पनानो नाश थइ मुळ प्रज्ञामां आत्म ज्ञाननी एकाग्रता करवी एज छे. हवे सहश्रम ए प्रेरक शक्ती छे. अने मुळाधरम, ए ग्राहक शक्तिछे. ए बेउना अलौकिक सम्मीलनथी अनहत चक्रमां महा शक्तिवान अनहत नाद उत्पन्न थाय छे ए नाद, जे समये मृत्यु जेवी सुसुप्ति अवस्था प्राप्त थाय छे, ते समये अने ज्यारे सघळा ब्रह्म ज्ञाननो लय थाय छे. ते समये, संभळाय छे. अने तेमांथी संस्कार पामेली आत्माना स्वरूपनी उत्पति थाय छे. एटले ज्यारे उपर कहेली काशीमां मायावी जीवनुं मृत्यु थाय छे ते समये आत्मानुं सत्य ज्ञान प्राप्त थइ, आत्मा मोक्षनी प्राप्ती मेळवी शके छे.

आ उपरथी अंतनी सूचना एटली आपवानीछे जे, जेटलां बाहारनां प्रसिद्ध यात्रानां स्थान छे. ते सघळानो भावार्थ तीर्थ यात्रा करी अंते मोक्षनां कार्यो सारु पोताना पींड ब्रह्मांडमांज कल्पेलां छे. माटे बुद्धिज्ञाननी उन्नति पामेलां मनुष्यो एवां स्थान जोवाथी, तेमना अंतर स्थाननी सत्य स्म्रती आवी एकाग्रता करवामां अती उपयोगी पडे छे अने तेवां स्थानमां कोइ समय सत्य योगीओना समागमनो पण

लाभ थवानो संभव होय छे. अने एज यात्रानुं सत्य फळ छे.

संवत् १९४२ना आश्विन शुद्ध ६ ने रवीवार.



प्रकरण ८ मुं.

गुप्तविद्या प्राप्त करवानी सूचना.

आपणे सनातन धर्म अने अधर्मनी मर्यादामां रेहेनारा अने मानसीक ज्ञाननी योग्य उन्नतीने पामेला ब्रह्म जीज्ञासुजनोने निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नती करी गुप्त विद्या समजवाना साधनानो केटलो एक वीचार सुबोध पत्रीकाना उत्तरार्थमां करेलोछे. तेनी द्रढता अने स्मृती जे श्रोताजनने हशे तेने अल्प श्रमे आ विषयो यथार्थ समजी शकाशे.

जेना आत्म ज्ञाननी कांई पण उन्नती थयेलीछे तेने आ विषय उपर प्रिती थइ, ते गुप्त विद्या मेळववा अति आग्रहथी प्रयत्न करशे. तेने सारु शुभ संस्कारथी चैतन्य आत्मानी स्फुर्णा अंत्तरमांथी स्वभाविक रीते आपो आप थवानी मुख्य अगत्यछे.

घणु करी सघळा विवेकी स्त्रिपुरुषोना जाणवामां छे जे, जे मनुष्य सत्य ज्ञान मेळववाना साधनो प्रिति पुर्वक कर्या करेछे. अने जो आपणी सत्यज्ञान मेळववानी इच्छा संपुर्ण रीते द्रढ थयेलीछे तो आपणे अकस्मात गुप्त रीते केवळ सत्यना अने अंत्तर

आत्मना प्रकाशना कीरणो जणाववा मांडेछे. अने आपणी मनोवृत्ति संपुर्ण रीते तेनी तरफ गइ एटले, आपणी आसपास जे अति सुक्ष्म शक्तिओनो समोह रहेलोछे, तेना योगे उपर कहेला सत्य ज्ञानना परमाणुओ ग्रहण करवा तरफ आपणु लक्ष जाय छे; अने जे प्रमाणे ते सत्य ज्ञान मेळववाने आपणे योग्य थता जइए छइए, ते प्रमाणे परमकृपाळु सत्गुरु जे प्रमाणे पोताना अधिकारी शीष्य अथवा चेलाने ते सत्य ज्ञान मेळववाने सहाय करेछे, ते प्रमाणे आपणी आग्रहवाळी श्रद्धा जाणी आपणे पण साहाय करशे. परंतु आपणा जाणवामां छे जे, ज्यां सुधी आपणु नाम, आपणी सत्य गुह्य विद्या मेळववाने योग्यता, आपणी वर्तणुक, अने चैतन्य ज्ञान मेळववानी निर्मळ इच्छा, परमकृपाळु योगेश्वरने जणाइ नथी त्यां सुधी, आपणे तेवा वर्गमां सामीलन थइ शकता नथी.

घणाखराने एवा प्रश्न उत्पन थाय छे जे, योगादीक अति गुह्य अने गुप्त विद्या मेळववाने कीये मार्गे अने कीया साधन करवानी अगत्य छे. एवा प्रश्नोनो यथार्थ उत्तर परमकृपाळु योगीयोज आपी शकेछे. परंतु ए विषे कांइक अगत्यनी सुचना जे आपणा जाणवामां छे. ते आ प्रसंगे प्रसिद्ध कर्याथी मुमुक्ष अने आग्रही ब्रह्म जीज्ञासुजनोने कांइ पण लाभ थइ शकशे.

प्रथम मात्र सत्यतानेज सारु सत्य उपर अंतरनो सत्य प्रेम उत्पन थवो जोइये; ए सत्य प्रेम अंतरमां अति गुप्त अने आवरणथी ढंकायलो होय छे. तेने निर्मळ करवानी अगत्य छे. तेम थयाथी उपर कहेली सत्यताना परमाणुओनुं आकर्षण करवानी आपणने शक्ति आवे छे.

एवी रीते सत्यताना परमाणुओना संग्रहनी साथे अंतर द्रष्टिथी पोतानो आत्मा स्थित थवानो अभ्यास करी, बाहारनी विषयी द्रव्य आदिनांथी वृत्ति काहाडी पोतानी चैतन्य सनमुख वृत्ति राखी, पोतानी मनोवृत्तिने पोताना सत्य संकल्पमां द्रढ आग्रहथी राखवानी अवश्य अगत्य छे.

एवी रीते माया अथवा संसारना आवरणथी विरक्त थयाथी, शांती, स्थिरता, अने सत्व, रज, अने तम ए त्रीगुणनी साम्यावस्था थायछे अने तेवी साम्यावस्थानी स्थितिमां उत्तम सत्य समागम करो, तेवाज उत्तम ग्रंथनुं श्रवण, मनन, अने पाठ करवानो अभ्यास करवानो प्रत्येक दीवसे थोडो घणो नीयम राखवो. एम करी पोतानी केवळ स्वार्थ करी लेवानी वृत्तिनो त्याग करी, शत्रुता, द्वेष, मनुष्यप्राणीनो धिक्कार अथवा तुच्छकार विगेरे मनना सर्वे विकारोनो समुळ लय करवानी मनोवृत्ति राखवी. अने सर्वे मनुष्य प्राणी मात्रमां अंतःकर्णथी भ्रातृभाव राखवो एटलुंज नहीं पण सनातन धर्म संस्कारी पुरु-

धीमां प्रवर्तावदाने तन, मन, अने धनथी पण प्र-यत्न करवुं.

ए सघळु छतां कोइ पण जातनो भय राखो नहीं जोइये. अने भय नहिं राखवाथी जीवात्मा अति बळ-वान थायछे वळी मननी केवळ स्थिरता राखी कोइपण जातना संशय रहित थवुं. केमजे संशइ थवाथी धा-रेला कार्यनी सिद्धिमां मोहोटुं विघ्न आवी पडे छे. वळी एम निश्चय समजवु के, आपणी कल्पना अने आपणा शब्द ए बेउमां चैतन्य अथवा प्राण छे, अने तेथी श्रष्टि उत्पन थइ शके छे. अने ते आपणा सत्य कार्योनी अंतनी मर्यादासुधी उपयोगमां आवेछे.

वळी आपणे विद्यार्थि अने सत्य शोधक छइये एवुं समजी, निर्मानीपणे तेवा विद्यार्थि अने सत्य शोधक मनुष्यमांज निरंतर वर्तवानी अगत्यछे. वळी आपणे एवा विद्यार्थिमां परस्पर एक आत्मा रूपे वर्ति तेमां कोइ पण जातनी कठणता मनमां आववा देवी नहीं. कोइ समये सत्य मार्गे प्रयत्न कर्ता छतां ते असत्य अने मिथ्या जणाय तो उत्तम विवेकथी पोताना सत्य निश्चयथी द्रढता करी पोतानो प्रयत्न जारी राखवो. अने आत्म ज्ञानना प्रकाश थवाना मार्गमां मंदता कोइ दीवस थवा देवी नहीं. एवी रीते द्रढ आग्रहथी आपणाथी वर्ति शकाय त्यारेज, आपणे जे इच्छा राखीये तेनी सीद्धिनो संभव जाणवो.

वळी आपणे लक्षमां राखवानुं एटलुं अगत्यनुंछे

जे, परमकृपाळु सद्गुरुनी एवी आज्ञाछे के, जे आत्म ज्ञानमां बळिष्ट होय, तेणे बीजा निर्बळ विद्यार्थि, जेनी इच्छा सत्य मार्गे जवानी परीपुर्णछे, तेने साह्य करवी. एथी जे उलटी रीते चाली पोतेज केवळ स्वार्थी थइ, बीजाने नहीं गणकारे तो, ते अंते एकलो पडी जइ पोतानो करेलो श्रम घणी वखत मिथ्या जायछे.

एटलु सत्य समजवुं जे ज्यारे सत्य प्रकाश पामेली इन्द्रियो उपर चक्षु स्थिर थाय, त्यारे द्रढ आग्रहथी प्रयत्न जारी राखवो अने जे ठेकाणे परम उत्तम सत्यज्ञानना शब्दथी चर्चा थती होय त्यां, पोतानी कर्ण इंन्द्रिने जवा देवी ते छतां पोते एकलो रही कोइ पण मुमुक्षु विद्यार्थिनो समागम नहीं करी पोतपोताना सत्य विचारनुं मनन अने निदिध्यास करवानो प्रसंग नहीं राख्याथी, पोते गुचवाइ पडी सत्य उन्नति थवामां भारी विक्षेप आवी पडेछे. पोते अति त्वरा नहीं कर्ता, धिमे धिमे उन्नति कर्ता जइ, पोताना वर्गना विद्यार्थिने उचे चडवामां साह्य कर्या करवी. आपणी आगळ जे ए सत्य मार्गे गयेला छे, तेमनुं एवुं कहेवुंछे जे, संपुर्ण साम्यावस्था एजछे के, जे वस्तु आपणे शोधवानीछे, तेने सारु संपुर्ण एकाग्रता अने प्रबळ इच्छा शक्ति राखवी. अने तेथीज कार्यनी सिद्धि निश्चय थशे.

ए विषे केटला एकनुं कहेवु एवुंछे जे, ए कार्यनी सिद्धि सारु कीया ग्रंथ वांचवा अने सांभळवानी अ-

गयछे; केमजे साधारण मनुश्य एवुं समजेछे जे, मात्र उत्तम ज्ञानना ग्रंथो वांचवा अने तेनी कथा सांभळवाथीज पोताना आत्मानी अति उन्नति थइ. अंतना परीणामनी सिद्धि थायछे. ए वीशे आ प्रसंगे एटलुज केवानी अगत्यछे जे, भिन्न भिन्न मनुश्यनी भिन्न भिन्न मनोवृति होय छे, माटे तेमने तेवी तेवी रीते भिन्न भिन्न प्रकारना ज्ञाननी प्राप्ति थती जाय, तोज कांइ पण लाभ थाय. सघळाने समान मार्ग नथी जेम एक भोजन कोइने प्रिय होय; तेज बीजाने अप्रिय लागे छे. माटे जेनी जेटली बुद्धि उन्नतिने पामेली होय, ते प्रमाणमां तेने सत्य ज्ञान प्रिय अने अप्रिय लागे छे. ए सघळुं छता मुख्य अगत्यनुं तो एटलुंज छे जे, निश्चात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नती करवानी इच्छा प्रथम अंत्तरमांथी प्रगट थया पछी तेनो बाहार प्रकाश थवाथी, निश्चय परीणामनी सिद्धि थायछे. परंतु मात्र बाहारथी, जन्म पर्यंत उत्तम ज्ञाननी उत्तम कथा वार्ता वारंवार सांभळ्या करे पण अंत्तरमां तेनी असर कांइज नहीं थाय श्रवणथी मात्र कांइक शुभ संस्कार विना बीजो कांइपण लाभ थइ शकतो नथी, एवुं आपणे अनुभव उपरथी जणायछे; ते माटे आपणे आत्मानी उन्नती करवानो जे अभ्यास करवानो छे, तेमां प्रथम तद्रूप थवानी प्रथम द्रढ इच्छा उत्पन थवी जोइये, पछी तेनी साथे मानसिक ज्ञाननी पण यथार्थ उन्नति थवानी अगत्य

छे, अने तेवा सत्य शोधकने अंतरना अलौकिक प्रकाश तरफ जवाने, अंतरमांथी द्रढ स्फुर्णा थइ, तेनो प्रकाश बाहार नीकळवो जोइये, पण मात्र सत्य ज्ञाननी चर्चा करवामां अने पोताना अस्थिर विचारमांज डुबी जइ कांइ सांभळीए अथवा जोइए ते, सघळुं मिथ्या जायछे.

जे प्रमाणे आपणे पोताना जीवात्माने जाणता जइए, ते प्रमाणे आपणी सघळी इन्द्रियो उपर सत्ता राखता शीखवानो आपणो मुख्य धर्म समजी नीरंतर स्वार्थ रहित परमार्थ करी जेम बने तेम बीजानुं भलु अने तेने सुखी करवानी इच्छा प्रबळ करवाने प्रयत्न करवुं. अने तेम करवाथी आपणुं अंतःकरण नीर्मळ थइ तेमां निर्मळ परमाणुओनो अधिक संग्रह थवाथी आपणे जे सत्य मार्गे जवानी इच्छा राखीये छइये ते मार्गे जवामां विघ्न आववानो संभव घणोज थोडो थतो जशे. एटलेथी ए विषय अपुर्ण राखी आजना व्याख्याननी समाप्ति करीये छइये.

आश्विन शुद्ध १३ रवीवार संवत् १९४२

प्रकरण ९ मुं.

गुप्त विद्यानी सुचना.

आपणे पाछला व्याख्यानमां, ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये केवी इच्छानो त्याग करवो अने केवा प्रका-

रनी इच्छानी द्रढता करवी,एनी अल्प सुचना आपी छे; अने वळी एम पण जणावेलुं छे जे आग्रही विद्यार्थिये, पोताना सघळा विकार स्वाधिन राखी तेना उपर सत्ता बेसाड्या पछी, तेना आत्माने परम शांति थशे. अने संपुर्ण शांतीना समये, गुप्त प्रकाश जणाववा मांडशे. अने एम थयुं एटले ते विद्यार्थिये समजवुं जे, गुप्त विद्या जाणवानो सत्य मार्ग तेने जणाववा मांड्यो छे.

हवे आगळ ते आग्रही विद्यार्थिनी अधिक उन्नति थवाने केवी रीते वर्तवुं जोइये, तेनो विचार करीये. एमां ते विद्यार्थिने घणुं करी सुसुप्तिथी तुर्यावस्था सुधीमां जे फेरफार थाय छे, तेनी सुचना जणाववामां आवशे. ए उपरथी सजन ब्रह्म जीज्ञासुओये साधारण मनुष्यनी पेठे सुसुप्ति अवस्थाने स्वप्न विनानी घाढ नीन्द्रा समजवी नहीं. परंतु संपूर्ण शांतिथी प्रज्ञा एटले मुळना बीजमां सत्यज्ञान स्थुळ अने सुक्ष्म उपाधीमां व्याप्ति एटले स्फुर्णानो संपुर्ण निग्रह थएली जे पूर्ण आनंदमय स्थिति तेज ब्रह्म विद्यार्थिनी सुसुप्ति अवस्था छे, आत्मा संबंधी जे, अंतनुं गुह्यज्ञान अथवा आत्मानी अलोकीक महान शक्ति, तेवा संस्कार पाम्या शीवाय समजी सकाय नहीं ए सत्य छे; अने एवा ज्ञाननी संपुर्ण स्पष्टता, अनेक प्रकारना समुहमां अने प्रसिद्ध व्याख्यानमां थइ शकती नथी, विद्यार्थिये घणुं करी पोताना अं-

तर आत्माना प्रकाष उपर अने पोताना मेळवेला अनुभव उपर आधार राखी, जे भिन्न भिन्न समये, तेने जे गुचवणो आवी पडे छे, तेनुं निराकरण अने समाधान तेने पोताने जे अंतर स्फुर्णाथी प्रकाष थवा मांड्यो छे, तेनी सहायताथी करवाने प्रयत्न कर्या करवुं; तेम कर्याथी तेने अंतरमां एक दिप प्रगट थया जेवुं लागशे. अने ते समयनी तेनी स्थितिना प्रमाणमां, तेने. अदभुत चमत्कृतीओ देखाववा मांडशे, तेम थया पछी, तेने आगळ उत्तरोतर अधिक ज्ञान अंतरमांथीज उत्पन थवा मांडशे, तेने बाह्य ज्ञाननी पछी विशेष अगत्य पडती नथी एटलुंज नहीं पण तेने कोइ जातना नियम अथवा मार्ग देखाडवानी पण अगत्य रहेती नथी. तेने जे जणाय छे अने लागे छे, ते पोते जाणी अने समजी शके, तेने तेवुं ज्ञान जेम बीजो कोइ माणस केतो होय, एवी रीते आवतुं नथी पण बीजी प्रथकज रीते मळी शके छे.

प्रथम ब्रह्म जीज्ञासु विद्यार्थिने, पोताना अंतर शत्रुनी साथे युद्ध करी, तेनो पराजय कर्या शीवाय, पोताना अति गुह्य अने कठण विषयनुं संपूर्णज्ञान थइ शकतुं नथी, केमजे तेवी स्थिति थया वगर कदापी मन, ते ज्ञान ग्रहण करी शके परंतु तेनी असर अंतर जीवात्मा उपर थइ शकती नथी, ते ज्ञान उपलक रहेवाथी सत्य समागम नष्ट थाय तो, ते उ-

पलक ज्ञाननो पण नाष थइ जाय छे. माटे आत्मामांज, सत्य वैराग्यनो रंग लागवो जोइये. तेथी आग्रही विद्यार्थिये, पोतानी तिव्र थयेली वृत्तिने, नरम पडवा देवी नहीं. वृत्ति नरम पडवाथी, कीधेला साधनोना फळमां अति मोटो विक्षेप आवी पडे छे, अने कीधेलो श्रम घणी वखत व्यर्थ जाय छे. समय वापु कर्तां पण अधिक त्वराथी जायछे. बीजी केटलीएक वस्तु गयेली पाछी मळी शके छे. पण गयेलो समय पाछो फरी मळतो नथी समय अति घणो अमुल्य छे, माटे ज्यां सुधी आपणो स्थुळ देह छे, त्यां सुधी समयनो सत्य उपयोग करी धारेला सत्य कार्यनी परीपुर्णता करी लेवी; तेनी परीपुर्णता करवा सारू केवा नीयमनी अगत्य छे तेनो अधिक विचार हवे करीये.

"जे समये वृत्ति आत्मामां केवळ स्थिर थइ, बाह्य उपाधी नहि नडे अने जे समये केवळ शांति वर्ते, ते समये अलोकीक प्रत्याघात थयेलो गुप्त नाद उत्पन्न थाय छे, ते एवुं सुचवे छे जे, तारी अंतःकर्णरूपी जगा स्वच्छ छे, तेमां शुद्ध बिजनुं आरोपण कर" ते नाद आत्मानो समजी ते प्रमाणे विद्यार्थिये वर्तवुं".

एवा समये ते विद्यार्थिने जे कांइ अद्भुत दृष्टि पडे तेथी फुलाइ जवुं नहीं, पण एम समजवुं जे, एतो सत्य मार्गनो मात्र प्रारंभज छे; अने तेने जे कांइ अल्प जणायलुं छे, ते एटलुं तो गुप्त अने गुह्य छे जे

तेने अति आग्रहथी प्रयत्न करी, ते सत्य प्रकाशनी यथार्थ योग्यता जाणवानी अवश्य अगत्य छे; माटे सद्‌गुणनां बीज अधिक आरोपण करवानी अगत्य छे; अने ते आगळ अधिक उन्नती थवानुं साधन छे अने तेमां आग्रह राखी वृत्ति स्थिर रही एटले, तेने अधिक बळ आवी पोतानो प्रयत्न अधिक आग्रहथी जारी राखे छे, तेणे करी अंतना परिणामनो लाभ मेळववानो तेने सत्य निश्चय थाय छे.

पछी पोते योग्य विद्यार्थिछे, ते एम समजी पोतानी सघळी इच्छा उपर जय मेळव्याथी, ते गुप्त सांभळी शके छे, जोइ शके छे अने बोली शके छे. तेणे जीवात्माने पोतानी निर्मळ वृत्तीमां बळीष्ट जोयो छे, अने ओळख्यो छे. अने केवळ शांतीना समये, एवो नाद सांभळ्यो छे जे " हवे सत्य विद्या मेळववाना स्थानमां जा, अने त्यां तारे सारु शुं लखेलुं छे ते वांच ".

हवे योग्य विद्यार्थिछे एटले द्रढ निश्चयछे. सांभळी शकेछे एटले ए जीवात्मानो प्रकाश पामेलो मार्ग जणाय छे, जोइ शकेछे एटले जे अंतरमां जणायछे, ते समजी शकेछे. बोली शकेछे एटले आपणे जे सत्यता जणाइ छे ते बीजा मुमुक्ष अने योग्य विद्यार्थिने समजावी शकीये छइये. अने सघळी इच्छा उपर जय मेळवेलोछे एटले, पोतानी इन्द्रियोने अने वृत्तिओने, पोतानी सत्तामां राखता शीखेला

छइये. अने जीवात्माने जाणेलो छे एटले अंतर द्रष्टि थइ, निस्पक्षपात रीते पोताना वर्तमान जीवने जोयो छे. जीवात्मा बळीष्ट थयो एटले, ते एक छतां अनेक रुपे केवी रीते थइ शके छे, तेनुं अल्प ज्ञान थवा मांडे छे. ओळखवुं एटले अदभुत प्रकाश द्रढ द्रष्टिथी, जोवानी शक्ति आववी, एक क्षणपण द्रष्टि फरे नहीं, अने कोइ पण जातनो भय लागे नहीं, एटले पिशाच आदिक मलीन प्राणीनी कल्पना आवे नहीं, एवी रीते केटला एकने थायछे. ते माटे विद्यार्थिये अति सावध रही द्रढ बळीष्ट हिमत राखवी, ए जाणवाथी आगळ आत्मानी अति उत्तम स्थिति अने बळ जाणवामां विक्षेप नहीं आवी शके, ए मोटो लाभछे; जो ते प्रकाषथी विद्यार्थि भय पाम्यो तो, तेनी करेली मेहेनत व्यर्थ जायछे.

गुप्त नाद सांभळवो एटले एम समजवुं जे, अंतरमांथीज सत्य प्रेर्णा थायछे. अने विद्याना स्थानमां जवुं एटले, एवि स्थिति थवी जे, तेमां आत्मानुं सत्य ज्ञान समजी शकाय, अने सारेज विद्यार्थिने अल्प श्रमे समजवा सारु अग्नि रुप महा प्रकाशथी लखेला अक्षरो जणाववा मांडेछे; केमजे ज्यारे विद्यार्थि योग्य थइ, तैयार थयो एटले परमकृपाळु योगेश्वर पण अदभुत ज्ञान आपवाने तैयार थाय छे. विद्यार्थिनी उपर कहेली स्थिति गुह्य रीते मैत्रीउपनीषदमां वर्णवेली छे. तेमां एवुं कह्युं छे के "जे

विद्यार्थि पोतानी इन्द्रियो अने तेना पदार्थो, अने पृथ्वी संबंधी सघळी त्रणानी मर्यादानी पेली तरफ गयो छे; तेणे एवुं धनुष्य धारण करेलुं छे जे, जेनी दोरी सनातन धर्म अने निर्मळ वृत्तिछे अने हिमत रुपी कमान छे. अने परमार्थ रूपी शळीयाथी ते विद्यार्थि परम शांति रुप ब्रह्मनुं बारणु उघाडी शकेछे.

एटलुं अवश्य लक्षमां राखवानुंछे जे आपणे उपर जे सांभळवुं, अने जोवुं एवुं कह्युं छे ते स्थुळ कर्ण अने चक्षु इन्द्रिथी जोवानुं अने सांभळवानुं नथी, परंतु आग्रहथी गुप्त विद्या जाणवानी इच्छा राखनारो विद्यार्थि जे जोइ अने सांभळी शकेछे, ने तेना अंत्तरनी उन्नति पामेली ज्ञानशक्तिना योगेछे, तेने दिव्य चक्षु अने ज्ञान चक्षु कहेछे. ए उपरथी बाहारनी उन्नति पामेली ज्ञान शक्ति केवळ निरउपयोगी समजवी नहीं, तेने विशे विष्णुपुराणना अ. ६ ना श्लो. ५ मां एवु कह्युं छे जे "बाह्म इन्द्रियोथी जे ज्ञान प्राप्त थयुंछे, ते एक दीपनी पेठे प्रकाशे छे पण जे ज्ञान, अंत्तर स्फुर्णाथी मळेलुं छे ते सूर्यनी पेठे सघळा तम अथवा अंधकारनो नाश करेछे. वळी विष्णु पुराणना अ. ६ ना श्लो. ६ मां एवुं कह्युं छे जे, आत्मज्ञानी पोताना स्थुळ चक्षुथी जोतो नथी. जीवात्मा मानसिक ज्ञान चक्षुथी जोइ शकेछे अने तेमा आनंदनो अनुभव लइ शकेछे एवुं चांदोग्य उपनीषदमां कह्युं छे वळी मंडुक उपनीषदमां पण उपर

कहेला ज्ञानचक्षु अने दीव्य चक्षु विशे कहेलुंछे. ते शीवाय महाभारतना अनुसासन पर्वमां, भगवतगितामा, चांडोग्य उपनीषद, भागवत, अने पातांजलीना योगसुत्रमां ज्ञान अने दीव्य चक्षु विशे अति उपयोगी सुचना आपेलीछे.

वळी ब्रह्मजीज्ञासु अने गुप्त विद्याना आग्रही विद्यार्थिनी अधिक उन्नती थवाना साधनोनो अधिक विचार करीये.

१ तारी सामा आवता युद्धथी, तुं अळगो रहे. कदापी तुं युद्ध करतो जणायछे पण ते, तुं युद्धांधीपती नथी.

२ युद्धाधिपतीने जाण, अने तेने तारा रुपमां युद्ध करवा दे.

३ युद्धने सारू तेनीज आज्ञा प्रमाणे चाल.

४ ते युद्धाधिपतीने, एक प्रथक सेनापती जेवो नहीं जाण, पण अंते ते तुं पोतेज छे एम समज, अने तेना बोलेला शब्दो तारा अंतरनी गुप्त इच्छा छे एम समज, केमके ते जाते तुंज छे, ते छता ते आवर्ण रहित छे, माटे ते तारा कर्ता अधिक ज्ञानी अने बळवान छे, माटे तेने जाणवाने प्रयत्न कर. जो तेने नहीं ओळखशे तो, युद्धनी गडबडमां अने उतावळमां तेने तुं भुली जइश. अने तुं तेने जाणीश नहींतो ते पण ताराथी अळगोज रहेशे; अने तारी ज्यारे सत्य इच्छा तेने जणाशे त्यारेज ते तारा रुपमां

प्रवेश करी युद्ध करशे, अने तारा अंतरना अंधकारमां प्रकाश करशे, अने तेम थयुं एटले, तुं युद्धमां शीतळ अने वगर थाकेलो थइ, एक बाजुये रही तारे सारु युद्ध तेने करवा दे. पछी तारो एक पण प्राहार फोगट जवानो नथी, पण तुं जो तेने जाणवाने प्रयत्न नहीं करे, अने तेने भुली जशे, तो तुं केवळ सहायता विनानो थइश. पछी तारू मन भ्रमणे चडसे, तारा अंतःकर्णमां भ्रांति थया करशे, अने संग्रामना स्थळनी रजमां तारा चक्षु अने इन्द्रियो, नीरउपयोगी थइ पडशे, तेम थयुं एटले तारो स्नेही कोण अने शत्रु कोण ए तुं जाणी शकवानो नथी.

ते तुं छे एम छता पण आवरणने लीधे तुं अल्प अने घणा कार्यमां अजाण छे, ते अनादी अने सर्वज्ञ छे, ज्यारे तेनो एक समये तारा अंतरमां प्रकाश थइ, ते तारो युद्धाधीपती थयो एटले ते तारो केवळ त्याग करशे नहीं, अने ज्यारे केवळ शांतिनो समय आवशे, त्यारे तेनी अने तारी एकता थइ तमे बेउ एकज रुप थशो.

आपणे उपर कहेला चारे नीयमोनो एक जथो समजी, तेमां जे युद्ध कह्युं छे ते पोताना अंतरना काम, क्रोधादीक सर्वे विकारोनी साथे समजी ते विकारो उपर यथार्थ रीते अती आग्रहथी सत्ता बेसाडवी. अने जे मनुष्यने युद्ध करवानुं छे, ते स्थुळ देह सहीत मायावी जीवात्मा सहित छे. तेनो

परस्पर एवो संबंधछे के, स्थुळ शरीर जीवात्मा वगर नीरउपयोगी होयछे, अने ज्यांसुधी जीवात्मा स्थुळ शरीरमां लपेटायलो छे, त्यांसुधी ते देहथीज कार्यो करी शकेछे. सारांश के शरीर जीवात्मानो रथछे, अने ए बेउना संबंधथी मनुष्य चाली अने रही शके छे. सघळी ब्राह्म श्रष्टि ते रथाधि पतीने जणाती नथी. तेथी साधारण मनुष्यो ते रथनेज हालतो चालतो अने कर्ता समजे छे. परंतु उन्नतिने पामेलो विद्यार्थि साधारण मनुष्य कर्ता अधिक सत्यता समजे छे. ते माटे उपर कहेला चारे नीयमोमां ते विद्यार्थिने पोताना अंतरमांना सत्य युद्धाधीपती ओळखवानी अवश्य अगत्य दर्शावेलीछे. ते अंतर आत्माछे. अने तेज युद्ध करावेछे एम छतां सघळा बाहारना मनुष्योने ते रथ अथवा बाहारनो माणसज युद्ध कर्ता जणाय छे.

ए विषे कठ अने चांदोग्य उपनीशदमां एवुं कह्युंछे जे, "ब्राह्म मनुष्य एटले स्थुळ शरीर जे के नाशवंत, अने क्षणिक अने काळना मोहमां आवेलुं छे माटे अंत्तर विकार रुपी शत्रु साथे युद्ध करी तेनाथी जय मेळवी शकातो नथी." वळी एवुं कह्युंछे जे, एवुं जे स्थुळ शरीर तेनाथी इंन्द्रियो वश थइ शकती नथी माटे ए शरीरने एकलुं मुकी शकातुं नथी. जे मनुष्य इन्द्रियोनी इच्छाने स्वाधिन थइ, तेमां कांइ स्वार्थ मानेलो छे तेने लीधे मनना मालिन

विकारो उत्पन्न थायछे, अने विकारोमांथी क्रोध उत्पन्न थायछे, क्रोधमांथी अज्ञाननी उत्पत्ती थाय छे, अज्ञानमांथी, स्म्रातिनो नाश थवा मांडेछे स्म्रतिना नाशथी, सत्य असत्यना विवेकनो नाश थाय छे.विवेकनो नाश थवाथी सर्वस्व सद्गुण नाशपामेछे. एवुं भगवतगीताना अध्याय २ ना श्लोक६२मां कह्युं छे. ते माटे उपला प्रथम नीयममां कह्युं जे, बाहारनो माणस युद्ध कर्ता जणायछे परंतु ते सत्य युद्ध कर्ता नथी.तेम होयतो निश्चय तेनो पराजय थइ नाश थाय.

आपणे उपर बीजा नियममां कह्युंछे जे, विद्यार्थिये सत्य युद्ध करनार पोताना अंतरमां जोइ तेमां पोते रही युद्ध करवुं. हवे ते युद्ध करनार कोणछे. ए निर्मळ वृत्ति करी विद्यार्थि जोशे तो तेने पोतामां रहेलो अंतर आत्माज जणाशे. ते अक्षय डाहापण वाळो अने समर्थ छे, अने तेज युद्ध करवाने योग्य छे. ए शरीर वगर कार्य करी शकतो नथी, एतो सत्यछे. ते माटे युद्धमां ते बेउ एकत्र थवा जोइये. पण शरीरे ते आत्माने स्वाधिन रही तेनी आज्ञा प्रमाणे चालवुं जोइये, शरीर रथ छे, अने इन्द्रियो अश्व अथवा घोडा छे. मन लगामछे, अने ए सघळाने चलावनारो जीवात्माछे. एवुं कठ उपनीषद्मां कह्युं छे. एमां जो उपर कहेला अश्व उपर सत्ता नहीं रही, तेने बेहेकवा दीधा तो परीणाम दुःखदायक थायछे, ए सत्य विवेकी ब्रह्म जीज्ञासु विद्या-

र्थिना जाणवामां छे.

ए सघळु छतां, बाह्य शरीरनो मनुष्य अंतर आत्माने अजाण्योछे एम नहीं समजवुं. एक रीते जोतां ते बेउ भिन्न छे खरा, परंतु ज्यां लगी जीवात्मा स्थुळ देह धारी रह्योछे, त्यांसुधी ते बेउ एक रूप छे. अने ए संबंधमां अंतर आत्मा तेज बाह्य कार्योमां बाह्य जीवात्मा जणायछे. माटे अंतर मनुष्यनी जे आज्ञा ते ब्राह्म मनुष्यनी गुप्त इच्छाछे. ते माटे संपुर्ण जय मेळववा सारु बाह्य मनुष्ये अंतर मनुष्यनो सहायता मागवी, अने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं, एज त्रीजा अने चोथा नीयमनो स्पष्ट अर्थछे.

ए प्रमाणे जीवात्मानुं सत्य स्वरूप ओळख्या पछी, तेनी आज्ञाने स्वाधीन रही उपर कहेला विकारोनी साथे युद्ध, विवेकी एवा जे ब्रंह्मजीज्ञासु विद्यार्थि तेमणे करवुं; एटलेथी ए वीषय हाल अपुर्ण राखीये छइये.

संवत् १९४२ अश्विनवदी १२ ने रवीवार.



प्रकरण १० मुं.

गुप्त विद्यानी सुचना.

आपणे पाछला व्याख्यानमां, ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिना आत्मानी उन्नति थवाना साधनोनी जे सूचना आपी, तेज संबंधमां आ प्रसंगे अधीक वीचार करीये.

आत्मा संबंधी जे निर्मळ विद्या, तेज ब्रह्मजी-ज्ञासु विद्यार्थिनुं मुख्य कर्तव्य समजवुं. प्रत्येक मनुष्य प्राणीमां गुप्त रीते ते विद्याना नाद अने तेनां मूळ, बीजरुपे रहेलांछे. प्रथम विद्यार्थिने ते जणातां नथी; परंतु जेम जेम ते विद्यार्थि आग्रहथी उंडो विचार करतो जायछे, तेम तेम तेनो प्रकाश थतो जायछे. कदापी विद्यार्थिने तेनो विचार करवामां कंटाळोआवे तो, थोडा समय सुधी अटकी जइ, पाछो अंतरमां विचार करता जवुं, एटले तेने जणातु जशे, केमजे ते निश्चय अंतःकरणमांछे प्रथम प्रारंभमां विद्यार्थिये, श्रद्धा, प्रिति, अने उत्कंठा राखवानी अगत्य छे. जे मनुष्यने संसारना मिथ्या सुखमां सत्यता जणायली छे; ते मनुष्य पोताना अंतरमां महा अलोकिक सत्यतानी प्रेरणाना नाद तरफ पोतानी कर्ण इन्द्रि लगाडतो नथी;वळी ते मंदबुद्धिवाळो पुरूष आत्माना प्रकाश तरफ पोतानी दैवचक्षु इन्द्रि बंध राखे छे. तेने मात्र संसारना सुखनी कल्पना करवी सेहेली लागेछे, अने ते पुरुष पोताने जणायला सुखनी पेली तरफ विचार करवाने प्रयत्न करतोज नथी. तेने संसारना मिथ्या सुखनी त्रष्णा अति प्रबळ होयछे, ते तेनाथी अटकावी शकाती नथी ते छतां तेवो मंदबुद्धिनो पुरूष ए सघळानो निष्पक्षपात रीते विचार करवानो अभ्यास करतो जशे तो, तेने पण ते सघळु संसारनुं सुख क्षणभंगुर, मिथ्या, दुखरुप अने असत्य

परीणामे जणाशे. ए सघळा मिथ्या कल्पनाना समोहमां, इश्वरी अलोकिक सत्यताना बीजो रहेलां छे. परंतु तेमां आपणे रह्या छइये, ते मायानुं आवरण एटलुंतो प्रबळछे जे, बीजाना अंतःकरणमां उपर कहेला निर्मळ अमृतना बीजो क्यां रह्यांछे, ते प्रथम आपणे जाणी शकता नथी, ते छतां जो आपणे आग्रहथी ते जाणवाने प्रयत्न करीशुं, तो ते जणाशे. ते नीर्मळ अमृतना बीजो आपणा अंतरमां छेज, अने एक समये ते आपणा अंतरमां जणावा मांड्यां एटले आपणी आसपास ते बीजो क्यांछे ते आपणने अल्पश्रमे जणाइ आवशे.

निर्मळ निश्चयात्मक बुद्धिनी जे प्रेरणा छे, ते आत्मानो नाद छे. अने ते मनुष्यप्राणीना स्थूळ देहमां मुळ शुद्ध कल्पना छे, तेनाथी यथार्थ रीते आपणे जाणीता थया एटले, पोतेज सत्य न्याय रुप थाय छे; एवुं वेदमां घणे प्रसंगे कहेलुंछे, केटलाएक मनुष्यने अज्ञानने लीधे, ते सत्यनाद जणातो नथी. ते उपरथी ते नथी एम समजवुं नहीं, पण ते अंतरमां सघळी इन्द्रिओ विगरेने, स्वाधिनमां राखनार छे; परंतु अज्ञानने लिधे इन्द्रिओनुं प्राबल्य थयाथी, तेनी आज्ञा चाली शक्ती नथी. अने केटलएक समये तेने एक वखत गण्यो नहीं, एटले बुद्धी रुपी राजाने राज भ्रष्ट करी, इन्द्रियो राज्य करे छे; ते छतां ते उत्तम राजाना ज्ञाननो नाष थतो नथी. ते माटे

प्रथमथीज निश्चयात्मक बुद्धिना सत्य नादनी सुचना सांभळी तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवाथी सत्य मार्गे जवाइ शकाशे.

हालना पश्चिम देशना केटलाएक निष्पक्षपाती विद्वानो, आपणे उपर कहेलो सिद्धांत मान्य करे छे. तेमां महा विद्वान दाक्तर बेन एवुं कहे छे जे, मानसिक कल्पनाना सिद्धांतमां निर्मळ आत्म विद्यानी सत्यता रहेली छे. तेणे करी दोष रहित आपणे असत्यमांथी सत्यनो निर्णय करी शकीये छइये, तेथी जीवात्मानी महा अलौकीक अद्भुत शक्ती प्राप्त थइ शके छे. हवे निश्चयात्मक बुद्धिना सत्य ज्ञाननी उन्नति थवाना बीजा अगत्यना नियमोनो विचार करिये.

१ तारी आसपास जे सघळा प्राणीयो छे, तेनो विचार अति आतुरताथी करवानो अभ्यास राख.

२ मनुष्य प्राणीना अंतःकरण उत्तम ज्ञानना योगे जाणवाने शीखवानुं प्रयत्न कर.

३ तारा पोताना अंतःकरण संबंधी विचार करवानी अति आतुरताथी आग्रह कर.

४ तारा पोताना अंतःकरणमांथी अलौकीक प्रकाष नीकळे छे. ते तने प्रकाषमान करवाथी तुं सघळी सत्यता जाणी शकीश.

मनुष्य प्राणीना अंतःकरण जोवानो एवी रीते

अभ्यास करवो के, जे श्रष्टिमां तुं रह्योछे, अने जेनो तुं एक भाग छे ते श्रष्टि केवी अने शी रीतनी बनेली छे. अने तारी आसपास जे नीरंतर सघळा मनुष्य प्राणीयोमां फेरफार थया करे छे. ते मनुष्यना अंतःकरणना फेरफार थवाथीज छे. अने तेना बंधारणनो तुं गुह्यार्थ समजीश, एटले तुं धिमे धिमे अधिक ज्ञानवान थतो जइश.

विद्यार्थिने पोतानुं अंतःकरण जोइ बीजाना अंतःकरण जोवानुं कार्य अती कठण छे. तेमां एटलुं अगत्यनुं छे जे, ते जोवामां पोते हुं प्रथक छुं एवुं अभीमान काढी नांखी पोते सघळो छे एम जाणवुं. केमजे स्वतःपोते प्रथक समजवाथी, पोतानी अंतर द्रष्टिमां भिन्न भिन्न रंगो उत्पन थायछे, ते माटे पोते प्रथक नथी, एम समजवानी अगत्य छे. विद्यार्थिए सत्य समजवुं के, जे निश्चयात्मक बुद्धिछे ते पक्षपात रहित छे. तेने कोइ शत्रु, अने मित्र नथी, सर्व समान ज्ञान लेवा योग्य छे.

शत्रु केम थाय छे ए समजवुं अति गुह्य छे, अने ते यथार्थ समजवाने घणो काळ लागे छे. तारो मीत्र एक तारो भाग छे. ए तारी मित्रतानो सघळामां प्रसार करवो कठण छे. तेमां पोतानुं अंतःकरण सत्य रीते जाणवुं ए अति कठण छे. ज्यां सुधी द्वैत पणुं अथवा पोतानुं प्रथकपणुं एनो नाष थयो नथी, त्यां सुधी पोतानी गुप्तता जाणवी अति भारी कठण

छे. त्यां सुधितुं तारी पोतानी अति अद्‌भुत गुप्तना ग्रहण करी तेने कार्यमां वर्तावी शकवानो नथी. अने तेनो सत्य उपयोग पण करी शकवानो नथी.

विद्यार्थिये एटलुं लक्षमां राखवानुं अगत्यनुं छे के, तेणे बीजाना अंतःकरणमां उतरे एवी रीते सत्य ज्ञाननो बोध वाक्यथी करतां आवडवुं जोइए, ज्ञाननी उत्तम प्रकारनी उन्नती थया वीना बीजाना मनमां प्रेरीक भाषण कर्तां आवडे नहीं, माटे विद्यार्थिये प्रथम सत्य ज्ञाननी उन्नती यथार्थ रीते करवी;तेम कर्या पछी प्रेरीक सत्य ज्ञाननुं भाषण करवानो अभ्यास राख्याथी, श्रोता अने वक्ता बेउने श्रवण, मनन, अने निदिध्यासननो लाभ थशे.

एवी रीते अंतर स्फुर्णानो सत्य उपयोग करी, पोतानी इन्द्रियो उपर प्रबळ सत्ता राखतां आवड्या पछी अने पोतानो स्वार्थ करी लेवानी त्रष्णा जीत्या पछी, अंते उन्नती पामेलुं ज्ञान प्राप्त थया पछी, विद्यार्थिये सत्य रीते सत्य मार्गे गयाथी, ते केवळ सत्य ज्ञान निश्चय जणाइ आवशे. तेना सत्य मार्गे जवा सारु विद्यार्थिये कीया उपायो योजवा के, जेथी तेनो लांबो पंथ अल्प श्रमे कपाइ शके, तेनी अल्प सुचना आ प्रसंगे कर्याथी, अवश्य आग्रहि विद्यार्थिने लाभ थइ शकशे.

प्रथ्वि, जळ, अने वायु वीगरे तत्वो तारे सारु केवी अलोकीक गुप्त वस्तुओ राखे छे, तेनुं सोधन

कर अने एनुं सोधन तारा अंतर आत्मानी स्फुर्णा थया पछीज यथार्थ रीते थइ शकशे.

विद्यार्थिये सघळी श्रष्टिनुं अवलोकन करी, तेमां शु रह्युं छे, तेनो अभ्यास करवो. ए उपरथी साधारण मनुष्य प्राणी, जेवी रीते पोतानी बाह्य इन्द्रिओथी अवलोकन करी विषयमांज लुब्ध थाय छे, तेवी रीते विद्यार्थिये करवानुं नथी; विद्यार्थिये तो एवुं समजवुं के, श्रष्टि एक महा सत्य ज्ञान दर्षावनारो गुरु, अने इतीहास छे. जे कांइ श्रष्टिमां थयेलुंछे, अने थाय छे, तेमां मनुष्य प्राणीना अंतरनी कल्पना सहीत, ए सघळानी छाप यथार्थ रीते पृथ्वी. जळ, वायु, अने आकाश, एमां पडे छे. केमजे यांत्रिक विद्यानो एक सत्य नीयम एवो छेजे, आघात अने प्रत्याघात ए बेउ समान छे. ए उपरथी मनुष्य प्राणी मन, कर्म, अने वचनथी जे क्रीया, अने कल्पना करे छे, तेनो प्रत्याघात एटले छाप, पृथ्वि, जळ, वायु, अने आकाष एना उपर यथार्थ पडे छे, अने तेनो अंत कदी आवतो नथी, एटले एक मनुष्यना मुखमांथी, शब्दनो उच्चार थयो एटले तेनुं वायुमां व्याप्ति भवन थइ, ते सघळी दीशाओमां प्रसरे छे. एवीज रीते समुद्रमां जे नावो चाले छे. तेनी पण छाप जळमां पडे छे, तेज प्रमाणे पृथ्वी पण तेना उपर जे कार्यो थाय छे, तेनी छापनुं पोते आकर्षण कर्या करे छे. परंतु ए सघळा विकारो अने छापो

अल्प अने क्षणभंगुर छे; ते छतां ते यथार्थ गणीत विद्याना नियम प्रमाणेज थाय छे परंतु एवी रीतथी उत्पन थता नाद, कल्पना,अने छाया ते यथार्थ रीते समजवा, जाणवा, जोवा, अने सांभळवा सारु अति उत्तम जीवात्मानी उन्नति करवानी अवश्य अगत्य छे.ए सघळुं छतां जे ब्रह्म जीज्ञासु ए सत्य ज्ञान मेळववाने स्वार्थ रहित अति आग्रह करे छे, अने ते पाछळ कहेला सघळा.नियमो प्रमाणे यथार्थ रीते चाले छे, तेना अंतर आत्मानी स्फुर्णा थइ तेने जणाववा मांडे छे. ते छतां तेवा विद्यार्थीने पण महा समर्थ योगेश्वर गुरुनी सहायतानी एवा कार्योमां अवश्य अगत्य छे. केमजे ते विना निर्विघ्नपणे यथार्थ लाभ थतो नथी.

ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये पृथ्वि उपरना जे देव, महा समर्थ योगेश्वर; जे तेने सारु महा अदभुत गुप्त विद्या जाणे छे, तेने सारु शोध करवो अने ते मात्र पोतानी बाह्य अने अंतर इन्द्रियो अने विषइ श्रष्णाने जीत्याथीज प्राप्त थइ शके छे. ए विषे श्रिकृष्ण भगवाने पण एवुं कह्युंछे जे, आत्मानुं ज्ञान मेळवी, महा ज्ञानी अने पवित्र गुरु तेना उपर सत्य श्रद्धा राखी, तेने डंडवत प्रणाम करी, तेमनी पासे गुप्त विद्याना सत्य नियमो जाण, अने तेम कर्याथी ते विद्यार्थि पाछो फरी अज्ञानमां पडशे नहीं. अने तेथी अंते पोताना चैतन्यमां सघळी श्रष्टि जोइ श-

करशे. ए भगवतगिताना अ. ५ना श्लो. ३४-३९ मां कह्युं छे, जे विद्यार्थिये परमार्थ करवाना सद्गुणो मेमेळवेला छे. तेज विद्यार्थिने एवा परम पवित्र सत गुरु पासेथी गुप्त विद्यानुं ज्ञान मेळववानो हक छे.

वळि विद्यार्थिने अंते पोतानो अंतर आत्मा, जे अनंत काळथी सत्यता जाणे छे; तेने सोधी काडवा नी अवश्य अगत्य छे. अने एज सत्य ज्ञाननुं अंतनुं परीणाम छे. अने तेवि स्थितिये विद्यार्थि पोच्यानी नीशानी, भगवदगिताना अ. ६ना श्लो.४मां कही छे तेमां एवुं छे जे, " जे अंतर आत्मा छे तेज तारो साक्ष करनार, अने मोक्ष आपनार छे "

एटलुं निश्चय लक्षमां राखवुं जे, आपणे पाछळ जे सघळा सत्य नियमो कह्या, तेनी द्रढता अल्प समयमां थइ शकती नथी, ते माटे द्रढ आग्रहथी प्रयत्न करवामां न्युनता राखवी नहीं.

स्वतःनुभान भुली जवुं एटले हुं अकर्ता अने अशक्त जीवछुं. एनुं सत्य ज्ञान मेळववुं ए अति कठणछे. एने सारु घणाकाळनो अनुभव, थइ, निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी परीपक्व उत्तम उन्नति थवी जोइए. ते माटे ज्यां सुधी, तेवी स्थिति थइ नथी, त्यां सुधी तेना परीपुर्ण फळनी इच्छा राखवी नहीं. माटे घणा काळना परीपक्व अनुभव मेळव्याथीज ते यथार्थ रीते प्राप्त थइ शके छे. माटे विद्यार्थिये, अति द्रढ आग्रहथी धिर्यता राखी, पोतानो प्रयत्न करवा

त्यां न्युनता थवा देवी नहीं, अने प्रयत्न करवामां कंटाळवुं नहीं. ए विषे भगवद्गीताना अ. ७ना श्लोक ३ मां एवुं कयुं छे जे, घणा माणसना समोहमां एवुं महत्वनुं कार्य करवाने घणा थोडाज प्रयत्न करे छे, अने जे थोडो प्रयत्न करेछे, तेमां पण कोइकज, संपूर्ण रीते कार्य करी अंतनुं परीणाम मेळवी शके छे. ते छतां विद्यार्थिये प्रयत्न कर्तां कंटाळवुं नहीं. केम जे, जो कदापी प्रयत्न कर्तां देहनो अंत आव्यो, तो पण कीधेलुं प्रयत्न निष्फळ जतु नथी. कीधेला शुभ कर्मनो बीजा जन्ममां उत्तम संस्कार थइ, उत्तम देह प्राप्त थइ, त्यां तेनी परीपूर्णता करवा भणी लक्ष जाय छे. माटे विद्यार्थिये निश्चय समजवुं के, अति आग्रहथी, धिर्यता राखी प्रयत्न करवाथीज जय प्राप्त थाय छे. अने ज्यां सद्गुण छे त्यां जय छे.

एवी रीते पोताना अति प्रतापवान बळीष्ठ आत्माने द्रढ निश्चय थयो एटले, ते साधारण मनुष्य कर्तां आधिकछे.

एवी स्थितिये विद्यार्थि पोच्यो एटले, केवळसत्य ज्ञान ते पोतेज छे, केम जे, तेनो आत्मा निर्मळ आत्मानी साथे एक रुप थाय छे, एटले अंतर आत्मा पोतेज थाय छे. ते छतां तेमां पण भय रेहेलुछे.माटे विद्यार्थिये, तेथी पाछु पडी जवाय नहीं तेने सारु नीरंतर सावध रहेवुं.

माटे विद्यार्थियेतेवी स्थितिमां द्रढ रही पोते कांइ पण

वस्तु नथी, एम समजवुं. जे अंत्तर अने बाह्म अद्रश्यछे, तेज जाणवाने प्रयत्न करवुं,तेवी स्थिति थइ एटले, तेणे स्थुळ कींवा सुक्ष्म शरीर संबंधी कांइ पण कल्पना राखवी नहीं, तेवी रीते थयाथी पोतानो आत्मा अती सुक्ष्म आकाशरुपी तत्वनी साथे समीलन थायछे. तेवी स्थितिमां ते विद्यार्थि केवळ आत्मा रुपछे, तेने शब्द, स्पर्श, रस, रुप अने गंध आदी कांइज नथी, अने ते अद्रश्य छे. अने केवळ शुद्ध चैतन्य छे एवुं कठ अने मांडुक विगरे उपनीषदोमां कह्युंछे.

ते अनादी अनंत अने रुप रहितछे. केमजे ते केवळ शुद्ध चैतन्यज छे. अने तेज सत, चित्त, अने आनंद रुपछे. अने तेज सतमांथी कल्पनारुपी अज्ञानने लीधे असत उत्पन थायछे, एवुं रघवेदमां कह्यु छे. ते स्थिति, उत्पाति काळनी पूर्वेनी प्रथम स्थितिछे. माटे तत्वादिकनी उत्पातिनी पूर्वे केवळ एक सत्यजछे. एवुं रघवेद अने चांडोग्य उपनीषदमां कह्युं छे. वळी रघवेदमां एक ठेकाणे एवुं कह्युं छे जे, सत्य अने असत्य ए बेमांनु कांइज नोतु एटले ब्रह्मांडादीक उत्पन्न थयाना काळनी पुर्वे कांईज द्रश्य नोतुं एज वेदनो मुळ हेतुछे; माटे जे अद्रश्य अने शब्द रहित तेज परब्रह्म समजवुं. जे सर्व व्यापक शुद्धचैतन्य ज्ञान तेज एक सत्य माटे ते एक सत मात्र केवायछे. अने तेज अतर्क्यछे अने समजावी शकाय एवुं नथी, अने कोइ शास्त्रथी पण बोध थइ

शके एवुं नथी, ए तेज सर्व व्यापी रह्युंछे. अने तेज स्वयंप्रकाश छे एवुं विष्णुपुराणना अ. १ ना श्लो. ३२ मां कह्युं छे. माटे तेने जाणवानुं कार्य अती कठण छे एवुं भगवतगीताना अ. १२ ना श्लो. ५मां कह्युं छे. माटे ते कोइ पण इन्द्रियोथी, सांभळी अने जोइ शकाय एवुं नथी. माटे साधारण मनुष्य जे सांभळी शके छे, अने जोइ शके छे, तेवी स्थितिनी पेली तरफ विद्यार्थिये जवुं जोइये, अने तेवा विद्यार्थिने जे अंतरनो प्रकाश थयो छे, तेना योगे तेने केवळ शुद्धचैतन्यनो महा प्रकाश जणाइ शकेछे.अने विद्यार्थिने मात्र एक ब्रह्मनीज कल्पना रही, एटले ते समाधिनी स्थितिमां छे; तेमां मन अथवा कोइ पण इन्द्रिनी सहायता जोइती नथी. बीजी सघळी कल्पनानो लय ते समये थायछे.

तेवी स्थितिने विद्यार्थि पोच्यो एटले, ब्रिहत अरण्यकामां जे महारुषीना वाक्यछे, जे, जेणे अति गुह्य अने विकट मार्ग जोयो अने जाण्यो, अने जे मार्गे केवळ सदगुणी मनुष्य जइ शके छे, तेवा अंतना मार्गे ते विद्यार्थि पोच्योछे, पछी, तेने कांइज कर्तव्य रह्युं नथी. एटलु कही ए विषयनी हाल समाप्ति करीये छइये.

कार्तिकवद्य ३ ने रवीवार संवत् १९४३



प्रकरण ११ मुं.

ब्रह्मनुं सत्य ज्ञान.

आपणे पाछला व्याख्यानमां, ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये निश्चयात्मक बुद्धि चैतन्य ज्ञाननी उन्नती करी, अंतनुं परीणाम जे कैवल्य मोक्ष तेनी प्राप्ति करी लेवाना साधनोनी अल्प सुचना करी परंतु ए सिद्धांत यथार्थ रीते समजी तेनो दृढ आग्रहथी साक्षात कार करी लेवाने माहा ज्ञानी पुरुषोने पण दीर्घकाळ लागेछे; माटे सघळा विद्यार्थि जेम पोताना निसना पाठने मुखाग्रे करी, अंतःकरणमां तेनुं अपरोक्ष ज्ञान मेळव्याथीज, पोताना धारेला कार्यनी परीपूर्ण सिद्धी करी शके छे, तेम कैवल्य मोक्षनी इच्छा राखनारा ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये पण निदिध्यास करी साक्षातकार करी लइ, केवळ सत्य ब्रह्मनुं ज्ञान मेळव्याथीज, कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थइ शके छे, एम निश्चय समजवुं. माटे आ प्रसंगे ते सत्यब्रह्म जेने व्योम पण कहेछे. अने तेज सर्व व्यापक अने महा अद्भुत ब्रह्मांडादीक कल्पित नाम रूप वस्तुनुं मुळ कारण अथवा चैतन्य प्रज्ञा सहित जे, प्रथम सत्य तेमांथी पुरुष अने प्रकृति आदीक महाभुतनी तनमात्रा विगरे प्रगट जणाय छे, तेनो विचार कर्याथी विद्यार्थिने अधिक लाभ थइ शकशे.

चांडोग्य उपनीपदमां अने भगवतगीताना अ.

१५ ना श्लो. १६ मां पुरुष बे प्रकारना कह्या छे, मृत्य अने अमृत्य तेमां मृत्य एटले नाश पामनार अने अमृत्य एटले अक्षय मृत्यु रहित कह्याछे. मृत्य पुरुषने क्षर कहेछे मृत्य पुरुष, अक्षय अने मृत्यु रहीत, पुरुषनुं केवळ शांति रुप स्थानछे. अने तेज अक्षर कहेवाय छे, जे मनुष्य अक्षरने प्रकृती रुप कांइ वस्तु समजे छे, ते मात्र अज्ञानने लीधेछे. अने द्विपुरुष सर्व व्यापीकछे, अने तेमांथी त्रतीय पुरुषोत्तम कहेवायछे; एवुं भगवतगीताना अ. १५ ना श्लो. १७ मां कह्युं छे. अने पुरूषोत्तम अजन्मा अने अनंत कहेवायछे. एवुं रघवेदमां पण कह्युंछे. ए उपरथी चांडोग्य उपनीषदमां मनुष्य प्राणीनुं शरीर जे के, पींडब्रह्मांड छे, ते ब्रह्मपुर एटले ब्रह्मने रेहेवानुं स्थान कह्युंछे.

हवे उपर कह्यो जे, मृत्यपुरुष तेने विषे अधिक सूचना आप्याथी स्पष्ट समजाइ शकशे. मृत्यपुरुषनुं मुळ शरीर, प्रकृति अथवा तत्वनुं थयेलुंछे, अने तेज प्रकृती सघळा ब्रह्मांडनी उत्पत्तिनुं उपादान कारण केहेवाय छे; अने ते प्रकृती साथे पुरुषनो संबंध थयाथी, सघळी जड अने चैतन्य वस्तुनी उत्पत्ती थयेलीछे, ते प्रलयना आदी अने अंतनुं कार्यछे; एवुं स्वेत्सवत्र उपषनीद, विष्णपुराण अने भगवत गीतामां कहेलुंछे. ए उपरथी विष्णुपुराणना अ. १ अने २ ना श्लो. २१ मां प्रकृतीने माता कहीछे, अने पुरुष ने पीता ए पद आपेलुंछे हवे प्रकृती एटले शुं,

ए स्पष्ट समजवा सारु प्रकृतिने सघळा मनवांत्तरना प्रथम काळमां सघळा नाम अने रुप वस्तुनुं आदी कारण कह्युंछे;माटे तेने प्रथमकृती एटले प्रथमक्रिया एवुं स्पष्ट कह्युंछे. वळी प्रकृतीना प्र अने कृति एवा बे पद करी एवुं समजावेलुंछे जे, प्र एटले दर्शाववुं अने क्रिति एटले करवुं. ए उपरथी सघळा ब्रह्मांडनुं द्रश्य करनार एवुं स्पष्ट थायछे. एटले प्रकृतीरुप शरीर अथवा पुर कह्युंछे. अने तेमां वसनार अथवा चैतन्यपणु आणनार आत्मा कह्योछे. एटले पुरी शयत इति पुरुषा एवुं थयुं.परंतु ते प्रकृतीना अंशने तम अथवा अज्ञान कह्युंछे.ते अने पुरुष ए बेउ ब्रह्मांडनी उत्पत्तिनी आदीछे. माटे ए बेउने आदी अनादी एवुं रघवेदमां कह्युं छे. अने एज आधार विशिष्टा द्वैतवादी रामानुज लेछे वळी तेनेज तत अने तत पद कह्युंछे. माटे पुरुषोत्तम अने प्रकृती ए बेउ कल्पनामां अनादी कह्याछे. माटे ए बेउ प्रथम हीरण्यगर्भ रुप प्रवाहीमां बीज रुपछे. एवुं रघवेदमां कह्युंछे. ते प्रवाहीमां रेहेली प्रकृतीने अजा अथवा अजन्मा अथवा सलिला अने प्रवाही एवुं पण कहेलुंछे. वळी स्वेतस्वत्र उपनीषद नारायण उपनीषद अने षष्ट प्रश्न विगेरे उपनीषदमां ते प्रकृती अने सर्व व्यापिक पुरुषोत्तममां अजन्मा आत्मा रहेलोछे. तेथी त्री अजन्मा केहेवायलुं छे. तेमां जे सर्व व्यापक पुरुषोत्तम परमात्मा अने आत्मा ए बेउ अचालित कह्या छे. अने प्रकृती अ-

थवा तत्वना चलित एटले भिन्न भिन्न रुप अने नामो थइ शकेछे. ते तत्व अथवा प्रकृती अव्यक्त एटले कोइ पण शब्दथी वर्णन थइ शके नहीं एवो, तेज मुळ रुपे होय तेने मुळ प्रकृती पण कहेछे. एवुं देवी भागवतना अ. ९ ना श्लो. ६८–६९ मां कह्युं छे. अने तेना जे अति सुक्ष्म अद्रश्य परमाणु जे मुळ कल्पनामां रहेला ते तन मात्रा छे तेने आदी अने अंत नथी, माटे अनादी कहेवाय छे. अने तेज वेदांतनुं मुळ शुद्ध चैतन्यछे. हवे अव्यक्त प्रकृती जे के द्रश्य, अने भिन्न भिन्न नाम अने रुपे थायछे, तेने अनादी कही नथी. केमजे तेना द्रश्यपणाने आदी अने अंतछे, एवुं स्वेतसवत्र उपनीषद अने देवीभागवतमां कह्युं छे. अने एज व्यक्त प्रकृती ब्रह्मांड अने मनुष्यनु उत्पत्ति तात्विक कारणछे. माटे जे प्रवाही ते मुळ, अने ब्रह्मांडादीक साथे वस्तु ते तल एटले अंकुरछे. एवुं अत्री अरण्यकामां कह्युंछे. ए विष भगवतगीताना अ. ८ अने १३ ना श्लो. १८–१९ मां अने मनुस्म्रती वीगेरेमां एवुं कह्युंछे जे, ज्यारे ज्यारे ब्रह्मांडनो अने मनुष्यनो लय थायछे त्यारे, त्यारे, सघळा रुपो अथवा आकृतिओना परमाणुओनुं पृथःकर्ण थइ, ते भिन्न भिन्न रुपो अने आकृतीओनो लय थायछे. अने तेना परमाणओ तेना मुळना तत्वोमां समाइ जायछे. एवी रीते जे लय थायछे ते मनुष्यना मृत परमाणुओना छे; माटे तेने क्षर कहेछे.

माटे जे जन्म अने मरण कहेवाय छे, ते एवी रीते सुक्ष्म परमाणुओना समीलनथी जे शरीरछे तेनेछे, पण ते मुळ परमाणुनी कल्पनानो नाश नथी मात्र रुपांतरज छे. अने तेमां जे, आत्मा रहेलोछे. तेनो पण नाश नथी. केमजे ते अजन्मा अने अभेद अने अछेद छे; हवे मनुष्यनो जे मृत्य अथवा नाश पामनारो भाग ते विषे आ प्रसंगे अधिक विचार कर्याथी, अधिक स्पष्ट रीते समजाइ शकशे.

आपणे उपर जे प्रकृतीना मुळ अने अनादी परमाणु जेने तनमात्रा कहेछे. ते अति महासूक्ष्म तत्व छे. एवुं मनुस्म्रातिना अ. १ ना श्लो. २७ मां कह्युं छे. ते अति सुक्ष्म परमाणुमांथी, जे स्थुळ तत्वो नीकळ्या तेने पृथ्वि जळ तेज वायु अने आकाश एवा पंचमाहाभुतनी संज्ञा मनुस्म्रतीना अ. १ ना श्लो. १९ मां आपीछे. एमां आकाशतत्वने जे, मात्र अवकाश अथवा जगा समजे छे. ते अज्ञानछे. केमजे आकाशतत्व ए अती सुक्ष्म वस्तुछे. एज पंचतत्वोना समीकरणथी महाब्रम्हांड थयुं. तेमज पींडब्रह्मांड पण तेज पंचमहा भूतनुं थयेलुं छे. ते एवी रीते जे, मनुष्यमां जे उष्णता रही छे, ते तत्वनी छे. इन्द्रिओना अवकाषमां आकाष तत्व रह्युं छे. रक्त अने विर्यमां जळ तत्व रह्युं छे. शरीर पृथ्वि तत्वना बंधारणनुं छे. अने श्वास वायु तत्वनुं छे.

एज पंचमहा तत्वमांथी मनुष्य प्राणीना अन्नमय

प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय अने आनंदमय एवा पंच कोष उत्पन थाय छे, ए पंचकोष अने आत्मा, जे तेमां अंतरभुत रहेलो छे, ते तथा परमात्मा सर्व व्यापकपणे रह्यो छे. ते सघळुं मळी सप्त भूमीकानो मनुष्य प्राणी छे. ए विषे विस्तारथी आपणे सुबोध पत्रिकाना पुर्वार्धमां, वर्णन करेलुं छे. तेथी एनो आ प्रसंग विशेष वीचार करवानी अगत्य नथी.

उपर कहेली सप्त भूमीकानो अथवा स्थूळ सुक्ष्म अने कारण, ए त्रिपुटीना सघळा मनुष्य प्राणीओ छे ते छतां ए सघळी सप्त भुमीकानी उन्नती नीरंतर स्वाभाविक रीते सघळा मनुष्यमां समान थती नथी. ते सघळानां बीजो सघळा मनुष्य प्राणीमां छे. ए तो सत्य छे, परंतु ते सघळानी उन्नती, अती आग्रहथी नीयम प्रमाणे करवानो अभ्यास राख्याथीज, कार्यनी सिद्धि थइ शके छे.

आपणे उपर कहेला सप्तकोशमांनो प्रथम कोश स्थुळशरीर छे. ए स्थुळ पंचमहाभुतना संग्रहथी थयेलुंछे, माटे ते स्थुळ इन्द्रिवडे जणाइ शकेछे. अने तेनो नाश थया पछी स्थुळ पंचभुतमां तेना सघळा परमाणुओनुं सर्मीलन थइ जायछे. स्थुळ देहमां रहेलो जीवात्मा पोतानी सारी अथवा माठी त्रणाना योगे सूक्ष्म पंचमाभुतना परमाणुओनो संपुर्ण संग्रह करी, पोतानुं सुक्ष्म शरीर यथार्थ रीते, स्थुळ देहनो त्याग कर्या पछी बहार बीजा लोकमां रहेवाने योग्य थयुं.

एटले, ते जीव स्थुळ देहनो त्याग करेछे. ते सुक्ष्म शरीरमां छये कोश रहेला होयछे. ए सूक्ष्म शरीर अती सुक्ष्म पंचमहाभुतना परमाणुओनुं बनेलुं छे. तेथी तेना अवयवादिक, एवातो सुक्ष्म होयछे जे, ते शरीर साधारण मनुष्यांने स्थुळ चक्षु अने अवयवोथी जोइ अने जाणी शकातुं नथी.

मृत्यु थया पछी, स्थुळ शरीर थंडु थइ जवानुं कारण एछे जे, जीवात्मा जे समये स्थुळ देहनो त्याग करे छे, ते समये जीव स्थुळ शरीरनी सघळी उष्णतानुं आकर्षण सुक्ष्म शरीरमां करी लीधा पछी, ते स्थुळ शरीरनो त्याग करे छे; पछी सुक्ष्म अथवा लिंग शरीर सहीत जीवात्मा जेणे, स्थुळ देहमां रही मन, वाणी अने शरीरथी जेवां कर्म कर्यां होय, ते प्रमाणे उंचा अने नीचा लोकमां रही त्यां केटलाएक काळ सुधी सुख कींवा दुःख भोगवी पोतानी केटलीएक प्रबळ त्रष्णानो क्षय करे छे, एवुं तैत्रीय उपनीषदना ब्रह्मांड वल्लीना बीजा अनुवाकमां अने रघवेदमां कह्युंछे,त्यां लींग शरीरनो क्षय थयापछी पुनर्पि माताना गर्भमां जन्म थायछे.फरी मर्ण पामेछे. फरी जन्मे छे, एवी रीते संस्कार थतां थतां, ज्यारे संपूर्ण रीते सघळी त्रष्णानो ज्ञाने करी नाष कर्या पछी, ज्यारे मायाना आवरण रहित थाय छे, त्यारे बीजा प्रत्येक कोषनो लय थतां थतां, अंते छठो कोष बुद्धि आत्मा सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्य ब्रह्मनी

साथे, समीलन थाय छे. अने तेज कैवल्यमोक्ष अथवा परनीर्वाण कहेवाय छे. एवुं तैत्रीय उपनीषदनी ब्रह्म वलीना पांचमा अनुवाकमां कह्युं छे.

एवी रीतना स्थुळ अने सुक्ष्म द्विरुप, मनुष्य प्राणीनो सिद्धांत रघवेदमां कह्यो छे. ते एवी रीते जे, भुमी एटले प्रथ्वि, असु एटले स्वास, अस्त्रिज एटले रक्त अने आत्मा एटले जीव, एनी स्पष्टता अधिक कर्याथी संस्कारी विद्यार्थिना लक्षमां यथार्थ आवी शकशे उपर भुमि अथवा प्रथ्वि कही ते, मनुष्य प्राणीनुं स्थुळ शरीर छे असु अथवा स्वास एटले सुक्ष्म अथवा लिंग शरीर, अने अस्त्रिज जे रक्त जेमां स्थुळ अने सूक्ष्म शरीरना बंधारणना सुक्ष्म परमाणुओ रहेला छे, अने चैतन्यपणुं ज्ञान आपनार जीवात्मा रहेलो छे, अने एमांथी छये कोषनी उत्पती थायछे अने ते कोश द्रश थया पछी, प्रथकपणे ते केटला एक समय सुधी रही शके छे, अने केटलाएक संस्कारी स्त्रि पुरुषोने ते द्विरुप जणाइ पण शकेछे. एना द्रष्टांतो आर्य वर्तना अति प्राचिन ग्रंथोमां घणां छे पण ते, सांप्रतकाळमां मिथ्या अभिमानी केवळ तार्किक ज्ञानी अने अल्प बुद्धिना मनुष्योने सत्य जणाता नथी, ते माटे हालना समयमां पश्चिम देशमां केटलाएक केवळ सत्य शोधक, अने आग्रही तत्ववेत्ता निष्पक्षपाती विद्वानोए, उपर कहेली सत्यना सिद्ध करेली छे तेना स्वअनुभवनां केटलांएक द्रष्टांतो आ-

स्वार्थी, मिथ्या अभिमानी अने अल्पबुद्धिनां मनुष्यो जेणे एवा विषय उपर कांइज लक्ष आपेलुं नथी तेमने केटलोएक संस्कार थइ, आगळ एवा विषयो उपर लक्ष आपवाने प्रिति उत्पन थइ, केटलेक काळे तेना निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नति थइ शकशे. एटलेथी ए विषय आपणे आगळनी अनकुळता उपर राखी आजनुं व्याख्यान पूर्ण करीये छइये.

संवत १९४२ना कार्तिक वद्य १३ रवीवार.



प्रकरण १२ मुं.

द्विरूप अथवा सूक्ष्म शरीर.

आपणे पाछला व्याख्यानमां सुचना कर्या प्रमाणे, आ प्रसंगे प्रथम जीवात्मा द्विरूप अथवा सूक्ष्म शरीर धारण करी शकेछे, ए सिद्धांतनी पुष्टी, सांप्रतकाळना अति आग्रही अने केवळ सत्य शोधक पश्चिम देशना विद्वानोए निष्पक्षपात रीते केवी रीते करी छे तेनी सुचना कर्याथी, आपणा देशना केवळ पश्चिम देशनी केळवणीनी सत्तावाळा पण सत्य शोधक पुरुषोने जीवात्माना सुक्ष्म रूप विषे द्रढ नीश्चय थशे.

अमेरीका देशना न्युयोर्कनो रेहेनार प्रोफेसर डी, बेबीट एवुं कहे छे जे, आपणे आपणा पींड

ब्रह्मांडमां एक महा अद्‌भुत जे श्रष्टि छे ते कोइ समये प्रयत्न कर्याथी जोइ शकीए छइये अने वळी केटलाएक शंस्कारी मनुष्योने पोताना सुक्ष्मरुपनुं ज्ञानपण थइ शके छे, अने केटलेएक समये पोतानुं सुक्ष्म शरीर अथवा लिंगदेह बाहार नीकळी पोताना स्थुळ शरीरने जोइ शके छे " एक समये एक वीद्युत चैतन्यनी विद्यामां कुशळ अंग्रेजे, पोतानुं लिंग शरीर जोयेलुं छे." वळी लिंग देहनो सिद्धांत जर्मनी देशमां हाल घणो प्रसिद्ध छे, तेने "डोवेलगेन्ठार कहेछे" वळी ठपलो विद्वान एवुं कहे छे जे. "मने एवा केटलाएक मनुष्यनो समागम थयेलो छे जे तेनुं पोतानुं सुक्ष्म शरीर केटलेएक प्रसंगे स्थुळ शरीरमांथी बाहार नीकळी, तेने पोते जोया करे छे. अने तेने पाछु पोताना स्थुळ शरीरमां प्रवेश करवानेअति कठण पडे छे. ते सुक्ष्मना जीवात्माना प्रकाशित परमाणुओ तेना पोताना स्थुळ शरीरमां रहेला होय छे, तेने लिधे कोइ प्रसंगे, ते वर्णन थइ नहीं शके, एवी अंतर श्रष्टिनो प्रकाश जोइ शके छे. दाक्तर क्लेवलेन्ड एणे पोताना "डेलीयुज" नामना पुस्तकना ३६७ना प्रष्टमां एवुं कह्युं छे जे " एक सुथार एक समये पालक उपरथी नीचे पडी गयो, ते मनुष्ये पोते एवुं कह्युं छे के, जे समये हुं भोंय उपर पड्यो हतो ते समये मने एवुं जणायुं जे, मारुं नवुं रुप उत्पन्न थयुं, अने ते रुप बीजा माणसना टोळामां जइ,

मारुं भोंय उपर पडेलुं जे जुनु शरीर तेने ते जुए छे. अने ते मारा नवा रुपने ते जुना शरीरमां जवाने अति घणो प्रयत्न करवो पड्यो पछी अंते ते रुप तेमां गयुं. ए द्रष्टांत आपी उपलो विज्ञान एवुं कहेछे जे, जे मनुष्य निर्मळ बुद्धिना अने निष्पक्षपातीछे, तेमने आ दृष्टांत उपरथी अम्मर जीवात्मानो सिद्धांत समजी अती आनंद थशे. आपणुं बाहारनुं शरीर कीटादीकथी जलदी नाष पामे एवुं छे. अने मृत्यु थया पछी, तेनुं प्रथ्थकरण पण अल्प समयमां थइ जायछे. परंतु अंतर अथवा सुक्ष्म शरीर प्रकाषना कर्ता अथवा कांइ पण जाणीता सुक्ष्म वातावर्ण करतां पण अति सूक्ष्म छे. अने तेनां परमाणुओ सडी जवाना परमाणुओ जेवा नथी, तेथी ते घणा समय सुधी रही शके छे. ए विषे केटलाएक तार्किक ज्ञानीनुं एवुं केहेवुं छे जे, जेने विचार करवाने स्थुळ मनोमय चक्र नथी तेनाथी कल्पना थइ शके नही. ए वात केटले एक अंशे सत्य छे, परंतु सुक्ष्म रुप अति निर्मळ प्रकृतीना परमाणुओना संग्रहथी थाय छे, तेथी तेने तेवुंज सुक्ष्म मनोमय चक्र अने ते शीवाय सघळी स्थुळ शरीर जेवी वस्तुओ होय छे, पण ते अति सुक्ष्म होय छे, अने ते जाते चैतन्य रुपज होय छे. एवुं उपला विद्वाने स्पष्ट कर्युं छे.

सांप्रतकाळना घणा विद्वानो, सुक्ष्म शरीरना सिद्धांत सत्य मानता नथी, तेनुं कारण आपणे उ-

पर कहेलो प्रोफेसर वेवीट नामे विद्वान एवुं कहे छे जे, "हालना विद्वानो पोताना सोधो अने लक्ष जीवात्मा संबंधीनी जे अद्‌भुत विद्या, तेणी तरफ लगाडता नथी, पण घणा विद्वानो प्रकृतीना स्थुळ तत्वो संबंधी विचार करवामां पोतानुं लक्ष तन अने मनथी लगाडे छे; अने वनस्पति, धातु, प्राणीओना हाडपिंजर, अने कीटादी वीगरे प्राणीओ,ए सघळा विषयो उपर मोटा-मोटा ग्रंथो लखे छे; परंतु अति अद्‌भूत जे जीवात्मा संबंधी विषय ते जाण्या शीवाय सघळी श्रष्टि केवळ नीर्माल्य जड जेवीज छे,तेना अलोकीक ज्ञान मेळववाने ते विद्वान गणायला पुरुषो शक्तीवान नथी, तेवी विद्याना पोते शत्रु जेवा जणाय छे, अने एवा पुरुषो फरी फरीने, पोतानी वैदक शाळाना शव, अने हाडकां, कापवाना ओरडामां जाय छे अने एवुं अभीमानथी बोले छे जे, हमेज सत्यविद्या सोधी काहाडी, सत्यनो निश्चयपण हमे करी शकीये छइये. एवी रीते ते विद्वान छतां अंधपरंपराने एकज मार्गे जाय छे, तेथी ते गुचवणमां पडी तेमनुं ज्ञान अपूर्ण रहे छे" ए प्रमाणे निष्पक्षपाती उपला विद्वाननी सुचना सत्य अने अति उपयोगी छे.

एवी स्थितना समये हाल, केटलाएक केवळ सत्य शोधक विद्वानो पश्चिम देशमां नीकळवा मांड्या छे; तेवा लोकोनी भिन्न भिन्न मंडळी थइ तेमणे

जीवात्मा संबंधी सत्य विद्या अने तेथी थता अलो-
कीक चमत्कारो विषे अती आग्रहथी, अभ्यास क-
रवा मांड्यो छे ए मोटी आनंदनी वात छे. तेमांनो
एक महा विद्वान तेन्डोल " नामे ग्रहस्थ पोताना
एक (फ्रेग्मन्ट ऑफ सायन्स) ग्रंथमां एवुं कहे छे जे
जे मनुष्यने इश्वरी दिव्य द्रष्टि थयेली छे, एवा जे
कोइ महा समर्थ विद्वानो धर्माधीकारी, अने यो-
गीयो ते सघळाने आपणे नीर्मानी थइ, आपणुं शीर
नमावी आपणुं अज्ञान कबुल कर्याथी आपणे कोइ
समये महा अदभुत अने अलोकीक सत्य ज्ञान जा-
णवानो संभव छे; अने तेम थयेथीज आपणे सत्य
पुर्षार्थ करी सघळी पृथ्वीमां मनुष्य प्राणीनी उत्तम
स्थिति करवानुं महत्वनुं साधन मळी शकशे.

आपणे उपर कह्युं जे लिंगदेह अथवा सुक्ष्म श-
रीर, स्थुळदेह नीरउपयोगी थया पछी अने तेना-
थी मुक्त थया पछी, स्थुळ देहमां रही तेणे जेजे, शु-
भ कींवा अशुभ कर्मों कर्यां होय, ते सघळानुं शुभ
कींवा अशुभ फळ अंतरीक्षमां ते भोगवे छे. पछी
द्रढ थयेली त्रष्णानो केटलोएक क्षय थया पछी आ-
गळ पुनरावृत्तिना नियम प्रमाणे, फरी मृत्यु लोकमां
आवी जन्मे छे. तेमां पूर्वे जेवा प्रकारनी उन्नति क-
री जेवां कर्मो करेलां छे, तेवी त्रष्णानो फरी देह
प्राप्त थइ तेवा फळ भोगववानी त्रष्णा वारंवार उ-
त्पन थया करे छे. एवी रीते ज्यां सुधी केवळ सत्य

एक परब्रह्मनुं ज्ञान प्राप्त थइ, कोइपण जातनी शुभ कींवा अशुभ कल्पना रेहेती नथी, एटले कल्पनानो केवळ नाष थतां सुधी उर्धव गती थइ, अंतरीक्षमां आपणे पूर्वे वर्णन करेली छये स्थितिने पामेछे, त्यार पछी संपूर्ण कल्पनानो लय थयो एटले, केवल्य मोक्ष अथवा पर नीर्वाण पद प्राप्त थइ, पोते पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंदथी भीन्न रेतो नथी ते पोतेज थाय छे.

आ प्रसंगे एटलुं केहेवानुं अगत्यनुं छे के, मनुष्य प्राणी जे समये स्थुळ देहनो त्याग करे छे, ते समये, स्थूळज्ञान अने स्थूळ इन्द्रिओनो नाष थायछे, एतो सत्य छे, परंतु सुक्षरूपमां, जे सुक्ष इंद्रियो छे, तेमां मनुष्यना पूर्व जन्मना मन कर्म अने वचनोना कर्मोनुं आकर्षण सूक्ष्म देहमां थाय छे, ते कर्मो सूक्ष्म देहनी साथे जडीभत थाय छे, अने ते घणे प्रसंग घणा मनुष्यने जणाय पण छे. वळी एटलुं लक्षमां राखवानुं अगत्यनुं छे के, मनुष्य प्राणी जे कल्पना करे छे, वाचाथी बोले छे, अने इन्द्रियो द्वारा कर्म करे छे, ते सघळा समये तेनामांथी जे, अति सुक्ष्म तेज नीकळे छे. तेमां प्रकृतीना परमाणुओछे. पण ते केवळ जड रूप नथी, तेमां प्राणना परमाणुओ रहेला होय छे, तेथी ते जीवंन छे, ते विद्युतना जेवी अति सुक्ष्म अगणीत चणगारीओ आकाषमां उडे छे, तेनाथी सघळुं ब्रह्मांड छवाइ रह्युं छे. आ जीवन परमाणूओ एटलातो बळवान होय छे के, जे कांइ

तेना संबंधमां आवे छे. तेमां ते प्रवेश करे छे एटलुंज नहीं, पण आघात अने प्रत्याघातना नीयम प्रमाणे तेमांथी पाछो प्रत्याघात थइ, जे मनुष्यमांथी ते परमाणुओ नीकळेला होय तेने पण, केटलीएक असर कर्या वीना रेहेता नथी. माटे नीरंतर मन, कर्म अने वचनथी सावध रही ए त्रणेनो योग्य उपयोग करवो.

ए उपरथी निश्चय समजवुं के, मनुष्य प्राणीना पुर्वजन्ममां मानसिक, वाचीक अने कायीक कर्मोथी उत्पन थयेला जे उपर कहेला घट थयेला सुक्ष्म प्रबळ परमाणु, अथवा शक्ति तेज मनुष्यना बीजा जन्मनुं बीजछे.अने तेमांथी देहरुप वृक्ष थइ, तेमांथी ते पुर्व कर्मोना फळ पोते भोगवेछे. एज बीजने विष्णु पुराणना अ. १९ ना श्लो. ५ मां अने पिंगळ उपनीषदमां कारण शरीर कह्युंछे. ए कारण शरीर आपणे पाछळ कहेला पंचकोशमांना एक जातना आनंद मय कोशनुं बनेलुछे. अने ए कारण शरीर ज्यांसुधी जीवात्मा स्थुळ अथवा सुक्ष्म शरीरमां घेराइ रहेलोछे त्यांसुधी जीवात्माने वळगी रहेछे. अने जीवात्मा त्रणा रहित थइ, उपर कहेला स्थुळ, अने सुक्ष्म शरीरना बंधनोमांथी छुटो थयो एटले, कारण शरीर संपुर्ण लय पामे छे. अने आत्मा पोतानुं अनादीनुं नीर्मळपणु धारण करेछे. ते समये कारण शरीरनो केवळ नाश थायछे.ते सघळु कैवल्य मोक्ष पामवाना

समयनी स्थितियेज थायछे. त्यांसुधी कारण शरीर अथवा पुर्व कर्मनुं परीणाम रुपबीज, मनुष्य प्राणीमां अति बळवान होयछे. अने मनुष्यप्राणीने कर्म करवाने वलण करवानी शक्ति तेमां अति घणी भारी रहेली होयछे.

आ सघळु कर्मना योगे थायछे. कर्म एटले पाछळ कीधेला कार्यनुं फळ भोगवता जइ, आवता जन्मने सारु नवा जे कार्यो करवानाछे ते कर्म एक सत्य न्यायछे. एटले मनुष्यप्राणी पोते जेवा शुभ कींवा अशुभ कर्म करे,तेवा सुख कींवा दुःखने प्राप्त थाय छे माटे एने यम राजा कहेछे. एटले यम शब्दनो अर्थ यम यत ईतियमः एने समवर्ती पण शास्त्रमां कहेछे. एटले सम अथवा समान न्याय करनार माटे धर्म राजा पण कहेछे.

ए माटे संसारमां कर्मना योगेज, मनुष्यप्राणीमां भिन्न भिन्न वृत्ति अने भिन्न भिन्न स्थिति थायछे; तेमज सुख अने दुःखना भिन्न भिन्न प्रकारो थयेलाछे, ए सघळानुं कारण मनुष्यप्राणीनी स्वतंत्र इच्छाशक्ती छे. जेने अद्रष्ट एटले गुप्त–देखाय नहीं एवी शक्ती कहेछे. माटे प्रारब्ध, अद्रष्ट, भाग्य, ए सघळा कर्मनाज नामोछे. अमरकोशमां कर्मने नियती एटलेप्रथमथी निश्चय करेलु अने विधि एटले नियम करेलो होय छे. एटले ज्यारे मनुष्य कर्म करेछे, त्यारे ते पोताना कर्म प्रमाणे तेना पुनरजन्मनुं भाग्य ते निश्चय करेछे हवे

एटलुं निश्चय समजवुं जे, मनुष्यप्राणीना सघळा कर्ममां तेना पुर्वना कर्मनुं वलण अथवा सत्ता होयछे. श्रीकृष्ण भगवाने भगवद्‌गीताना अ. १८ ना श्लो. १३-१४ १५ मां एवुं कह्युं छे जे मनुष्यप्राणी जे, सत्य अथवा असत्य कांइ पण कर्म करेछे ते परीपुर्ण रीते करवामां १कर्त्ता. २निश्चयात्मक इच्छा. ३ते कर्म करवाने साह्य करनारा जीव्हादीक इन्द्रियोना साधन४ते साधनोनो उपयोग करवो. अने ५ तेना पुर्वकर्मनी प्रेरणा अथवा वलण ए पांच शिवाय काइपण कार्य थइ शकतुं नथी. कर्मना न्याय विषे मत्सपुराण, महाभारत, अने रघवेद विगरे शास्त्रमां आपणे उपर कह्युं एवी रीते स्पष्ट कह्युं छे. कोइ पण मनुष्य पोताना स्वार्थनी वृत्ति अने पुर्ण इच्छा ए बेउ उत्पन कर्या शिवाय कोइ पण कार्य करी शकतो नथी, माटे मनुष्यप्राणीमां स्वतंत्र इच्छाशक्ती रहेलीछे, तेनाज योगे पोते सघळा कर्मो करेछे.

मनुष्यप्राणी पोतानी स्वतंत्र इच्छाशक्तीना योगेज, पोते सुख अने दुखने प्राप्त थायछे ए वीषे वेद अने शास्त्रोमां घणा प्रमाणो छे. तेमां चांडोग्य उपनीषद अने विष्णुपुराणना अ. ६ ना श्लो. २२ अने ३० मां एवुं कह्युंछे जे "मनुष्यप्राणीने बंधनमां नाखनार अथवा तेने मोक्षनी प्राप्ती करनार तेनुं पोतानुं मनज छे. ज्यारे मन इन्द्रियोना विषयोमां आसक्त थायछे, त्यारे बंधनने पामछे. अने मन ज्यारे

इन्द्रियोना विषयथी विरक्त पामछे, सारे मायाना आवरणथी मुक्त थइ, मोक्षने मार्गे जइ शकेछे. वळी एवुं कह्युंछे जे, जे मनुष्य सत्यज्ञाननी परीक्षा करी, तेने ओळखी शकेछे, तेज मनुष्य पोतानुं मन, इंद्रियोना विषयोथी, विरक्त करी शकेछे. वळी रघवेदना अनुवाक ८ ना मंत्र १९--२० मां एवुं कह्युंछे जे मनुष्य प्राणीओने, पोताना मनना विकारो साथे युद्ध करवामां तेमना मन उपर पुर्ण सत्ता बेसाडवानी प्रथम अवश्य अगत्य छे.

ए सघळु छतां सांप्रतकाळना घणु करी सघळा मतपंथोमां अने संप्रदायोमां मनुष्यप्राणीने केवळ निर्माल्य अने एक साधारण यंत्र करता पण अशक्त गणेलोछे घणा मनुष्यो एवुं कहेछे जे मनुष्यप्राणी पोतानी इच्छावडे कांइ करी शकतो नथी, ते सघळुं इश्वरनी प्रेरणाथीज करी शकेछे. एक झाहाडनुं पान पण इश्वरनी इच्छा वगर हाली शकतुं नथी एवुं कहे छे, ते घणुं आश्चर्यछे. एना मुख्यत्वे करी बे कारणो आपणा जाणवामां छे. केटलाएक मनुष्यो घणा धर्मना केवळ जुस्साने लीधे, पोताने निर्माल्य समजी सघळा कार्योनो इश्वरनी शक्ती उपरज आधार राखे छे. आपणे जे श्वास लइये अथवा आपणे इन्द्रियोने हलावी शकीये, तेमां पण इश्वरी शक्तीनी अगत्य समजे छे, ते एवुं कहेछे जे इश्वर तेना पूर्वेना कर्म प्रमाणे तेने सुखदुख प्राप्त करेछे, अने तेना अवयवो

आदीकने गती आपेछे, पण एवा मनुष्य एटलो विचार करता नथी जे प्रथम पुर्वेना भिन्न भिन्न कर्म, आपनार इश्वरने, ठराव्याथी इश्वरने पोतेज अन्याइ ठरावेछे. केमजे प्रथम मनुष्यनी उत्पत्तिना समये भिन्न भिन्न कर्म कोनी इच्छाथी करी शकेछे, इश्वरनी इच्छाथी कहीयेतो, परमकृपाळु इश्वरमां अन्यायनो दोष ठरे छे माटे एवो निश्चय अल्प ज्ञानने लीधे मिथ्याछे.

इश्वरने सर्व कर्मनो आपनार ठराववानु कारण एवुं जणायछे जे महाभारत अने भगवतगीता विगरे संस्कृत ग्रंथोमां दैवंम एवुं कह्युंछे. ते उपरथी अल्पज्ञानी ते दैवते इश्वरज समजेछे परंतु अमरकोष अने मत्सपुराणना अ. १९५ अने २१९ मां स्पष्ट रीते दैवमनो अर्थ, मनुष्यप्राणीओ जे कर्म करेछे तेनुं परीणाम, अथवा असर तेनेज, कर्म कह्युंछे ए सिद्धांतनी पुष्टी वायुपुराणना अ. ८ ना घणा श्लोकोमां स्पष्ट रीते करेलीछे माटे दैवम तेज कर्मछे. इश्वर नहीं एवुं महाभारतना अनुसासन पर्वना अध्याय आठमामां पण कह्युंछे.

रघवेदमां पापना मुळ विषे एवुं कहुं छे जे मनुश्यनुं प्रारब्ध अथवा नशीब पोताना कर्मने लीधेज छे एटले मद्यपान क्रोध अने अज्ञानने लीधे दुष्ट कर्म करी शकायछे. विष्नु पुराणना अ. ६ ना श्लो. ४ मां मुळ आत्माने स्वच्छ नीर्मळ अने निर्वाणमय

कह्यो छे. पण पापनु कारण कर्मना संग्रहथी जे आवरणछे, तेने लीधे देह प्राप्त थइ, तेना बंधनने लीधे कोइना उपर स्नेह, अने कोइना उपर अप्रिति करे छे. एवुं भगवतगीताना अ. २ ना श्लो. २४मां कह्युं छे. ज्ञानना योगे शुभ कर्मथीज, आत्मानी उन्नती थइ मोक्षने पामेछे; अने अशुभ कर्मथी नीचा पशु विगेरेना गुणो प्राप्त थइ, पुनर्पि देहने प्राप्त थइ, जन्म मर्णने भोगव्या करेछे. माटे विषयादीक भोग भोगववानी जे पशुतुल्य तिक्षण त्रष्णा, तेथी अनेक प्रकारना विकारो उत्पन थायछे, विकारोमांथी क्रोध उत्पन थायछे, क्रोधमांथी अज्ञान, अने अज्ञान उत्पन थवाथी स्म्रति अने ज्ञाननो लय थवा मांडेछे, अने ज्ञाननो लय थयो एटले, सत्य असत्यनो निर्णय करवानी शक्ति जायछे, अने ते गयाथी सर्वस्व नाश पामेछे, एवुं भगवतगीताना अ. २ना श्लो. ६२इत्यादीमां कह्युंछे. माटे कर्मनो न्याय मनुष्यप्राणीनी उत्पतिना समयथीज छे. ते प्रारब्ध कर्म भोगव्या शीवाय तेनो लय कोइ पण रीते थइ शकतो नथी. गमे तेवो महान पुरुष होय, पण तेने प्रारब्ध भोगववुंज पडेछे. एवुं महाभारतना अनुसासन पर्वमां, देवी भागवतना अ. ९ ना श्लो. ७२ मां विष्णुपुराणमां अने मनुस्म्रती इत्यादी शतशास्त्रोमां स्पष्ट रीते कह्युंछे. हवे आ प्रसंगे एटलुं केवानुं अगत्यनुंछे के, जे महान पुरुषो आत्मज्ञानी अने योगीयोछे ते प्रारब्ध कर्म

भोगवता छता तेमने तेनी असर जणाइ शकती नथी. तेनुं कारण ए छे जे तेमनी मनोवृत्ति नीरंतर आत्मस्वरुपमांज रहेछे तेथी तेना अखंड आनंदमां तेओ सदा निमग्न रहेछे. एटलेथी ए विषयनी समाप्ती करीये छइये.

संवत १९४३ ना मार्गशिर्ष शुद्ध ३ने रवीवार.



प्रकरण १३ मुं.

गुप्त विद्यानुं अनुभवी ज्ञान.

आपणी सभाना तेमज बीजा पण आग्रही अने गुप्त विद्यानुं सत्य ज्ञान मेळववानी इच्छा राखनारा निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति पामेला जनोने सारु सांप्रतकाळमां पश्चिम देशना जर्मनी देशना महा आग्रही, बुद्धिवान, सत्य शोधक, अने गुप्त अथवा योग विद्यानुं महा अद्भुत ज्ञान मेळववानी इच्छा राखनारा पुरुषोमां अनुभवी योग विद्याना ज्ञाननुं श्रवण, मनन, अने निदिध्यास करवानो केवी रीतनो प्रकार चाले छे; तेनी अल्प सुचना अति परोपकारी एफ हार्टमेने थोडा दीवस उपर प्रसिद्ध करी छे, तेमांनो सार, आ प्रसंगे जणाव्याथी, सुज्ञ अने विवेकी पुरुषोने निश्चय कांइ पण विशेष लाभ थइ शकशे.

परोपकारी अने आग्रही हार्टमेन एवुं कहेछे जे

"अनुभवी गुप्त अथवा योग विद्या संबंधी घणा ग्रंथो लखायला छे, अने ते विषे वारंवार घणुं कहेवायलुं पण छे, ते छतां आ शब्दना अर्थनुं अल्प ज्ञानपण घणा थोडाजमनुष्य प्राणीओने हशे. अनुभवी योगविद्या एटले मात्र ते विद्याना घणा पुस्तको वांचवा, अथवा ते महाविद्यानो अभ्यास करवो, अथवा पुन्यदान करवुं. अथवा धर्मना मार्गोनो प्रसार करवो, अथवा तेमां श्रेष्ठत्व मेळववी, अथवा सद्गुण मेळववाने प्रयत्न करवुं, एटलुंज कर्तव्य नथी. परंतु मुख्य कर्तव्य सत्य विचारनु बंधारण अथवा द्रढता करवी एछे. उपर कहेला सघळा साधनो जे मुळ प्रवाहमांथी अमृत नीकळेछे, ते मार्गे जवानाछे, एमांतो कांइज संशय नथी. परंतु मात्र निर्मळ अमृतना प्रवाह पासे जवाथी, कार्यनी सिद्धि थइ शकती नथी; जो आपणे अम्मर अथवा मृत्यु रहित थवुं होयतो, ते अमृतना प्रवाहमांथी, अमृतनुं पान करवानी अगत्य छे. चैतन्य ज्ञान संबंधी पुस्तको अने व्याख्यानो अध्यन अने मनन करवाथी, चैतन्यनुं आकर्षण करवाने ते अति उपयोगी पडेछे. अने केटलेएक समये कदापी तेनी द्रढता अने संग्रह थइ शके. परंतु आपणी ऐक्यता ते चैतन्यनी साथे ज्यांसुधी थइ नथी, त्यां सुधी, आपणे जेवी रीते ते ज्ञान आव्युं होय तेवी रीते पाछु जतु रहेवानो मोहोटो भय रहेलोछे. ए ऐक्यताने संस्कृतमां योग कहेछे. एटलुं कही हवे

ऐक्यता अथवा निचलाने उपला साथे एकत्र करवुं, एटले शुं, ए वीषे उपलो विद्वान अल्प सुचना नीचे प्रमाणे आपेछे.

"मनुष्यप्राणी पोतानी आसपासना वातावरणना महासागरमां रहेछे. ते शीवाय तेनाथी जीवी शकाय पण नहीं. ते उपला वातावरणमांथी, श्वास लेवानी हृदय पासेनी नळीद्वारा सूशुमणा मार्गे श्वास लेछे, अने तेमां ते हवामांथी केटलाएक प्राणवायुनो तेना शरीरमां संग्रह थायछे. ते स्नायुओना रक्तना केटलाएक परमाणुओनी साथे मिश्र थइ, ते स्नायुना रक्तने प्राणवायुरुप करी तेने मोटी नसोमां आरोपण करेछे. अने ते समये ते रक्त पोतानुं पोषण विर्यमांथी खेंची काहाडेछे. अने विर्य पोतानुं पोषण, जे, अन्न जठराग्निमां जइ शुद्ध थइ, जे निर्मळ रस थाय छे, तेमांथी काहाडेछे. एवी रीते एकठु थवानी क्रीयाना समये छुटा पडवानी पण क्रीया थायछे. प्राण वायु थोडा समय सुधी ते रक्तमां समीलन थइ तेमां संग्रह थइ रहेछे. पण तेमांथी ते पाछो इन्द्रियोद्वारा घणा प्रकारे जतो रहेछे. माटे जो कदापी आपणे श्वासथी लीधेला प्राणवायुने, अनुभव कर्याथी राखी मुकवानी शक्ति होय, अने ते प्राणवायुने जता अटकावी शकीये तो आपणु शरीर नीरंतर रही शके, अने तेनो नाश थाय नहीं"

सघळी श्रष्टिनी आसपास तात्विक हवा अथवा

वातावरणना महासागर शीवाय, बीजो एक तेना कर्ता अधिक नीर्मळ अने आकाषिक महासागरछे, ते उपर कहेली हवाना कर्ता अधिक अद्रश्य अने लागे नही एवोछे. ते महासागर जीवंत चैतन्यनोछे. जे प्रमाणे हृदय पासेनी नळी अथवा सूशुमणाद्वारा, मनुष्यप्राणी तात्विक हवा श्वासथी लइ शकेछे, ते प्रमाणे मनुष्यनुं हृदय, जीवंत चैतन्यनो श्वास लइ शके छे. मनुष्यना हृदयकुमळमां उंडाणमां एक गुप्त महा चैतन्यना सूर्य अथवा इश्वरना एक अंसनुं मध्य स्थान छे. ते घणा साधारण मनुष्यमां आवरणथी छवायलु अजाण स्थितिमांछे. ते चैतन्यना जीवन सारु, ते पोते अगत्यनी चैतन्यनी हवानुं आकर्षण करी शके छे, अने तेथी तत्वना बंधारणवाळा हृदयने, गती आवी शके छे. अने तेथी शरीरनी श्वासोश्वासनी क्रीया थइ शकेछे. उपर कह्या प्रमाणे हृदयकमळ चैतन्यनो श्वास लेछे, अने तेनी पासे रहेली नळीओ हवानो श्वास लेछे. अने जेम आसपासना हवाना महासागरमांथी, थोडी हवा श्वासोश्वासथी, मनुष्य प्राणीमां आवजावनी क्रीया करवाथी, तेना स्थुळ शरीरनी इन्द्रिओ द्रढ करवाने सहाय करेछे, तेम आसपासना चैतन्यना महासागरमांथी, थोडो भाग मनुष्यना चैतन्यना मध्यबिंदुमां प्रवेश करी, निद्रावस्थावाळा चैतन्यना बीजने, जाग्रत करी शके छे; अने चैतन्यना प्रवाही बीजनी उन्नती करी शके छे.

अने अंते मनुष्यना निर्मळ थयेला जीवात्माना निर्मळ तत्वोथी, ते चैतन्यने पोषण मळी, ते मनुष्यने बदली पुनरजन्मवाळो करेछे. जे प्रमाणे मनुश्य अने पशुपक्षादीक जीवंत प्राणीना स्थुळ शरीरनो आधार तेना श्वासोश्वास लेवा उपर रहेलोछे ते प्रमाणे चैतन्यना जीवननो आधार चैतन्यनो संग्रह श्वासथी करवा उपर रहेलोछे; अने तेने द्रढ करी राखी शकवो, ए पोताना अंतरमां तेने इच्छारुप करी, स्थाइक राखी मुकवानी शक्ति उपरछे. एवी रीते थया पछी जो मनुश्यना चैतन्य मध्यबिंदुनी सर्व व्यापीक चैतन्यना महासागरमांथी यथा योग्य चैतन्यनी ते चैतन्यस्थाने ऐक्यता थइ तो, पछी आत्मिक ज्ञाननी उन्नती थइ, चैतन्यनो प्रकाश जणाववा मांडेछे. अने ज्ञाननी स्फुर्णाथी, सत्यतानुं सत्यज्ञान प्राप्त थायछे. तेने मानसिक ज्ञाननी, अथवा कोइना अभिप्रायनी अगत्य रेंती नथी ते जेम सूर्य सघळा पदार्थोने प्रकाशित करेछे, तेम ते चैतन्य जीवात्माने प्रकाशमान करे छे. ते बुद्धिज्ञानरुपी चंद्रने प्रकाश आपे छे, ते छतां आत्मा संबंधी सत्यता सारु तेने पछी बुद्धिज्ञाननी पण अगत्य रेहेती नथी.

आ क्रिया साध्य करवाने सारु जे शक्तिनी अगत्यछे, ते प्रबळ थयेली विचारशक्ति अथवा कल्पनाजछे. कल्पना अथवा विचार जो शद्बना योगे जणाव्यो तो ते चंचळ, शक्तिवान, अने दर्शिक थाय

छे. अति प्राचिनकाळना महा समर्थ आत्मज्ञानी अने योगेश्वरोनो एवो सिद्धांत छे के,सर्वोपरी प्रथम कारणनी क्रियारुप कल्पनानुं परीणाम जे, सघळु ब्रह्मांड अने तेमांना जडचैतन्यादीक रुपो, तेमां मनुश्यप्राणीना रुप सहीत जे सघळुछे ते कल्पनानुज परीणामछे. एवा इश्वरी महापुरुषनी क्रियावाळी इच्छाशक्तिना शब्दथी, प्रकाशमान थइ सघळी नाम अने रुपवाळी वस्तुओ द्रष्टोत्मतिमां आवी शकेछे. जो कदापी मनुश्यना जीवात्मामां रहेलो सर्व व्यापिक महाकारणनो अंश जाग्रत थइ, पोतानु महा अलोकीक ज्ञान अने शक्तिनो प्रकाश करे तो, ते मनुश्य पोते अमृत, स्वज्ञानी, सर्व शक्तिवान, अने सर्वज्ञ थइ, तेना अंतनु परीणाम जे थायछे, ते कोइपण जातना उत्तम मानसिक ज्ञानथी जणाइ शकतुं नथी. हवे एटलुं लक्षमां राखवानुं अगत्यनुंछे के, मनुश्यप्राणीनी गमे तेटली उत्तम कल्पना शक्ति होय तोपण तेनाथी पोतानी इच्छा प्रमाणे पोतामां रहेला इश्वरी चैतन्यना बिजने जाग्रत करी शकातु नथी; ते बीज पोतानी इच्छाथीज जाग्रत थाय तो ते थइ शकेछे. जे आदी अथवा क्षरछे, तेनाथी अनादी अथवा जे अक्षर छे तेने पोतानी सत्तामां राखी पोतानी आज्ञा प्रमाणे वर्तावी शकातु नथी. ते क्षर मात्र एटलुं करी शके के, जेथी अक्षर जाग्रत थइ क्रिया करी शके. क्षर मनुष्य,अक्षर ब्रह्मसारु देवाळय बांधी शके पण तेमां

निवास करवानुं मात्र अक्षर ब्रह्मनेज स्वाधीन छे."

वळी एफ, हार्टमेन एवुं कहेछे जे, "अनुभवी गुप्त अथवा योगविद्या एटले पोतानी शुभ कल्पनाओ हृदयना मध्यमां उंडी स्थिति करवी. ए शुभकार्यना विरुद्ध जेटली बीजी कल्पना होय ते मुळमांथी काहाडी नाखवी. अने शुभ कल्पना अक्षर, शब्द, अथवा नीशानीद्वारा लक्षमां राखवी. एवी रीते द्रढ आग्रहथी कर्ता कर्ता, ते अक्षर, शब्द अथवा नीशानी आपणा अंत्तरमां धीमे धीमे चेतन रूप थता जशे. ते आपणे आपणा अंतःकरण अने इन्द्रियोथी सांभळी शकीशुं, अंत्तर अथवा दिव्य चक्षुथी जोइ शकीशुं, अने अंत्तर सुक्ष्म इन्द्रिद्वारा स्पर्ष करी शकीशुं. ते शीवाय बीजी पण अंत्तर इन्द्रिओ उघडशे. अने अंत्तर शक्तिनो केटलोएक देखाव जणाववा मांडशे. ते शक्ति केवा प्रकारनी होयछे ते विषे सांप्रत समयमां प्रसिद्ध करवुं योग्य नथी. ते नहीं केहेवानुं कारण आपणी मोहोटाइ दर्शाववी कींवा लोकोथी ते ज्ञान अक्षय गुप्त राखवुं ए एमांनुं कांइज नथी. पण योग्य समय विना ते जाणवाथी जे विद्यार्थि तेन शुभ परीणामनी इच्छा राखेछे, तेनी कल्पनाने हानी रूप थायछे. केम जे, तेना मनमां ते अद्भुत शक्तिनी कल्पना आव्याथी, तेनी एकाग्रतामां मोटो विक्षेप पडी, तेनी वृत्ति चलीत थायछे, तेथी तेना धारेला कार्यनी परीपुर्णता थइ शकती नथी. ए प्रमाणे नि-

पक्षपाती केवळ सत्यशोधक अने आग्रही हार्टमेन कहेछे.

वळी ए अगत्यना विषय संबंधी एक बीजी उपयोगी सुचनानो विचार करीये एवुं विद्वान हार्टमेन कहेछे. आपणे उपर कहेलो जे अक्षर अथवा शब्द छे, ते चैतन्यजीवन मेळव्याथी प्राप्त थायछे अने तेनी जे अद्‌भुत शक्तिछे ते घणा थोडाना जाणवामां आवे छे. जे शब्द, अक्षर, अथवा नीशानी आपणे एकाग्रता सारु लइये, ते कांइ परमाणु रहित खाली नथी; केमजे ते जीवन शब्दना कार्यथी ते शब्दने अनुकुळ आवे एवा जे तत्वो, मनुष्यना बंधारणमां रहेला छे, तेमां पण ते शब्दथी जीवनपणु आवेछे, अने ते आपणी सत्तामां राखवा जोग होय ते छता, तेने सत्तामां नहीं राखीयेतो, ते अयोग्य रीते वर्त्याथी परीणाम भयंकर थइ पडेछे. ते विवेक अथवा सत्य असत्यना न्याय करवानी शक्तिनो नाश करेछे. अने तेथी स्थुळ शरीरमां पण व्याधी विगेरे उत्पन थायछे. सघळा मनुष्यप्राणीना शरीरना बांधा समान होता नथी. माटे जे क्रिया एकने उपयोगी पडे, ते बीजाने नीरुपयोगी अने दुखदायक केटले एक समये थायछे, ते माटे प्रथम विद्यार्थिये कोइ आत्मज्ञानी अथवा महा प्रतापवान अनुभवी योगीनी सहायता, एवा कार्योमां लेवानी अवश्य अगत्यछे. अने ज्यां सुधी विद्यार्थिनी अंतर इन्द्रियोनो प्रकाश थइ आत्मज्ञाननो प्रकाश थाय त्यांसुधी तेवा अनुभवी गुरुनी

पासे एकाग्रताना उपदेशनो शब्द अथवा नीशानी लेवानी अवश्य अगत्यछे. अंतरनो प्रकाश थया पछी, तेने उपदेश पोताना अंतर चैतन्यगुरुथी, समये समये थतो जायछे.

हिंदुस्थानमां योग विद्यानां साधन सारु साधारण शब्द ओंम छे. आ शब्द सघळा योग विद्याना विद्यार्थिने, केटले सुधी उपयोगी पडे छे. ते केहेवाने हुं असक्त छुं. एम निर्मोनी विद्वान हार्टमेन कहे छे युरोपमां जे, ए, ओ, ए त्रण शब्दनो प्रथम विद्यार्थिओ उपयोग करे छे. त्यार पछी कोइ समय ज्यांहां सुधी ते शब्दो जीवन थइ, तेने अंतर इन्द्रिओथी संभळाय, जोवाय, अथवा लागी शके, त्यां सुधी बीजा स्वर अने व्यंजननो पण उपयोग ते विद्यार्थि करे छे. त्यार पछी बीजी गुप्तता जाणवाने, तेज शब्दो मुख्य सहायभूत थाय छे. ए सघळुं छतां कोइ पण विद्यार्थिने एवी रीते मात्र साधारण नीयमथी, कोइ पण गुरुनी ए कार्यमां सहायता अने उपदेश लीधा शीवाय, अति उत्तम प्रकारनी उनति थइ, अदभुत कार्यनी सिद्धि थइ शकी, एवुं मारा जाणवामां नथी. एवुं विद्वान अने ज्ञानी हार्टमेन कहे छे."

आ प्रसंगे ओंकार प्रणव शीवाय बीजा शब्दोनो एकाग्रता सारु आपणा आर्यदेशमां उपयोग करे छे. अने तेथी केवुं परीणाम निष्पन थायछे; ए वीषे अल्प सुचना आप्याथी आग्रही विद्यार्थीने कांइक

अधीक लाभ थइ शकशे.

ओंकार प्रणव तेज वेदांत अने योग विद्यामां ब्रह्मनु स्वरुप अथवा ब्रह्मज गणेलुं छे. माटे योगनां साधन सारु तेनी अवश्य अगत्य कही छे. ब्रह्मने स्वयंज्योती आत्मा कह्यो छे. जीवात्मा उपरथी, माया अने अविद्या रुपी आवरण अथवा पडदो खशी गयाथी, मात्र स्वच्छ ब्रह्मज रहेछे, अने तेज सचिदानंद छे. वळी तेने तत्वमसी पण कहेछे. एनो स्पष्टार्थ एवो छे जे, तत् एटले ते, त्वं एटले तुं अने असि एटले थवुं. एटले ते तुं छे. अर्थात ते ब्रह्म तुं छे. वळी केटलाएक ग्रंथमां योग विद्याना साधन सारु सोहंम प्रणवनुं एकाग्रताथी अंतरमां लक्ष पुर्वक ध्यान करवानुं कह्युं छे. एमांनो स अक्षर हठ योगीने खेचरी मुद्राना कार्य सारु उपयोगमां आवे छे. ते शीवाय स नो अर्थ त्वं पण करेलो छे. अने ह एटले ब्रह्म अथवा तत् एवो करेलो छे. एटले तुं ब्रह्म एवोज अर्थ थाय छे. ए शीवाय हालमां केटलाएक विद्यार्थि आग्रहथी स्वासो श्वासथी राम नामनो पण जप करे छे. तेनो मुळ गुह्यार्थ एवो छे जे राम शब्दनो जे र कार छे. ते तत् छे अने मकार छे ते त्वं छे. मळी ते तुं एटले ब्रह्म एज थाय छे. एवी रीते सांप्रतकाळमां प्रवृत्तिमां रहेला हठ योगी अथवा केटलाएक सांप्रदाइक गुरुओ, उपर कह्या प्रमाणे भिन भिन शब्द अथवा प्रणवनो, कोइ आ-

ग्रही विद्यार्थिने उपदेश करे छे, अने ते प्रमाणे केटलाएक द्रढ आग्रही स्त्रि अने पुरुषो, तमां केटलाएक तो संसारनो त्याग करी, अति आग्रहथी बीजुं कांइ नहीं करतां रात्र दीवस उपर कहेला प्रणवो अथवा शब्दोमांथी एक प्रणवनो श्वासोश्वासथी गुप्त उच्चारण एकाग्रताथी घणा समय सुधी कर्या करे छे. एवी रीते द्रढ आग्रहथी करनारा विद्यार्थिने विद्वान हार्टमेने कह्या प्रमाणे हृदयना मध्य बींदुमां रहेला सर्वज्ञ अने सर्व व्यापी चैतन्यना ओंशने कांइक जागृत करी शके छे. अने तेथी अंतरनो अल्प प्रकाष थयाथी, साधारण शरीरनी आरोग्यता रही अदभुत शक्तिमांनुं कांइक अंतर इन्द्रिओथी जणाइ शके छे. परंतु परीपूर्ण चैतन्य जागृत थइ सर्वज्ञ पणुं आवी परीपुर्णता कोइ पण महा समर्थ अनुभवी योगीना उपदेश शीवाय थइ शकतुं नथी, एवुं जे विद्वान हार्टमेननुं कहेवुं छे. ते सत्य अने योग्य छे.

एवी रीते प्रणव अथवा नाम स्मर्ण करवानो मुळ हेतु पोताना हृदयमां रहेला सर्व व्यापी अने सर्वज्ञ चैतन्यने जाग्रत करवानो छे. तेनी विस्म्राति हालना घणु करी सघळा मत पंथना धर्माधीकारीने थइ छे, अने ते प्रमाणे तेना आश्रित विषयनी अपरीमित त्रष्णाने लीधे करे पण नहीं ए उपरथी तेमनुं अंतःकरण शुद्ध करवा सारु कोइ पण अवतारी अथवा भद्र पुरुषनुं नाम स्मर्ण बीजी कल्पना रहित एक चीते

करवाने माळानो नियम दर्शावेलो छे.ते छतां विषयनी अपरीमित त्रष्णावाळा गमे तेवी वृत्तिथी अने गमे तेवा कपट, अने छळभेदनो त्याग कर्या शीवाय ते प्रमाणे नीयमीत पुजा सेवा अने माळा विगरेना क्रम मात्र देहथी करवाथी पोताना मानी लाधेला इष्ट देवो प्रसन थइ ते कल्याण करशे; एवी मुढ गांठ घणाखरा मानसिक ज्ञानवाळां स्त्रि पुरुषोये पण मर्ण पर्यंत बांधेली छे. ए उत्तम मानासिक ज्ञानवाला जनोने योग्य नथी. एटलेथी ए विषय अपूर्ण राखी आजनुं व्याख्यान पूर्ण करीए छइए.

मार्गशिर्ष शुद्ध ९ रविवार. सं १९४३.



प्रकरण १४ मुं.

अनुभवी गुप्त ज्ञान.

आपणे आ प्रसंगे मळेला सुज्ञ, श्रद्धायुक्त अने विवेकी बंधुओ अने मित्रो आगळ पाछला व्याख्यानमां अनुभवी योग वीद्याना अपूर्ण राखेला विषयनी पूर्णता कर्याथी ए विद्यानो अनुभव लेवानी इच्छा राखनाराओने निश्चल कांई पण विशेषलाभ थइ शकशे.

आपणे पाछला व्याख्यानमां कहेलो महा विद्वान, आग्रही, अने परोपकारी एफ हार्टमेन पोताना व्याख्यानमां, आगळ एवुं कहेछे जे, "अनुभवी

योग विद्या जाणवानी पुर्ण इच्छा राखनारा घणाज थोडा जनो छे. तेमां ते ज्ञान प्राप्त करवाने थोडा ज मनुष्यनां कर्मो अनुकुळ होय छे, वळी तेमां पण जे मनुष्यो ते महा अद्भुत अनुभवी ज्ञान मेळववाने प्रयत्न करे छे, तेमांथी घणा थोडानेज अति आग्रही तिव्र इच्छा उत्पन्न थइ तेओ द्रढ निश्चयथी ते शुभ कार्यनी परीपूर्णता करी शके छे, ए विद्यानुं अनुभवी ज्ञान प्राप्त कर्या शीवाय, बीजुं कांई आपणे मेळवी शकीये ते अती अल्पज मेळवी शकीये छइये. जे मनुष्योये अती आग्रहथी अनुभवी योग विद्याना साधनथी पोताना चैतन्य आत्मानी पुनरावृति करेली छे, तेज अखंड अने अविनाषी सुख नीरंतर भोगवे छे, आत्म सवरुपनो संबंध मात्र आत्मा साथेज छे. अने ते जीवात्मा स्थुळ देहनी साथे वर्ते छे; तेथी भिन्न छे. प्रथमनी जे निर्दोष इश्वरी अंतरनी कल्पना, अने विचार, तेज अंतर पुरुषनो प्रवेशकरी आपणने केवळ सत्यता जणावी शके छे. कदापी ते प्रथम ढाली लागती होय तोपण आगळ पुनर जन्मना चैतन्यनी उन्नतिने सारु शुभ बीज तेमां रहेलुं ज छे. ए कदापी आ बीजने वारंवार शुभ कल्पना अने शुभ इच्छारुपी भक्ष यथार्थ रीते मळी तेनुं पोषण थाय तो, ते उन्नतिने पामी सर्वज्ञ थइ शके छे पछी नवो चैतन्य रुपज पोते थई, बीजो जुनो जे मायावी जीव तेनो नाश थाय छे, केमजे नवाये पो-

ते प्रकाश जोयो छे. अने तेना उपर प्रिति करवा मांडी छे. एवी रीते चैतन्यरुप पुनरावृत्ति थया शीवाय जो, आपणा जीवात्माये स्थुळ देहनो त्याग कर्यो तो पछी ते थोडा समय सुधी पाछो सुक्ष्म स्थितिमां जइ, स्व आत्मानुं ज्ञान मेळववा सारु पाछो पुनरजन्म धारण करवाने प्रयत्न करे छे, ते प्राप्त थया पछी जो पुर्व जन्ममां शुभ कर्मो कर्या होय तो ते जीवात्मा सत्यज्ञान मेळववा सारु अधिक बळवान थाय छे तेमां जो नवा दुष्ट अथवा अशुभ कर्म कर्यां तो, पछी ते अधिक जड थाय छे. हवे जेणे चैतन्य नुं स्पष्ट ज्ञान, अने निश्चय मेळवेलो छे. ते प्रकृतीना बंधनमांथी विरक्त थाय छे'' मुळ मनुष्य शुं छे ? ते कांइ वस्तु नथी पण एक मध्य बींदु जेनी आसपास इंद्रिवाळी वस्तु घट थयेली छे. अने ते मध्य बींदुमांथी नीरंतर श्रष्टिनां तत्वो नीकळे छे, अने तेमां समाय छे. मनुष्य नीरंतर चलित छे, ते एक क्षणपण जेवो छे तेवो बराबर रहेलो नथी, जे वस्तु ते पोतानी इन्द्रिद्वारा ग्रहण करी घट करी शके छे, अने ज्यांहां सुधी ते तेमां रहेलो छे त्यां सुधी तेज तेनी वस्तु छे, अने ते तेना शरीरनो एक भाग उत्पन करी शके छे. अने जे चैतन्य तत्वो छे तेतो, चैतन्य ग्रहण करी. तेनी साथे मळी जाय छे, ते तेनुं सुक्ष्म शरीर थशे. एवी रीते सूक्ष्म शरीर अने चैतन्य प्राप्त कर्या पछी, तेने स्थुळ रुपनी अगत्य रहेती नथी.

एनी जाणवानी शक्ती स्थुळ इन्द्रियोनी जाणवानी शक्ति करतां अति घणी प्रबळ थाय छे एनुं ज्ञान अति उत्तम प्रकारनुं थाय छे, अने ते सघळी वस्तु ना मध्यम। भेदी शके छे. एने बीजानी सहलानो विचार करवानी अगत्य रहेती नथी, केमजे तेने सत्य ज्ञान जणाइ शके छे, अने तेज सत्य ब्रह्मज्ञानी थइ, पोते सत्य अने ज्ञानमयनी साथे मळी जइ तेनी साथे एक रुप थइ जायछे अने ते सदा प्रकाशमांज रहेछे. वळी जे आग्रही मनुष्यनी इच्छा आत्मज्ञान अथवा चैतन्यज्ञाननी वृद्धि करवानीछे, तेने सारू आ अनुभवी गुप्त अथवा राज योग विद्यानो अभ्यास करवानी अगत्यनुं, बीजुं एक अगत्यनुं कारण ए छे जे मनुष्यनी इच्छा, निर्मळ थइ पोतपोताने परीपुर्ण, थवानी होय, तेणे सघळी मलीनता स्वार्थनी त्रष्णा दुर्गुणो, अने वीषइ विकारो, ए सघळानो लय करवो जोइए. ए सघळुं करवा करतां मात्र केहेवुं घणुं सुगम छे, जे इच्छानी आपणे त्रष्णा राखीये छइये, ते इच्छा आपणे शी रीते काहाडी शकीये. मनुष्य इच्छा अने कल्पनानो अनेक जन्मांत्तरोथी बंधायलो छे".

ज्यां सुधी तेना अंतःकरणनी वृति अने इच्छा, कोइ पण जातनी तेनी दृढ थयेली मलीन, अथवा विषई स्वार्थनी वृत्ति, कल्पना, अने त्रष्णा ए सघळानो त्याग करवानी थइ नथी, त्यां सुधी

तेनाथी ए सघळानो लय थइ शकतो नथी. मनुष्य प्राणीनी विषइ अथवा मलीन वृत्ति, मलीन इच्छा अने पोतना स्वार्थ आदिक सघळा दुर्गुणोनो लय करवाना बे मार्ग छे. तेमां पहेलो मार्ग, आपणे उपर कहेला सघळा दुर्गुणो, जे आपणने दुःख प्राप्त करे, ते सघळा सांत रीते भोगवी लेवानो, अनुभव करी लेवो जोइए; कोइ पण मलीन इच्छा उत्पन थयाथी, मलीन कार्य करावशे, अने, मलीन अथवा दुष्ट कार्य अथवा कर्म कर्याथी, दुःख भोगवी, अंते पश्चाताप थशे, केटलाएक मनुष्यो आ मार्गे जायछे, ए घणो लांबो अने भयंकर मार्गछे. अने तेथी घणा समये ते आपणा जीवात्मानो नाष पण करे छे. केमके इन्द्रिओने विषय भोगवी त्रप्त कर्याथी, जे विषयो प्रथम भोगवेला होय छे, तेनी त्रष्णा पाछी उत्पन्न थइ, ते वारंवार फरी भोगववानी त्रष्णा थया करे छे, एवी रीते मर्ण पर्यंत थया करे छे, अने तेना संबंधथी दुख पण मर्ण पर्यंत भोगवे छे. हवे ए शीवाय बीजो मार्ग अधीक नीश्चयवाळो, वधारे पासे अने अधीक निर्भय छे, ते ए छे जे, श्रष्टि पोकळ अने खाली नथी. ज्यां सुधी आपणे दुर्गुणने बदले सदगुणनुं आरोपण करीये नहीं, त्यां सुधी दुर्गुणो जइ शकता नथी. ज्यां सुधी कोई पण पात्रमां आपणे नीर्मळ हवा घालीये नहीं, त्यां सुधी ते पात्रमांथी मलीन हवा आपणे कोइ पण रीते काहाडी

शकीये नहीं, जो कदापी ते पात्र आपणे पाणीथी भरीये तो, वगर श्रमे ते मलीन हवा जती रेहेशे. ज्यां सुधी मलीन वासनाने मलीन कल्पनाथी, पोषण मळे छे, त्यां सुधी मलीन इच्छा रहे छे. अने ज्यां सूधी मलीन विचारोने, आकर्षण करवानी तृष्णा रहेली छे, त्यां सुधी मलीन विचारो अथवा कल्पनाओ रहेली छे; जो आपणा केवळ सत्य अने सारा वीचारो अथवा कल्पनाने आपणा जीवात्माना मध्य बींदुमां मोकलीये तो, पछी मलीन इच्छा शुष्क थइ, ते लय पामशे. ज्यां सुधी आपणे आपणी कल्पनाने स्वाधीन छइये. अने तेना उपर आपणे सत्ता राखी शकता नथी त्यां सुधी, अने वळी ज्यां सुधी ते कल्पाओने आपणा अंतःकर्णमां अनीयमीत रीते उठवा दइये, त्यां सुधी तेना उपर आपणेथी सत्ता बेशाडी शकाय नहीं. अने एवी स्थितिमां ज्यां सुधी आपणे छइये, त्यां सुधी, उपर कह्युं तेवी रीते करवुं अत्यंत दुर्गट छे. योगीओज पोते जे इच्छे ते तेनीज कल्पना अथवा वीचार करे छे. परंतु साधारण मनुष्योनो तेना मनमां जे कल्पनाओ वारंवार आवे छे, तेनो विचार करे छे. आ विषे कोइने संशय थाय तो, तेणे पोताना मनमां बीजो वीचार उत्पन्न थवा नहीं देतां एकज विचार केटली मीनीट सुधी रही शके छे. एनो अनुभव कर्याथी, उपर कहेलुं सत्य जणाशे.

परंतु आवी रीते योग विद्यानो अभ्यास करवा सारु, विद्यार्थिने जो सत्य ज्ञान प्रवर्तावावानी शक्ती आवी सघळा विकारो नाश पामेला होय अने अनुकुळ आवे एवो प्रणव, शब्द, अथवा वाक्यनो उपदेश मळया पछी ते प्रमाणे अति आग्रहथी, ते विद्यार्थि जो पोतानो प्रयत्न जारी राखशे, अने तेज शब्द उपर पोतानो विचार अथवा कल्पना अक्षय राखशे तो, बीजो. अप्रिय कल्पना अथवा अयोग्य विचारनुं आकर्षण तेने थशे नहीं. अने तेना जीवात्माना मलीन परमाणुओनो लय थशे. अने तेवामां जो कदापी तेने अंतर द्रष्टिनी शक्ती प्राप्त थइ तो, तेना जीवात्मानी इन्द्रियोनो केवी रीतनो फेरफार थायछे; तेने मनुष्य जोइ शकशे. अने मलीन भागोनुं पृथक्करण थइ, तेनो नाश केवी रीते थायछे, तेपण जोइ शकशे. अने ज्यारे सघळा मलीन भागोनो नाश थयो एटले मलीन कल्पनानुं आकर्षण करवाने कांइज रहेतु नथी. पछी निर्मळ थयेला आत्मानी आसपास प्रकाशनी शक्तिओ वीटळाइ वळेछे, अने तेना मध्य बींदुमां अक्षय आनंद, अने अनादी शुद्ध चैतन्यज रहेछे.

हवे जे गतीछे ते पवीत्र अथवा वरतुळना घेरावामां रहेछे, परंतु तेना मध्य भागमां स्थिरता होयछे. बाहारना भागमां मिथ्या अने अज्ञाननो देशछे, पण आत्माना मध्यभागमां उंडाणमां ज्ञान रहेलुछे. वर-

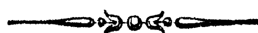
तुळना परोघनी आसपास वादळाओ अने अंधकार होय छे, तेथी ते घेरायलो रहेछे. परंतु मध्यभागमां प्रकाशछे. ते ठेकाणे जे चैतन्यछे ते जीवात्मा उपर प्रकाशे छे, अने त्यांज, जे मनुष्य संस्कारी अने पात्र होयछे, तेनुं राज्य होयछे. आ मध्यबींदुमांथी प्रकाश आवेछे, अने जे जीवनपणु स्थुळ शरीर अने जावात्मामा प्रवेश करे छे, ते तेमांथीज प्रकाश पामे छे. चैतन्य मध्यबींदुनी आसपास जे कल्पनानो वरतुळ बनेलोछे, तेज जीवात्माछे, परंतु कल्पना उत्पन्न करवानी, अने स्थिर करवानी शक्ति ते मध्यबींदुमांथी नीकळे छे. अने तेमांज सघळी शक्तिओ मिश्र थइ छे. आ मध्यबींदुमां तमारी चैतन्य श्रष्टिनो सघळो जथोछे. सत्यता तेनो प्रकाश छे. केवळ सारापणु, अने परोपकारनी वृत्ति ते तेनी उष्णताछे. जे श्रद्धा, अने ज्ञान अनुभव करी मेळवेलु छे, ते प्रकाशने माटे इन्द्रियोछे हृदय अथवा अंतःकर्ण उष्णताने माटे इन्द्रिछे.ए सघळाने परस्पर स्नेहाकर्षणथी वर्ताव्याथी अने तमारी चैतन्यनी पुनरावृत्तिनी क्रीयाथी, तमे जीवनपणु मेळवी ज्ञान, अने शक्ति पण मेळवी शकशो. जे अगत्यनुं अने अमुल्य जाणवानुं छे, ते सघळुं जीवात्माना उंडाणमां रहेलुंछे. मध्यबींदु तरफ जे केवळ सत्य वस्तुछे तेज मात्र जाणवा शीखशो एटले तमने सत्य उत्तर मळशे. साधारण मनुष्योमां, जे प्रकाश तेना गुप्त पवित्र स्थानमां बळेछे, तेनी

उष्णता कदापी तेने लागी शके तो पण, ते प्रकाश तेने जणाइ शकतो नथी. जे अंतरमांथी नाद थायछे, ते कदापी अर्ध प्रकृतीवाळा जीवनी जाडी भीतो अथवा पडदाओमांथी नीकळेतो ते जे प्रमाणे कोइ घणा अंतरे कोइ घंटनो नाद धीमो संभळाय, तेवी रीते तेने संभळायछे पण ते स्पष्ट रीते समजी शकतो नथी. परंतु जे प्रमाणे स्थुळ शरीरनी जोवानी, सांभळवानी, सुंघवानी वीगेरेनी अथवा शब्द, स्पर्श, रस, रूप, अने गंध विगेरे, पंचइन्द्रिओनी उन्नति थवा सारु, स्थुळइन्द्रिओना परीपुर्ण ज्ञाननी, अथवा जाणवानी अवश्य अगत्य छे, तेज प्रमाणे अंतर चैतन्यनी उन्नती पामनी इन्द्रिओनी जे, अंतरइच्छानी शक्ति ते अंतरनी शब्द स्पर्श, रस, रूप, अने गंध ए पंचइन्द्रिओनी उन्नति जे करेछे तेने पण यथार्थ जाणवानी अवश्य अगत्य छे. आ अति गुप्त ज्ञान जे मनुष्यनी बाह्य दृष्टिछे, अथवा जे प्रापंचिक द्रष्टिथी जोवा अने जाणवाने प्रयत्न करेछे.तेनाथी ए समजी शकाय नहीं, अने तेने सत्य मनाय पण नहीं. एवा मनुष्योने ए गुप्त सत्य ज्ञाननो निश्चय कराववासारु आ अमुल्य सुचना प्रसिद्ध करी नथी, परंतु जे संस्कारी अने केवळ सत्य जाणवानी इच्छा राखनारा आग्रही जनोछे. तेने सारुज आ अल्प सुचना छे. अने ते मार्गे गयाथी आगळ अधिक प्रकाश थइ शके, तेवा मार्गे जवाने उपयोगी थशे. एवुं केवळ परोप-

कारी हार्टमेने पोतानी अंतनी सुचनामां कह्युंछे."

ए विषे आ प्रसंगे आपणे अधीक केहेवानुं रह्युं नथी, तोपण एटली अंतनी सुचना आपवानीछे जे, आ बेउ व्याख्यानोमां योगविद्याना अनुभवी ज्ञान मेळववानी जे अल्प सुचना करीछे. तेनुं ए विद्या प्राप्त करवानी इच्छा राखनारा आग्रही, अने स्वार्थ रहित विद्यार्थीओये, मात्र एकज समये श्रवण अने मनन करवाथी कांइ पण लाभ थइ शकवानो नथी, परंतु जो अति आग्रहथी द्रढश्रद्धा अने निष्टा राखी, एनुं पठन, मनन, अने निदिध्यास वारंवार करी, एनो केवळ साक्षात्कार कर्याथी निश्चय हृदयना मध्यना अंतरमां जे चैतन्य मध्यबींदुछे ते जाग्रत थइ, तेनो साक्षात्कार थइ, संपुर्ण प्रकाश प्रदिप्त थयाथी, महा अद्भुत सत्यज्ञान प्राप्त थइ महा समर्थ योगेश्वरना समागमथी आगळ पोते चैतन्य रुप थयाथी, अलोकिक शक्ति पण वगर इच्छाये तेने प्राप्त थइ शके, ते छतां तेमां लुब्ध नहीं थाय तो, पोते जीवन मुक्त थइ, अंतनुं परीणाम जे कैवल्य मोक्ष अथवा परनीर्वाणनी प्राप्ती आ जन्मनाज प्रयत्नथी थइ शकशे. एटलुं कही आ विषय पुर्ण करीये छइये.

पोषशुद्ध १ रवीवार संवत् १९४३



प्रकरण १५ मुं

शुन्नज्ञान संग्रह.

आपणे पाछला अनुभवी गुप्त विद्याना व्याख्यानमां, मुख्यत्वे करी मनुष्यप्राणीना अंतःकरणना मध्ये जे चैतन्य मध्यबींदु छे. तेमां विशेष चैतन्यनुं आकर्षण करी, यथार्थ चैतन्यनो संग्रह थयाथी, ते सर्व व्यापीक अने सर्वज्ञ चैतन्य थया पछी ते जाग्रत थइ शके, एवुं दर्शावेलुं छे, सर्व व्यापिक चैतन्यना परमाणाओनुं आकर्षण करवा सारु, अति उत्तम आत्मज्ञान अने केवळ निष्कामपणानी शुभ कल्पना ए बे मुख्य साधन छे. माटे ए विषे भगवत गीताना चौदमा अध्यायमां जे अगत्यनी सूचना आपेली छे. ते जणाव्याथी विद्यार्थीने अवश्य अधिक लाभ थइ शकशे.

घणुकरी सघळा साधारण मानसीक ज्ञानवाळा पुरुषोना जाणवामां छे जे, संसारमां कोइ पण कार्यनी यथार्थ सीद्धि थइ, द्रव्य अने सत्तादिकनो, अधीक लाभ थवानुं मुख्य साधन ज्ञान छे, ज्ञान विना गमे तेटलुं देहथी कष्ट सहन करी हाथ, पाय, विगरे अवयवोथी, कार्य करे परंतु तेथी यथार्थ सीद्धी थइ द्रव्यादीकनो अधीक लाभ थइ शकतो नथी; पण तेथी मात्र उदर पोषण थइ शके छे. तेवीज रीते यथार्थ आत्मज्ञान प्राप्त थइ, हृदयमां रहेला चैतन्यने जाग्रत करवानुं कार्य यथार्थ रीते ज्ञानथी

ज थइ शके छे; माटे जे योग साधनवडे निर्विकल्प स्थिति थइ, कैवल्य मोक्षनी प्राप्ती थइ शके, ते अति उत्तम अने श्रेष्ट राज योगज छे. हठ योगथी नीर्विकल्प स्थिति थइ शकवी अति कठण छे एवुं हठदीपीका वीगरे घणा योग विद्याना गंथोमां पण कह्युं छे. एज कारण माटे भगवतगीताना चौदमा अध्यायमां श्रिकृष्ण भगवान अरजुन प्रत्ये एवा सत्यज्ञान वीशे एवुं कहे छे.

परंभूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञान मुत्तमम् ॥
यज्ज्ञात्वा मुनयःसर्वे परां सिद्धि मितो गताः ॥१॥

जे ज्ञानवडे, प्रापंचिक, सामाजीक, अने राजकीय ए त्रणे कार्योनी उत्तम प्राप्ति अने अर्थनी सीद्धि थइ शके, तेने मानसिक ज्ञान कह्युं छे. केमजे मन जेवी रीते चलीतछे, तेवी रीते मननुं कार्य जे, मानसिक ज्ञान ते पण चलीतजछे. ते माटे तेवा कार्यथी जे लाभ थाय ते पण चलित अने क्षणभंगुरज होय एनी सत्यता आपणे अनुभव उपरथी स्पष्ट सिद्ध थइ शके छे. परंतु जे सत्य ज्ञान श्रीकृष्ण भगवांने अर्जुन प्रत्ये कह्युं छे, ते निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान छे. केमजे तेमां ज्ञाननो अर्थ एवो कर्योछे जे, ज्ञायेतऽनेनेतिज्ञानं एटले जे ज्ञानना योगे आत्मा जाणी शकाय तेनुं नाम ज्ञान छे. एवी रीते ज्ञाननो अर्थ करी उपला श्लोकमां एवुं कह्युं छे जे,एवुं ज्ञान परमात्माने विषय करनारुं छे, माटे ते अति श्रेष्टछे

ते अति उत्तम फळनी पण प्राप्ति करनारुं छे, अने ते आत्म ज्ञाननुं साधन रूप एवुंज ज्ञान, ते हुं फरी तने कहुं छुं. ते जाणीने सर्वे मुनीयो कैवल्य मोक्ष रूप परम सिद्धिने देह बंधनथी मुक्त थइ प्राप्तथयाछे.

पछी आगळ एवुं कह्युं छे.

इदंज्ञान मुपाश्रित्य ममसा धर्म्य मागताः ॥
सर्गेऽपिनो पजायन्ते प्रलयेन व्यथन्तिच ॥२॥

एटले आमाधन रूप ज्ञाननुं श्रद्धापुर्वक अनुष्ठान करी, मारा चैतन्य अद्वितीय निर्गुणने प्राप्त थयेला छे, अद्वितीय एटले पोतानो जे चैतन्य तेज सर्वनो चैतन्य एवी द्रढ वृत्तिवाळा विद्वान पुरूषो सृष्टिकाळमां पण उत्पन्न थता नथी, तथा प्रलय काळमां पण नाश पामता नथी, अर्थात् हिरण्य गर्भादीकोनी उत्पात्ति थया पछी, पण तत्ववेत्ता पुरूषो उत्पनथता नथी, तथा ते हिरण्य गर्भना विनाश काळरूप प्रलय काळमां नाश पामता नथी. पछी आगळ हृदयमां रहेला निर्विकार अने शुद्ध चैतन्यने आवरण करनारी वस्तु दर्शावे छे.

सत्वं रज स्तम इति गुणाःप्रकृति संभवाः ॥
निबध्नति महा बाहो देहे देहिनम व्ययम् ॥ ५ ॥

एटले—हे मोटा हाथवाळा सत्व, रज, अने तम, ए नामवाळा त्रण गुणो मायाथी उत्पन थयेला छे. ए त्रण गुणो आ देहमां, प्रकृतीना कार्य रूप संघातमां रहेला, अने अविद्यावडे देहनी साथे तादात्म्य

भावने प्राप्त थयेला जीवने बंधन करे छे. अने ते सत्वादिक गुणो निर्विकार आत्माने पोताना विकारोथी युक्त होय एम देखाडे छे.

पछी ए त्रण्ये गुणोनी प्रथक प्रथक सता कहेछे.

तत्र सत्त्वं निर्मल त्वात्प्रकाशक मनामयम् ॥
सुख सङ्गेन बध्नाति ज्ञान सङ्गेन चानघ ॥ ६॥

प्रथम कहेला सत्व, रज, अने तम ए त्रणे गुणोमां निर्मळता एटले साम्यावस्था होवाथी सत्वगुण प्रकाशे छे. अर्थात तमो गुणे चैतन्यने करेलुं जे आवरण तेने नाश करनारो सत्वगुण छे, अने दुख रुपजे आमय तेने विरोधी जे सुख तेने ते सत्व गुण प्रकाश करनारो छे. एवीं रीते सत्व गुण आ जीवात्माने सुखना संगथी तथा ज्ञानना संगथी बंधन करे छे. ए उपरथी एम समजवुं जे, रजोगुण, अने तमोगुण ए बेउनो नाश कर्या पछी अंते कैवल्य मोक्ष सारु सत्व गुणनो पण लय करवानी अगत्य छे.

वळी चैतन्यने आवरण करनार वस्तु वीषे भगवान अर्जुन प्रसे एवुं कहेछे जे,

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णा सङ्ग समुद्भवम् ॥
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्म सङ्गे नदेहिनम् ॥ ७ ॥

एटले न प्राप्त थयेली वस्तुनी जे अभीलाषा तेनुं नाम तृष्णा अने प्राप्त थयेली वस्तुनो विनाश थाय तोपण ते वस्तुने रक्षण करवानी जे त्रष्णा तेनुं नाम आसंग छे. ते त्रष्णा अने आसंग ए बेउनी उत्पती

जेथी थाय, तेनुं नाम तृष्णा संग समुद्भव छे. एवो रजोगुण राग रूप छे, अने ते रजोगुण देहाभिमानी जीवने कर्मना संगे करी बांधे छे.

तम स्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व देहिनाम् ॥
प्रमादाल स्यनिद्राभि–स्तन्नि बध्नाति भारत ॥८॥

एटले हे भारत एटले अर्जुन, तमो गुणने तुं आवरण शक्तिरूप आज्ञाथी उत्पन्न थयेलो जाण ते माटे ते तमो गुण सर्व देहाभीमानी जीवोनुं मोहनरूप एटले अविवेकता रूपवडे भ्रांति उत्पन करनारोछे. एवो तमो गुण आ देहाभिमानी पुरुषने, प्रमाद, आळस, अने निद्रावडे बंधन करेछे. वस्तुनो विवेक एटले सत्य असत्य जाणवुं एनुं असामर्थ्य तेज प्रमाद छे. ते प्रमाद सत्वगुणना प्रकाश रूप कार्योनो विरोधी छे. सनातन धर्मनी प्रवृत्ति करवानुं जे असामर्थ्य तेनुं नाम आळस्य छे. ते आळस्य रजोगुणनी प्रवृत्ति रूप कार्यनुं विरोधी छे. तमो गुणने आलंबन करनारी जे लयरूप कांईक वृत्ति तेनुं नाम निंद्राछे.ते निंद्रा सत्वगुणना तथा रजोगुणना कार्योनी विरोधीछे.

सत्वं सुखे सञ्जयति रजःकर्मणि भारत ॥
ज्ञानमा वृत्य तु तमःप्रमादे सञ्जयत्युत ॥९॥

एटले सत्वगुण उत्कर्षताने, प्राप्त थइ, देहाभिमानी पुरुषने दुःखना कारणनो पराभव करी आत्मज्ञानना सुखमां जोडेछे. हवे रजोगुण उत्कर्षताने प्राप्त थइ सत्य सुखना कारणनो पराभव करी आ

जीवात्माने लौकिक अने पुजा सेवा आदीक धार्मिक कर्मो करवामां जोडेछे. अने तमोगुणतो सत्वगुणना कार्य रुप ज्ञानने ढांकीने मनुष्यने प्रमादमां जोडेछे तेथी जे वस्तु अवश्य जाणवानीछे, ते वस्तुने जाणी शकाती नथी.

हवे उपर कहेला त्रणे गुणोनी उत्कर्षता क्यारे थायछे. ते वीषे श्रीकृष्णभगवान कहेछे.

सर्व द्वारेषु देहेऽस्मिन् प्रकाश उपजायते ॥
ज्ञानं यदातदा विद्या द्विवृद्धं सत्वमित्युत॥११॥

एटले जीवात्माने सुख दुःखना साधन रुप आ देहमां, ज्यारे श्रोत्रादिक इन्द्रिओना द्वारो विषे शब्दादीकथी ज्ञाननो प्रकाश उत्पन थायछे, त्यारे प्रकाश रुप सत्वगुण वृद्धिने पामेलोछे एम जाणवुं. एटले ज्ञान रुप प्रकाशवडे सत्वगुणनी वृद्धि जाणी शकाय छे.

लोभःप्रवृत्तिरा रंभःकर्मणाम शमःस्पृहा ॥
रजस्ये तानि जायन्ते विवृद्ध भरतर्षभ ॥१२॥

वळी भगवान अर्जुन प्रत्ये एवुं कहेछे जे हे भर्त कुळमां श्रेष्ठ सांभळ रजोगुण ज्यारे वृद्धि पामेछे, त्यारे पुरुषमां लोभ, प्रवृत्ति, कर्मोनो आरंभ, अशम, अने स्पृहा ए चिन्हो उत्पन थायछे. धन प्राप्त करवामां अपरीमित तृष्णा तेनुं नाम लोभछे. निरंतर प्रयत्नवाळु थवुं तेनुं नाम प्रवृत्तीछे. कर्मने माटे जे उद्यम ते कर्मनो आरंभछे. भिन्न भिन्न संकल्पो नी-

तर उठ्या करे, शांन्त पामे नहीं तेनुं नाम अशम छे. कोइना धनादीक पदार्थो जोइ कोइ पण प्रकारे ते ग्रहण करवानी जे इच्छा ते स्पृहा छे. अर्थात लोभादीक त्रष्णा वृद्धि पामवाथी रजोगुण वृद्धि पामेछे

हवे तमोगुणना चिन्हो दर्शावेछे.

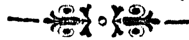
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एवच ॥
तम स्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरु नन्दन॥१३॥

एटले जे समये तमोगुणनी वृद्धि थायछे. ते समये अप्रकाश, अप्रवृत्ति, प्रमाद, अने मोह एटला चिन्हो उत्पन थायछे. अप्रकाश एटले सत्यगुरु अने सत्यशास्त्र आदीक बोधना कारणो विद्यमान छतां ते बोधनी सर्व प्रकारे अयोग्यता अने ब्रह्मविद्या तथा योग विद्या आदिक सत्यशास्त्र विद्यमान छता तेमां प्रवृत्ति थवानी अयोग्यता तेनुं नाम अप्रवृत्तीछे. तेवीज रीते प्रमाद अने मोह ए सर्व तमो गुणना चिन्हो छे.

एवी रीते सनातन धर्म संपन ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थी उपर कहेली सुचना निरंतर लक्षमां राखी, अति आग्रहथी शुद्ध चैतन्यनी शुभ कल्पना करवानो अभ्यास जेम जेम आधिक करतो जशे, तेम तेम सर्वज्ञ अने सर्व व्यापिक शुद्ध चैतन्यना परमाणुओनो हृदयमां आधिक संग्रह थतो जशे, अने तेथी तेमां रहेलो शुद्ध अने निर्विकार चैतन्य योग्य समये जाग्रत थइ, तेथी अलौकिक कार्यनी सिद्धि थवानो

संभव छे; एटलेथी आजनो विषय बीजा प्रसंगे पुर्ण करवानो राखी आजना व्याख्याननी समाप्ती करीये छइये.

पौषशुद ८ रवीवार संवत् १९४३



प्रकरण १६ मुं.

ज्ञानसंग्रह.

हवे सत्वगुणी पुरुष कोइपण देवनो उपासक होय, पण ते देहाभीमानी एटले मारो कोइ पण जातनो देह अनादीकाळसुधी रहेवानोछे एवुं समजे छे. जे पोताने निर्मलिय समजेछे तेनी गती विषे, जे श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुन प्रत्ये कहेलुंछे. तेनुं प्रथम आ प्रसंगे मळेला सुज्ञजनो आगळ विवेचन करीये छइये.

यदासत्वे प्रवृद्धेतु प्रलयं याति देहभृत् ॥
तदोत्तम विदांलोका-नमलान्प्राति पद्यते ॥१४॥

एटले देहाभिमानी जीव सत्वगुण वृद्धि थया पछी, जो मृत्यु पामे तो, तेने देवादिक उत्तम लोकनी स्थिति प्राप्त थायछे. अने त्यां उत्तम दिव्य सुख भोगवेछे; ते स्थिति रज अने तमरुपी मळथी रहितछे.

हवे रजोगुणी अने तमोगुणी उपासक अथवा भक्तनी गती वीषे कहे छे.

रजासि प्रणयं गत्वा कर्म सङ्गिषु जायते ॥
तथा प्रणीनस्तमासि मुढ योनिषु जायते ॥१५॥

हवे जे देहाभिमानी जीव कर्म संगी अथवा कर्म जीज्ञासु छे. एटले शास्त्र पुराण वीगरेमां सत्य बुद्धि राखी पुजा सेवा अने भक्ति विगरे कर्मो करीतना शुभ फळ भोगववानी इच्छा राखनारोछे तेजो रजोगुणनी वृद्धि थया पछी, मृत्युने पामे तो,ते कर्म संगीयोमां उत्पन थाय छे. अने जो तमोगुणनी वृद्धि थया पछी मृत्यु पामे तो, सत्य, असत्य, अने कार्य, अकार्यना विवेक, अथवा विचारहिन मुढ योनीयोमां जन्म पामे छे.

वळी उपर कहेला सत्व, रज, अने तम, ए त्रणे गुणो विषे अधिक अगत्यनो बोध श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन प्रत्ये करे छे.

कर्मणाः सुकृत स्याहुः सात्विकं निर्मलं फलम ॥
रजसस्तु फलं दुःख-मज्ञानं तमसः फलम् ॥ १६ ॥

महर्षियोये उत्तम सात्विक धर्मनुं सात्विक फळ कह्युं छे. अने रजोगुणना धर्मथी उत्पन्न थयेलुं जे सुख ते पाप मिश्रित छे माटे तेनुं फळ सुख अने दुःख मिश्रितज होय छे, अने ते सुख अल्प अने क्षणभंगुर होय छे. हवे तामस धर्मनुं, अज्ञान रुप फळ महार्षियोये एवुं कह्युं छे.

सत्वात् संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एवच ॥
प्रमाद मोहौ तमसो भवतोऽज्ञान मेवच ॥ १७ ॥

सत्वगुणथी,महा प्रकाशवाळुं अने सुख रुप ज्ञान उत्पन्न थाय छे. रजोगुण वृद्धिने पाम्याथी उत्तरो

त्तर अपरीमित लोभनी वृद्धि थाय छे. तेथी तेमां असंत दुःख रहेलु छे. अने तेज दुखनुं कारण अंते थाय छे. तमो गुणथी प्रमाद, मोह, अने अज्ञान उत्पन थाय छे. अने सर्व कर्ममां निर्माल्य थवाय छे.

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ॥
जघन्य गुणवृत्तस्था अधो गच्छन्ति तामसाः ॥१८॥

सत्वगुणनी वृत्तिमां रहेला मनुष्यो ब्रह्मलोकादीक उर्ध्व गतीने पामे छे. जे पुरूषो रजोगुणनी लोभादिक वृत्तिमां निरंतर रहेला छे, अने रजोगुणनां कार्यो अति प्रिति पुर्वक करेछे.ते मृत्यु पाम्या पछी केटलाएक समय सुधी सुक्ष्म देहमां ते त्रष्णा वारंवार भोगव्या पछी पुनःमृत्यु लोकमां आवे छे. हवे जे सत्व अने रजोगुणनी अपेक्षाथी केवळ रहित, अने तमोगुणनी निंद्रा अने आळस्यादिक वृत्तिमां प्रितिवाळा तामस पुरुषो छे ते अधोगति अथवा केवळ नीच योनीने प्राप्त थाय छे.

नान्यं गुणेभ्यःकर्त्तारं यदा द्रष्टानुं पश्यति ॥
गुणेभ्यश्च परंवेत्ति मद्भावंसोऽधिं गच्छति ॥ १९॥

'एटले, सत्व, रज, अने तम ए त्रण गुणो, अंतःकरण, शरीर अने विषय आदीक सर्वे भावनें प्राप्त थइ, ते सघळा लोकीक अने धार्मिक कर्मो कर्त्ता छे. एम अंतरमां रहेलो द्रष्टा देखेछे. अने ज्यारे ते त्रणे गुणोथी आत्माने पर जाणे छे. त्यारे ते द्रष्टा पुरुष मारा भावने एटले ब्रह्मभावने पामे छे. त्यां श्रुति

॥ ब्रह्मवेद ब्रह्मैव भवति ॥ एटले जे पुरुष ब्रह्मने जाणे छे. ते पुरुष ब्रह्मरुपज थाय छे, वळी श्रिकृष्ण भगवान एवुं कहे छे जे.

गुणाने तान तीत्य त्रीन् देही देह समुद्भवान् ॥.
जन्म मृत्यु जरा दुःखै-र्वि मुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ २०॥

देहनी उत्पातिनां बीजरुप जे सत्व, रज, अने तम, ए त्रणे गुणोनो अंते परीत्याग करी, तत्वज्ञान वडे ते गुणोने बाध करीने जन्म, मृत्यु जरा, अने अध्यात्मिकादिक दुःखोथी मुक्त थइ, जीवतां छतां जन्म मृत्यु आदिक संबंधथी रहित जे पुरुषो थयाछे तेज पुरुषो मोक्ष पामे छे.

उपर कह्युं जे त्रणे गुणोनो परीत्याग अथवा तेनुं अतिक्रमण जे पुरुष करी तत्वज्ञान मेळवे छे. तेज मोक्षने पामे छे. ए उपरथी अर्जुन नीचे प्रमाणे श्री कृष्ण प्रत्ये प्रश्न पुछे छे.

अर्जुन उवाच.

कैर्लिङ्गै स्त्रीन् गुणा नेता-नतीतो भवाति प्रभो ॥
किमाचारःकथंचैतां-त्रीगुणानति वर्त्तते ॥ २१ ॥

एटले सत्व, रज, अने तम ए त्रण गुणोने अतिक्रमण करनारो तत्ववेत्ता पुरुष कीया लक्षणोवडे ओळखी शकाय, ते आप मने कहो ए प्रथम प्रश्न बीजो प्रश्न ते गुणातीत पुरुष केवा आचरणवाळो होय छे. ते पोतानी इच्छा प्रमाणे वर्तेछे? के नीयम पुर्वक चेष्टा करे छे? त्रीजो प्रश्न गुणातीत पणानो

कीयो उपाय छे ? एटले केवा प्रकारथी ए त्रणे गु-
णोने तत्ववेत्ता पुरुषो अति क्रमण करे छे. ए प्रश्नोनुं
नीराकरण हे प्रभो कृपा करी करो.

श्रीभगवानु वाच.

श्रिभगवान उत्तर करे छे.

प्रकाशंच प्रवृत्तिंच मोह मेवच पाण्डव ॥
नद्वेष्टिसं प्रवृत्तानि ननिवृत्तानि काङ्क्षति ॥ २२ ॥

सत्वगुणना कार्यरुप जे प्रकाश, तथा रजोगुणना कार्यरुप जे प्रवृत्ति तथा तमोगुणना कार्यरुप जे मोह, तेमांथी रजोगुण अने तमोगुण ए बेउ पोतपोतानी सामग्रीने वश थइ उत्पन थाय छे. अने ते अंते दुःख रुपज छे, एवुं ते तत्ववेत्ता पुरुष जाणेछे; तेथी दुःख बुद्धिवडे ते कार्योनो द्वेष करता नथी; तेज प्रमाणे सत्वादिक गुणोना प्रकाशादिक कार्यो पोत पोतानी सामग्रीने वश थइ, ते निवृत्त थवाथी सुख रुप छे, ते छतां पण तत्ववेत्ता पुरुष सुख बुद्धिवडे तेओनी इच्छा करता नथी. ते पुरुषो गुणातीत कहेवाय छे.

वळी आगळ एवुं कहे छे--

उदासीन वदासीनो-गुणैर्योन विचाल्यते ॥
गुणा वर्त्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठतिनेङ्गते ॥ २३ ॥

एटले जे पुरुष उदासीन रहेछे, तथा सत्वादीक गुणोथी पण चलायमान थइ शकतो नथी, अने तेज गुणो परस्पर वर्त्ते छे, एवा निश्चयवाळो छे, अने

कोइ पण कार्यनो व्यापार करतो नथी ते पुरुष गुणातीत कहेवाय छे. वळी ए विशे भगवान कहे छे.

समदुःख सुखःस्वस्थः समलोष्टाश्म काञ्चनः ॥
तुल्य प्रिया प्रियो धीर-स्तुल्य निन्दात्मसंस्तुतिः॥२४

तत्ववेत्ता पुरुषने दुःखमां द्वेष नथी, सुखमां राग नथी, अने ते दुःख सुख अनात्मरुप अन्तःकरणना धर्म छे, तथा स्वप्नानी पेठे मीथ्या छे, एम जाणीने ते तत्ववेत्ता पुरुष दुःख अने सुखने समान माने छे, तेथी ते पुरुष पोताना आनन्द स्वरुप आत्मामां रह्यो छे; अने एवि स्थितिमां छे, माटे तेने मृत्तिकानो पिंड, पाषाण अने सुवर्ण, ए सघळुं समान छे, तेणे करी सूखना साधन रुपी प्रिय, अने दुःखना साधन रुप अप्रिय, ते पण तेने समान छे, ते तत्ववेत्ता पुरुष धीर छे, माटे तेने निन्दा अने स्तुति समान छे, अने ते माटे ते गुणातीत केहवाय छे.

वळी गुनि विशे एवुं कहे छे.

मानाप मानयो स्तुलय-स्तुलयो मित्रा रिपक्षयोः ॥
सर्वारम्भशपरि त्यागी गुणातीतः सउच्यते ॥ २५ ॥

जे तत्ववेत्ताने मान अने अपमान तूल्य छे॰एटले जेने मान मळवाथी हर्ष थतो नथी, अने अपमाननी प्राप्ति थयाथी खेद थतो नथी, अने जेने मीत्र पक्ष अने शत्रूपक्ष ए बेउ तूल्य छे. तथा जे कर्म रुप सर्व आरंभनो त्याग करे छे. ते पुरुष गुणातीत कहेवायछे.

मांचयोऽव्यभिचारेण भक्ति योगे न सेवते ॥

सगुणान्समती त्यैतान् ब्रह्म भुयाय कल्पते ॥ २६ ॥

जे अधिकारी पुरुष मारा एटले पोताना केवळ शुद्ध चैतन्यनुं अनन्य भक्तिवडे निरन्तर चिंतन करे छे. ते तत्ववेत्ता पुरुष प्रथम कहेला सत्वादिक त्रण्ये गुणोनुं अती क्रमण करीने निर्गुण ब्रह्मभावनी प्राप्ति रुप जे मोक्ष तेने पामवा समर्थ थाय छे.

एटलुं कही अंते श्रिकृष्ण भगवान एवुं कहेछे जे.

ब्रह्मणोहि प्रतिष्ठाह ममृतस्या व्ययस्यच ॥
शाश्वतस्यच धर्मस्य सुखस्यै कान्तिकस्यच ॥ २७ ॥

एटले ए कारण माटे, अमृतरुप, अव्यय रुप, शाश्वत रुप, धर्मरुप, अने एकान्तिक सुखरुप ब्रह्म हुं निर्विकल्प एटले कल्पना रहित छुं एवुं समजी तेवी स्थिति थइ, एटले ते मोक्ष पामवाने योग्यज छे. त्यां प्रमाण "तत्वमसि" नुं छे. एटले ते, तुं ब्रह्म छे. एटले आवरण रहित केवळ निर्विकल्प शुद्ध ज्ञान तेज तुं ब्रह्म छे.

आ प्रसंगे अंतनी सूचना बुद्धिवान अने विवेकी स्त्रि, पुरुषोने एटलीज आपवानी छे के एवि रीते, अति अमुल्य गीताजीमां श्रिकृष्ण भगवाने स्पष्ट दर्शावेलुं छे. ते छतां सांप्रतकाळमां अल्प ज्ञानने लीधे तथा विषयनी अपरीमित त्रष्णाने लीधे विद्वानो अने धर्माधिकारीओमांथी, घणाने मायाना आवरणथी, अज्ञान प्राप्त थयुं छे, तेथी सत्यशास्त्रोना अर्थ सांप्रतकाळना अपरीमीत त्रष्णावाळा स्त्रि पु-

रुषोने, अने पोताने रुचे एवी रीते कर्याथी आपणा आर्यदेशमां अज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धिने पाम्याथी, पोत पोताने निमाल्यं समजवाथी, धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेमांथी ए केनुं परम सत्य पुरुषार्थ करवाने अशक्त थया छे, माटे सांप्रतकाळना उन्नति पामेला मानसीक ज्ञानवाळां स्त्रि पुरुषोने एज उचित्त छे के, तेमणे कोइ पण कार्य कर्यानी पूर्वे, सत्य असत्यनी तूलना करी, तेना परीणामनो विचार करवो अने तेम कर्याथी उपर कहेला धर्म, अर्थ,काम अने मोक्ष ए चारेनी परम उत्तम सिद्धि थवानो संभव छे. एटलुं कही आजनुं व्याख्यान पूर्ण करीयेछइये.

पौष शुद्ध १५ रवीवार. स० १९४२.

प्रकरण १७ मुं.

योगविद्याना प्रश्नोत्तरनो सार.

आ व्याख्यानमां स्थुळ देहमां रहेली जे नाडीओछे तेमांनी शुशुमणा,ईडा,पिंगळा विगेरे नाडीओ अने मुळाधार अने सहश्रारम विगरे चक्र तथा कुंडळनी षड चक्रमां गती विगरेनी केटलीएक अल्प सुचना छे, तोपण निश्चयात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नतीने पामेला तथा ते विद्या जाणवानी इच्छा राखनारा आग्रही, अने अनुभव मेळववाने प्रयत्न करनारा वि-

र्थीओने, तेथी अवश्य कांइक लाभ थइ शकशे. माटे एकाग्र चित्तथी श्रवण करो.

जे नळी वासाना मध्यभागमांथी जाय छे, ते नळी शुशुमणा नामनी नळी साथे संबंध राखेछे. ए शुशुमणा, विद्युत आकर्षकनी नाडीओनी जातछे, अने जे शक्ति शुशुमणा नाडीमांथी जायछे ते जीवंत विद्युत चैतन्यनो समोहछे. आपणे उपर कहेली जे नळी ते मनोमय चक्रनी नाडीओनी साथे संबंध राखे छे.

शुशुमणा नाडीनो प्रारंभ मुळाधरनी साथे थाय छे, अने तेनो संबंध अंते सहश्रारम चक्रनी साथे थायछे. मुळाधारचक्र वांसानां मुळ पासे ज्यां एक त्रीकोण थायछे त्यां छे.

ब्रह्मरंध्रना स्थानो कदापी प्रथक प्रथक ग्रंथोमां प्रथक प्रथक कह्या छे ते छतां तेनुं मुळ स्थान मस्तकना अग्रभागमांज समजवुं.

जे प्रमाणे एक नळीनी नीचेथी, उष्ण हवाना समुहने फुकवाथी, ते उष्ण हवा ते नळीना उपला भागमां जणाइ शकेछे, ते प्रमाणे तमारा मनोमय चक्रमां अधिक उष्णता लागवाथी, तमाराथी शुशुमणानी क्रिया जाणी शकाशे.

हठ योगी एवुं कहेछे जे, ईडा अने पिंगळा ए बेउ नाडीयो अनुक्रमे वाराफरती चालेछे. परंतु जो तमे ए बेउ नाडीयोने बंध करोतो, उष्ण हवाना स-

पुहने शुशुमणा नाडीमांथी जवुं पडेछे; वळी ईडा अने पिंगळा ए बेउ नाडीओ कांइ पण क्रीया कीधा शिवाय, मात्र कुंभक कर्याथी, शुशुमणा नाडी पोतानुं कार्य करवा मांडेछे. ए सघळु छता राजयोगी उपर कहेला बेमांथी, एके साधननो उपयोग कीधा शिवाय, कुंडलीनी शक्तिने जुदाज साधनथी जाग्रत करी शकेछे. राजयोगी जे साधननो उपयोग करे छे. ते साधन एक जातना संस्कारनी गुप्तताछे.

सघळी नाडीयोमां शुशुमणानाडी मुख्य गणावत्रानुं कारण ए छे जे, योगी होय तो चैतन्यना परमाणु मात्र शुशुमणामांथी जायछे. अने साधक होय तो तेना मृत्युना समये तेनो जीवात्मा शुशुमणा नाडीमांथी बाहार जायछे. वळी एथी अधीक जीवात्मा अथवा कारण शरीरना फरवानुं ते स्थानछे.

कारण शरीर निन्द्रावस्थामांज रहेछे एवुं कहेवायलुंछे. परंतु ते साधारण निन्द्रा समजवी नहीं, पण ते योग निन्द्रा समजवी. सघळी जातना विकारो थइ रह्या पछी ते स्थिर थायछे.

योग आनंदना अनुभव लेवामां समाधीनो समास थायछे खरो, परंतु साधारण समाधी शब्दथी, अनेक प्रकारनी स्थितिओ दर्शावेछे.

केटलाएक योगविद्याना ग्रंथोमां एवुं कहेलुंछे जे शुशुमणानाडीमां सूर्य मंडळ रह्युंछे, एनो गुह्यार्थ एवोछे जे, जे समये योगी पोतानुं ज्ञान, चैतन्यना

मध्यबींदुमां स्थिर करेछे, ते समये ते योगी चैतन्य प्रकाशनी साथे अने सर्वज्ञनी साथे समीलन थइ जाय छे, तेणे करी ते सुर्यमंडळ तो शु पण सर्व ब्रह्मांड जोइ शकेछे.

स्थुळ शरीरमां षडचक्र रहेलाछे, पण ते शरीरनुं छेदन कर्याथी जणाइ शकता नथी, केमजे योगविद्याना ग्रंथोमां जे पान अने शाखाओनुं वर्णन करेलुंछे, तेने स्थुळता नथी; परंतु तेटली शक्तिओ अने गतीछे, एम समजवुं.

ए स्पष्ट समजवा सारु, द्रष्टांत एवुं आपेलुंछे जे, योगविद्याना ग्रंथमां एवुं कह्युंछे जे, षडचक्रमां अक्षरो, चैतन्यो, आकृतीओ, देव, देवीओ विगरे रहेलुछे. तेनो अर्थ एटलोजछे के, एवा प्रकार उत्पन करवानी भिन्न भिन्न शक्तिओ तेमां रहेलीले. वळी एवुं कहेलुंछे जे, सहश्रारमने मुख्य आठ बींदुओछे तेनो अर्थ एटलोज छे जे, मनोमय चक्रने मुख्य आठ छेडाओ अथवा द्वुओछे.

उपर कहेला चक्रोमां भेद थवानुं कारण एवुंछे जे, सप्तबींदुमां सप्त शक्ति रहेलीछे. अने कुंडलीनी शक्ति ए प्रत्येक चक्रो भेदी शकेछे. अने जे चक्र, ते भेदेछे, तेना उपर ते मनुष्यनी सत्ता बेसाडेछे.

जे प्रमाणे कुडलीनी शक्ति एक पछी एक चक्र भेदीने जायछे, ते प्रमाणे जे तत्वोना सुक्ष्म वीभाग प्रत्येक चक्रमां रहेलाछे, तेनी साथे ते सघळी

गतियो जोडाएली छे, ते सघळी गतियो उपर कुंडलीनी शक्ति सत्ता मेळवे छे. हठयोगीयोये एवुं कह्युंछे जे, मननुं स्थान चक्षुना भवानी मध्यमां छे. योगना ग्रंथमां जे समीलन चक्र कह्युंछे. तेनो भावार्थ एवोछे जे, ज्यारे कुंडलीनी शक्ति एक चक्रमांथी बीजा चक्रमां जायछ, ते समये ते तेना तत्व अथवा शक्तिने लेती जायछे. ए प्रमाणे सघळा चक्रमांथी, कुंडलीनी शक्ति तेनु तत्व लेती जायछे. अने अंते ते सघळु तत्व अथवा एकठी थयेली शक्तिनो प्रबळ समोह एकठो थायछे.

सप्त चक्रनो, शनी, ब्रहस्पती, मंगळ, शुक्र, बुध, चंद्र अने सुर्य ए सप्तग्रहनी साथे केटलोएक संबंधछे. तेनो प्रारंभ मुळाधरम चक्रनी साथे थायछे. चद्रनो संबंध मननी साथे छे, केमके मन चंद्रनी पेठे चंचळ, अने चलीतछे.

मनुष्यप्राणीनुं मन तेना स्थुळ शरीरमां रहेला चक्रोने भेदतु नथी. परंतु कुंडलीनी शक्ति, भेदेछे, अने ज्यारे कुडलीनी शक्ति अग्निचक्रनी पासे आवे छे, त्यारे मन कुंडलीनी शक्ति साथे समीलन थई जाय छे; अने त्यारेज मनुष्यने धारणा स्थिति प्राप्त थाय छे.

मुळाधरमां रहेली जे गती अथवा शक्ति, ते कुंडलीनी शक्ति छे. तेने घणे प्रसंगे सुक्ष्म सर्प पण कहेलोछे. तेनुं शीर पेटना नीचला भागनी मध्ये

एटले दुंटीना नीचला भागमां होयछे. मुळाधरमां उष्णता वृद्धि कर्याथी, ते कुंडलीनी शक्ति जाग्रत थइ शके छे. ते कुंडलीनी शक्ति वांकी लीटीमां वर्तुळाकार फरेछे, माटे तेने सर्पना जेवी कहेलीछे. अने एनीज गतीथी इडा अने पिंगळा ए बेउ नाडीओ अनुक्रमे वाराफरती चालेछे.

वळी योगना ग्रंथोमां एवुं कहेलुछे जे, कुंडलीनी शक्तिने साडात्रण वर्तुळ अथवा आंटाछे, ए एवुं दर्शावेछे जे, ते प्रणवनी त्रण अने अर्धमात्रामां प्रवेश करेछे. केटलेएक प्रसंगे तेने प्रकाश कहेलोछे, केमजे तेनी गती अष्टप्रकृतीमां जायछे अने कोइ प्रसंगे चार पण कहीछे.

केटलाएक एवुं कहेछे जे, राजयोग प्राप्त करवा सारु माहावाक्य शोधी काहाडवानी अगत्यछे. बीजा एवुं कहेछे जे, योगीये पोतानुं मन एक बींदुमां स्थिर करी, परब्रह्मनुं ध्यान करवुं; वळी केटलाएक एवुं पण कहेछे जे, पोतानो सत्य गुरु एज ध्यान करवानी सत्य वस्तुछे, अने तेथीज सत्य मार्गे जवानुं परीणाम जणायछे. केटलाएक एम पण कहेछे जे, प्रणवनुं एकाग्रताथी उच्चारण करवुं एज राजयोग छे. अने बीजा केटलाएक एवुं कहेछे जे तमारे तमारी इच्छा शक्तिनी उन्नति करी तेने प्रबळ करवानी अगत्यछे. आ सघळा मार्गोमांथी सत्य मार्ग कीयोछे? एवो प्रश्नछे केटलाएक करेछे.

"एनो उत्तर एछे जे, आ सघळानी अगत्यछे एटलुंज नहीं, पण एथी अधिक जाणवानी पण अगत्यछे.

"कैवल्य मोक्षनो प्राप्ति करी लेवी एज राजयोगना अंतनुं परीणामछे."

हवे उपर कहेला अगत्यना बोध विषे आपणे आ प्रसंगे एटलीज सुचना आपवानी छे के, निश्चात्मक बुद्धिज्ञाननी उन्नती पामेला, द्रढ आग्रही अने श्रद्धावान, गुप्तविद्याना विद्यार्थिओये, उपर कहेली अल्प सुचना अने एना संबंधमां पाछळ कहेली सघळी सुचनाओनुं वारंवार श्रवण, पठन, अने मनन करवानो अभ्यास मनपुर्वक निवृत्तिना समये कर्याथी, योग्य समये लाभ जणाववा मांडशे. अने ते जणाया पछी, प्रयत्न जारी राखी, एमां जणाती प्रक्रीयानो विवेकथी सत्य नीर्णय करवानी शक्ति जेम जेम आवती जशे, तेम तेम अधिक आनंद उत्पन थइ प्रयत्न अधिक द्रढतार्थी करवानी शक्ति आवशे. अने योगेश्वरनी क्रपाथी अंते कुंडलीनी शक्ति परीपुर्ण जाग्रत थई एटले महा अदभुत अने अलौकिक शक्ति प्राप्त थइ शकशे. एटलुंज नहीं पण अंते कैवल्य मोक्षनुं पण ए साधन छे.

पौषवद्य ७ रवीवार संवत् १९४३

प्रकरण १८ मुं.

ज्ञान प्रदिपिकानो सार.

आपणे पाछळ गयेला पांच प्रकरणमां गुप्तविद्या

विषे व्याख्यान कर्या छे, हवे आ प्रसंगे पण ज्ञान प्रदिपिकामांथी केटली एक अगत्यनी सूचनानुं व्याख्यान कर्याथी, आग्रही अने श्रद्धावान ब्रह्म जीज्ञासु विद्यार्थिओने सत्य ज्ञाननी उन्नति करवामां निश्चय विशेष लाभ थइ शकशे.

प्रथम जे गुरु अनादी सुख अने आनंदनुं मूळ छे, जे गुरु ज्ञानमय छे, अने ज्ञान रूप छे, एवा ब्रह्म रूपी गुरुने आपणे प्रणाम करीने तेवा गुरु अने ब्रह्म जीज्ञासु शिष्य ए बेउ वचे थयेला संभाषणनु व्याख्यान आ प्रसंगे मळेला सूज्ञ, गुणज्ञ, अने केवळ सत्य ज्ञाननी वृद्धि करवानी इच्छा राखनारा जनो आगळ करीये छइये.

कोइ एक प्रसंगे अध्यात्मिक एटले ज्वर, क्षइ, विगरे देहिक व्याधिओ, आधिभौतिक एटले जे पिडा मनुष्य, अने पशु पक्षी आदीकथी थइ शके ते, अने आधिदैविक एटले लु लागवी, पर्वत उपरथी पडवुं, विद्युत, अने वंटोळीया आदीक वायुथी पीडा थवी वीगरे जे अकस्मात पीडा थाय ते ए प्रकारना त्रिविधि तापनो अनुभव लीधेलो एक ब्रह्म जीज्ञासु शिष्य, एक परम पवित्र अने जेणे पोतानी सर्व इन्द्रिओनो सर्व काळने विषे निग्रह करेलो छे, एवा आत्मज्ञानी गुरुना आश्रममां जइ तेने डंडवत प्रणाम करी विनय पुर्वक बोल्यो के हे स्वामी हुं आ संसारथी अधमुओ थयेलो परम दुखी छु, माटे मारा

अनाथ अने संसारी जीव उपर कृपा करी मने आत्मबोध करी मारा परीताप अने दुखनुं नीवारण करी, मारी रक्षा करो.

"गुरुये प्रेमपुर्वक कह्युं जे हे शिष्य तु संसारी नथी, पण तु त्रण शरीर, त्रण "अवस्था, अने पंचकोष एनो द्रष्टा अथवा साक्षीसचिदानंद स्वरूपछे." एमां त्रण जे शरीर कह्या ते स्थुळ, सुक्ष्म, अने कारणछे. जाग्रत, स्वप्न, अने सुसुप्ति ए त्रण अवस्था छे. अने ज्ञानमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, अने आनंदमय एवा पंचकोशछे. ए सघळा विषे आपणे पुर्वे कहेला व्याख्यानोमां यथार्थ रीते वर्णन करेलुंछे. तेथी आ प्रसंगे ए विषे अधिक समय काढवानी अगत्य नथी.

शिष्य—हुं ए सघळानो साक्षी सचिदानंदस्वरुप केम थइ शकु, ए मने समजातु नथी.

गुरु—चित्त राखीने सांभळ संसार तने नथी पण देह अथवा शरीरनेज संसारछे. अने ते शरीरनीज त्रण अवस्थाछे. ए विषे श्रीशंकराचार्ये आत्मबोधमां जे कह्युंछे तेमांथी अल्प सुचना आप्याथी अधिक स्पष्ट रीते समजाइ शकशे.

शरीर स्थुळ, सुक्ष्म, अने कारण एवा त्रण प्रकारना होयछे. तेमां स्थुळ शरीर पृथ्वि, जळ, तेज, वायु, अने आकाष ए पंचमहाभुतोना परमाणुओना

त्रिभागोनुं छता क्रियमाण, संचित, अने प्रारब्ध ए त्रण कर्मो अथवा क्रियाओथी उत्पन थयेलुछे; अने एज स्थुळ शरीर सुख अने दुःख हर्ष अने शोक भोगववानुं स्थानछे.

स्थुळशरीरनी चंचळता अने जाणवापणानो जे समय ते, जाग्रत अवस्थाछे. ए शरीरनो आत्मानी साथे कांइज संबंध नथी.

हवे सुक्ष्म शरीर प्राण, अपान, व्यान, उदान, अने समान ए पंचवायु चलीत मन अने स्थिरबुद्धि तथा शब्द, स्पर्श, रस, रुप अने गंध ए पंचज्ञानइन्द्रियो तथा पंच कर्मइन्द्रियोनुं उत्पन थाय छे. ए सघळु सुक्ष्म तत्वनुं बनेलुंछे तेथी तेने सुख अने दुःख हर्ष अने शोकादिक पण तेज प्रमाणमां सुक्ष्म, मानसिक, अने काल्पित होयछे. उपर कहेला पंचप्राण तेमां प्राणवायुनु स्थान हृदयनी पासे जे बे नळीयोछे, ते छे तेनुं कार्य श्वास लेवानुछे. अपानवायुनुं जे, स्थान मुळ घर छे,ते,मळ,मुत्रादिक काहाडवाना कार्योमां आवे छे.व्यानवायु शरीरमां सर्व व्यापिकछे.ते प्रसेवो उत्पन करी शरीरना छिद्रोमांथी बाहार काहाडवा विगरेना काममां आवेछे. उदानवायुनु स्थान कंठछे. ते शब्द उच्चारण करी बोलवाना कार्योमां आवेछे. समानवायु दुटीनी आसपास पेडु आगळ होयछे. ते अन्न पाचन करी तेनो रस सघळा शरीरमां यथा योग्य पुरो पाडवाना काममां आवेछे. सारांस एछे के, सु-

क्ष्म शरीरथी जे सुख अने दुःखनो अनुभव थायछे, ते आत्माने थतो नथी आत्मा तो तेथी केवळ विरक्त ज छे. तेनी चंचळतानो समय स्वप्नावस्थाछे.

हवे उपर कहेला स्थुळ, अने सुक्ष्म ए बंने देहनुं मुळ कारणरूप बीज ते कारण शरीर केहेवायछे. ए त्रणेनी उत्पत्तिनुं कारण वरणन थइ नहीं शके एवी माया अथवा अविद्या छे. अने जीवात्मा अहंम शब्दथी प्रसिद्ध छे. अने एनी चंचळता सुसुप्ति अवस्था अथवा घाड निन्द्रानो समयछे. तुं पोते जे आत्मा तेतो उपर कहेला त्रण शरीर अने त्रण अवस्थानो साक्षी रूपछे. तने तेनो संबंध कांइज नथी तुंतो ते सघळाथी केवळ विरक्तजछे.

शीष्य—ज्यारे हुं स्थुळ शरीर पोतानुं मानुं छुं, त्यारे उपर कहेला त्रण्ये शरीरनो भिन्न साक्षी जोनार हुं केम थाउं ए कृपा करी मने कहो.

गुरु—एनी सत्यता जाणवा सारु तारे एटलोज विचार करवानोछे के, तें एम कह्युं जे "मारुं वस्त्र" ए उपरथीज तने समजाइ शकशे के वस्त्र अने तुं ए बेउ एक नथी, पण प्रथक बे वस्तु छे. ए उपरथी तुं विचार कर के उपर कहेला शरीरथी तुं भिन्न छे. अने तेनो जोनार मात्र साक्षी छे. अने जोवानी वस्तु ते शरीर छे.

एना संबंधमां श्रिशंकराचार्यना शिश्य विद्याधरण स्वामी पंचदस प्रकरणमां एवुं कहे छे के, जे-

नाथी जाग्रत, स्वप्न, अने सुसुप्ति ए त्रण्ये अवस्था जणाइ शके छे तेज तुं आत्मा छे. अने ते जाते स्वप्रकाष अने चिदात्मा ज्ञान रूप छे.

वळी ए विषे चिद्वेसित्कर्णम नामे ग्रंथमां सर्वानुं भाव योगी एवुं कहे छे जे, ज्यारे मनुष्यने जाग्रत अवस्था होय छे, ते समये, स्वप्न, अने सुसुप्ति ए बेउ अवस्थाओ होती नथी. तेज प्रमाणे ज्यारे मनुष्य स्वप्ना अवस्थामां होय छे, त्यारे जाग्रत अने सुसुप्ती ए बे अवस्थाओ होती नथी. अने तेमज सुसप्ति अवस्थामां, जाग्रत, अने स्वप्ना अवस्था होती नथी. ए त्रण्ये अवस्थामां प्रवेश करनार चित्तनी गती छे, अने ते नीरंतर तुर्यावस्था जेवुं प्रकाशमान अने आनंद रुपछे. ते परम आनंद रुप चित तेतुंछे.

एज सत्यता श्रिमंत शंकराचार्ये पोताना पंचरत्न प्रकरणमां यथार्थ रीते समजावी छे. तेमां एवुं कह्युं छे जे. जाग्रत अवस्थामां शरीरनी इन्द्रिओना भोगादिक पदार्थो जाणनार साक्षि सर्वज्ञ शिवरुप हुंज छु. तेमज स्वप्नावस्थामां जे मन द्वारा जे कांइ द्रष्टोत्पति थाय छे. तेनो साक्षी सर्वज्ञ परमाणु शिवरुप हुंज छुं, अने सुसुप्ति अवस्थामां मन संकोचाइ, अंधकार रुप अचलित मायानी स्थितिमां छे तेने जाणनार पण हुं सर्वज्ञ शिवरुप छु.

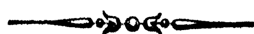
वळी हुं सर्वज्ञ साक्षी शीवरूप तुर्यावस्थानो केवळ उत्तम आनंद जाणनार छुं.

वळी आगळ शंकर स्वामी एवुं कहेछे जे, हुं देह नथी, हुं इन्द्रि, पंच प्राण, मन अने अहंकार एमांनुं कांइज नथी, हुं बुद्धि पण नथी. हुं, स्त्रि, पुत्रादिक संबंधथी अने द्रव्यादिकथी पण विरक्त छुं, हुं ए सघळानो साक्षिभुत प्रत्यागात्मा अने शिवछुं, ए माटे, जे ज्ञानना योगे, उपर कहेली त्रणे अवस्थाओ आवी, अने गइ, देखाइ अथवा अद्रष्ट थइ, तेज परम उत्तम ज्ञान साक्षी भूत छे. अने तेज साक्षी भूत तुं पोते छे. ते त्रण अवस्था तुं अथवा तारी नथी. तुं तो सच्चिदानंद स्वरुप आत्मा छे.

वळी शंकरस्वामीये अद्वैत मार्कंडेय नामे ग्रंथमां एवुं कह्युं छे के, जे सच्चिदानंद ब्रह्म ते हुं पोते थयो छुं. एटले सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान विगरे परम उत्तम केवळ चैतन्य परमाणुओनोज पोतेछे, ते वीना बीजी सर्वे कल्पनानो लय थयो, तेथी बीजुं कांइज रह्युं नही, एवुं जे सत्य ज्ञान तेज निर्मळ पोते सच्चिदानंद रूप छे. तुं उपर कहेली त्रण्ये स्थिति अथवा अवस्थामां छे. माटे तुं सत्य स्वरुप छे. तारामां ए त्रण्ये स्थितिनुं ज्ञान छे माटे चित्त रूप कहेवाय छे वळी तुं स्वप्न रहित अने समाधिनी स्थितिमां उत्तम आनंदमां रहेछे. माटे आनंद रूप छे. ए प्रमाणे तुं पोते ब्रह्मज छे. जे के सत, चित्त अने आनंद स्वरूप छे, अने ते अकर्ता, अने अभोक्ता छे; एटलेथी ए वीषय आगला प्रसंग उपर पूर्ण करवानुं राखी आज-

नो विषय पूर्ण करीये छइये.

पौष वद्य १४ रविवार संवत् १९४३.



प्रकरण १९ मुं.

आ प्रसंगे निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति पामेला ब्रह्म जीज्ञासूजनो आगळ, ज्ञान प्रदिपिकामांथी पाछला व्याख्यानना संबंधमां बाकी रहेली अगत्यनी सुचना आपीये छइये.

पाछला व्याख्यानना अंतमां गुरुये एवुं कह्युं जे तारो आत्मा जड प्रक्रती रहित, ज्ञानमय अने आनंदमय छे, अने तुं अकर्ता अभोक्ता सच्चिदानंद स्वरुपछे, ते उपरथी शिषने शंका थइ जे "हे परम क्रपाळु गुरु ज्यारे हुं सघळा कार्यो करुछुं अने तेना संबंधथी सुख अने दुःख भोगवुंछुं त्यारे हुं अकर्ता अने अभोक्ता ब्रह्म केम केहेवाउं. गुरु केहछे जे, श्रि शंकराचार्ये आत्मबोधमां एवुं कह्युंछे जे, आत्मा कर्ता नथी, पण अज्ञाने करी पोते कर्ता अने भोक्तापणु मानी लीधेलुंछे; केमजे आत्मातो स्नेह, इच्छा, सुख, अने दुःख ए सघळाथी रहितछे, अने सघळा गुणो मानसिक ज्ञान अथवा अल्पबुद्धिना परीणामछे, बुद्धि आत्मा नथी, अने ते आत्माना कार्यो पण नथी, केमजे बुद्धि प्रक्रतीना समीलनथी थयेलीछे, एवुं पाछळ वारंवार कह्युंछे. अने ए गुणो मात्र जा-

मुक्ति अथवा कैवल्य मोक्षछे."

वळी एनाज संबंधमां भागवतना एकादस स्कंदमां श्रीकृष्णभगवाने उधवजी प्रत्ये एवुं कहेलुंछे के "जे प्रमाणे अग्नि काष्टने प्रकाशमान पण करेछे अने तेने दहन पण करेछे, अने ते अग्नि पछी तेनाथी विरक्त अथवा छुटो थाय छे तेज प्रमाणे आत्मा स्थुळ, सुक्षम, अने कारण ए त्रणे देहने प्रकाशमान पण करेछे अने तेनुं दहन पण करेछे. एटले (आत्मानुंज सत्यज्ञान तेज त्रण्ये देहनुं दहनछे) अने तेथी अंते आत्मा विरक्त अथवा छुटो थई पोते स्वप्रकाषमान अने देदीप्यमान शुद्ध रहेछे. ते माटे आत्मा उपर कहेला त्रणे देहथी भिन्न विलक्षण छे, अने ते देहथी जाणी शकाय एवो नथी एज उपदेश सुतसंहिताना मुक्तिखंडमां श्रिमहादेवजीये श्रिविष्णु प्रत्येपण कह्योछे.

भगवतगितामां श्रीकृष्ण भगवाने एवुं कह्युं छेजे "जे मनुष्य कार्य अने कारण ए बेउना भेदने यथार्थ रीते सत्य ज्ञानथी समजी विवेकथी वर्ते छे. तेने कोइ पण रीतनुं संकट आवतुं नथी, अने ते कांइ पण संशय शीवाय एवुं द्रढ समजे छे के, हुंतो साक्षी आत्मा छुं, हूं ब्रह्म छुं तेज परम ज्ञानी मारुं स्वरुप छे.

वळी वेदमां कोइ प्रसंगे एवुं कह्युं छे जे "जे योगी संपुर्ण सत्य ज्ञान प्राप्त करी पूर्ण थयो छे, तेने कोइ पण रीतनां कर्म करवानी अगत्य रही नथी, जो

कदापी कांइ पण कर्म करवानी न्युनता रही गइ होय तो, ते सत्य अने पूर्ण ज्ञानी कहेवाय नहीं.

वळी ज्ञान प्रदिपिकामां एक प्रसंगे एवुं कह्युं छे जे, जे मनुष्य आवा विषयो सत्य श्रद्धाथी वांचे छे अथवा एकाग्रताथी श्रवण करी, मनन, अने निदिध्यास करवानो अति आग्रहथी अभ्यास राखे छे; ते आ संसार रूपी महासागर अल्पश्रमे उतरी जइ, मुक्तिना अचळ कीनारे जइ पोहोंचे छे. एवी रीते श्रीवसिष्ठ मुनीये श्रीराम प्रत्ये कह्युंछे. तेवी रीते आगळ वसिष्ठ कान्डमां वसीष्टजीये राम प्रत्ये एवुं कह्युं छे जे, जेम कोइ समुद्र पार उतरवानी इच्छा राखनारो, नावनी सहायतानी इच्छा राखे छे, तेम संसाररूपी महासाग्रर उतरवा सारु कोइ महा समर्थ केवळ परोपकारी रुषी अने मुनीयोनी सहायता मेळववानी अवश्य अगत्य राखे छे.

" हवे पुनरावृत्ति, अने रूपांत्तरो वीगरेनो अंत आव्यो छे. हुं प्रक्रतीना आवरण रहित एक इश्वर "छुं. मारामां आ चळ अने अचळ ए बेउ श्रष्टि अने "ब्रह्मांड छे जे गुरु आ सघळी गुप्तता जाणेछे, तेवा माहा पुरूष योगेश्वर सर्वोत्तम गुरूदेवने हूं साष्टांग दंडवत प्रणाम करुं छुं.

उपर कहेला सर्वोत्तम उत्तम उपदेशना संबंधमां उन्नति पामेला विद्वान, ज्ञानी अने विवेकीजनोने सुचना एटली आपवानी छे के, ज्यां सुधी भारत

भूमीमां एवो द्रढ निश्चय हतो के, केवळ शुद्ध चैतन्य आत्मा एकज सर्व मनुष्य प्राणी अने स्थावर जंगम वीगरे भ्रांति रूप सर्वे पदार्थोमां सर्व व्यापीक एक ज छे, अने तेनो आभाष गुप्त रीते सर्वमां रहेलो छे, जेम सूर्य अने चंद्र विगरेनां प्रतिबिंब एक छतां भिन्न भिन्न जळाशयमां भिन्न भिन्न जणाय छे. तेमज एकज प्रबळ आत्मा मीथ्या कल्पना रूपी आवरणनो लय थया पछी, पोतानी महा अदभूत शक्ति प्रकाष करे छे; अने सर्व ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने लयनुं कारण तेज आत्मा छे. ते विना बीजुं सघळुं मिथ्या कल्पनानुं क्षण भंगुर कार्य छे. अने ते मिथ्या छे. एक सत्य मात्र आत्माजछे. एवा उत्तम ज्ञानथीज मीथ्या मोह, दंभ, स्वस्वार्थ विगरे दुर्गुणोनो नाश थइ, सघळा मनुष्य प्राणीमां समभाव, अने भ्रातु भावना द्रढ निश्चयथी, उत्तम प्रकारनी ऐक्यता थइ, सर्वेनी प्रापंचीक, समाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति अति उत्तम प्रकारनी थइ, धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष ए चारेनी सिद्धि एवाज केवळ सत्य ज्ञानथीज थइ छे; एवुं आपणे अति प्राचिन काळना भरतखंडना इतीहास उपरथी स्पष्ट जणाय छे. अने ज्यारथी एवा सत्य ज्ञाननो लोप थइ, आर्य बंधु पोताना मिथ्या कल्पनानां रूपो तथा मायावी जीवात्मा अने प्राणने सत्य मानी पोते निर्बळ, अने

अल्प ज्ञानी, एवो बुद्धिवान पुरुष छतां मिथ्या निश्चय कर्याथी, उत्तरोत्तर आर्य बंधुओ असक्त अने निर्माल्य थता गया. अने सर्वे कार्योमां कोइ अदृश्य इश्वरनी सहायतानी आश्या राखी यथार्थ रीते सत्य पुरूष प्रयत्न करवानुं छोडता गया, तेथी तेमनी प्रापंचिक, सामाजीक, राजकीय, अने धार्मिक ए चारे स्थिति निर्बळ थती गइ, अने केवळ पशुवत निस्तेज थता गया; माटे आपणे ज्यांहां सुधी सांप्रत काळना उत्तम राज्य कर्तानी छायामां छइये; अने ज्यांहां सुधी स्वपुरुषार्थ करवामां आपणे प्रातिबंध नडता नथी त्यां सुधी परस्पर क्लेश, मिथ्या अभिमान, अने केवळ पोतानो स्वार्थ करी लेवानी तृष्णा विगेरे दुर्गुणोनो त्याग करी, परस्पर सत्य प्रेम अने प्रितिथी सर्वे कार्योमां वर्ति, प्रथम पोतानी प्रापंचि, सामाजीक, अने धार्मिक स्थिति पुर्ववत्त उत्तम करवाने बुद्धिवान अने विद्वान पुरुषो प्रयत्न करशे तो, निश्चय, उत्तम, धर्म, अर्थ, काम, अने अंते विवेकथी सत्य अने सनातन धर्मनी मर्यादामां रह्याथी मोक्षनी पण प्राप्ति थइ, अखंड अने अविनाशी सुख प्राप्त थशे.

माघ वद्य १२ रवीवार संवत् १९४२.



प्रकरण २० मुं

विवेक चंद्रिकानो सार.

राजयोग संबंधी केटली एक अगत्यनी सुचना विवेक चंद्रिका नामे अमुल्य ग्रंथमां पण आपेलीछे. तेमांनो सार आपणे विवेकी अने श्रद्धावान ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिओनी आगळ प्रसिद्ध कर्याथी, ते मने स्पष्ट रीते जणाशेजे, सघळी द्रश्य वस्तु अद्रश्य पाम्या पछी एकज अखंड अने अवीनाशी शुद्धचैतन्य मात्रज रहेछे. ते परब्रह्म अथवा परमात्माछे.

सघळा मनुष्य अहोनीश संसारना माइक अने क्षणभंगुर सुखनी प्राप्ति सारु, अगणीत प्रयत्न कर्या करेछे, परंतु जे अक्षय अने अनंत काळसुधी सुख रही शके तेना साधनो भणी लक्ष योग्य रीते घणा जनो आपता नथी. अक्षय सुख प्राप्त करवाना मुख्य साधनो विवेकचंद्रिकामां दर्शावेला छे. ए साधनोवडे मुमुक्षु अने संस्कारी ब्रह्मजीज्ञासु पुरुषो अल्पश्रमे अक्षय ब्रह्मनुं अनादी सुख प्राप्त करीशकेछे. एवुं कह्युंछे.

एमां विमळचित्त एटले निर्मळ मनना शिष्य, प्रबोधचंद्र एटले अनंत बुद्धिवाळा सत्य गुरुने प्रणाम करी पुछेछे जे, हे गुरु संसार रुपी महासागर कीया साधनोवडे उतरी शकाय ? गुरु कहेछे जे, हे शिष्य तुं विवेकी अने संस्कारी छे; अने तुं नित्य अने योग्य समये स्वार्थ अने फळनी इच्छा रहित परोपकारना

सत्य कर्मो करनाराछे, माटे जे मनुष्य दैहिक सुख सत्य मानी तेमां लुब्ध रहेछे अने जे इन्द्रिओना सुखमांज आनंद पामनारा छे तेवा पापी मनुष्यने जे सत्य ज्ञान समजातु नथी, ते ज्ञान हुं तने कहुछुं.

संसारनी अपरीमित अज्ञाना बंधनथी मुक्त करनारु जे ज्ञान, ते ब्रह्मज्ञानछे, अने ए ब्रह्मज्ञान जे विवेकी एटले जेने सत्य असत्यनो निर्णय करवानुं ज्ञानछे; तेनेज प्राप्त थइ शकेछे. ए उपरथी शीष्य पुछेछे के हे गुरु ब्रह्मज्ञान एटले शुं ? संसार कोने केहवो, ब्रह्ममांथी संसार केवी रीते उत्पन थायछे ? अने विवेक कोने केहेवो ?

गुरु केहेछे हे शिष्य ब्रह्म अनीर्वचनीयछे;एटले शब्दथी वर्णन थइ शके एवो नथी, ते सेहजमां लक्षमां आवे एवो नथी, ते जन्ममर्ण आदीथी विरक्त एक स्वतंत्र छे. ते कोइ प्राणी नथी, जीव नथी,वळी ब्रह्म बाह्य अने अंतर स्थितिथी विरक्तछे, ते इन्द्रिओना सुखथी वीलक्षण सुख रूपछे, तेमां सर्वपणुछे, तेने समय, अने अवकाशनी मर्यादा नथी, नीरंतर स्वप्रकाशमानछे, ते कोइ पण जातना अक्षर रहितछे. सर्व व्यापक होइने साक्षीभुत छे, वळी ते सत एटले अद्‌भुत इश्वरी शक्तिनो जीवंत परमाणु रूपे सघळी चळ अने अचळ श्रष्टिमां रहेलो छे.

संसार कांइ सत्य वस्तु नथी, पण तेतो मात्र अज्ञानी मनुष्यनी अहंपद, अथवा हंकारनी एक

स्थिति छे; केमजे ते पोताना अखंड सुखथी अज्ञान छे; अने तेणे स्वप्नावत मायावी पदार्थो, शरीर, इन्द्रियो विगेरेनी रचेली मिथ्या भ्रांतिने पोतानी सत्य वस्तु मानी लीधेलीछे, तेथी ते मिथ्या पदार्थोमां भिति अने अभिती करेछे. वळी ते अज्ञानी मनुष्य पोताना नाशवंत शरीरनो नाश थवानुं ज्ञान अहो नीश मनमां नहीं राखवाथी ते पोतानी स्त्रि, पुत्र, द्रव्य, अने सघळा संसारना पदार्थो विषे अपरिमित स्नेह बांधी, तेमां लुब्ध थायछे; परंतु ए सघळी संसारनी मिथ्या आस्थिर वस्तु जेम पाणीना मोजा वायुथी उत्पन थायछे, अने ते लय पामेछे तदवतछे. ए प्रमाणे जे अज्ञानी मनुष्यछे अने जेने सत असतनो विवेक नथी, अने जेने स्थाइ अने क्षणभंगुर वस्तुनुं ज्ञान नथी, ते सत्यज्ञान समजी शकतो नथी.

वास्तविक जोतां आ संसार ब्रह्ममांथी उत्पन थायछे, एवुं अविवेक अथवा अज्ञानथी मनुष्य समजेछे, विवेकथी असत्यनो नाश थइ शके, एटले सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करवाथी जे असत्यनो नाश करी शके, ते विवेकछे वळी विवेक एटले जे आत्मा आ सघळी कल्पनानी भ्रांतिनो साक्षीभुतछे, तेने ओळखवो अथवा जाणवो.

ए विवेकथी जेने द्रगदृश्य विवेक कहेछे, ते जाणी शकायछे.वळी ए विवेकना योगे आपणे पाछला वाख्यानोमां कहेला पंचकोष अने पंचभुतने जाणी शकायछे.

वळी ए विवेकथी नाम रुप विवेक, एटले रु-
पोना केवी रीतना नामोछे ते जाणी शकायछे,तथा
ए विवेकथी, तत्व विवेकने जाणी शकायछे, एटले
तत्वो केवी रीते बनेलाछे, अने तेना कार्यो केवी रीते
थइ शकेछे, ए सघळानुं यथार्थ ज्ञान थइ शकेछे;एवी
रीते उपनीषद अने पुराणो वीगेरेमां पण विवेकनी
व्यवस्था करेलीछे. हवे आपणे उपर कहेला दृगदृश्य
विवेक विषे अधिक विचार करीशुं.

उपर कहेला दृगदृश्य शब्दमां दृग एटले जोनार
चक्षु, अने दृश्य एटले शब्द, स्पर्श, रस रुप अने
गंध ए पंचइन्द्रियोथी जाणवानो गुण अने शास्त्र
वीगेरे बनेला सघळा पदार्थो ए विना दृग बे प्रका-
रना कह्याछे. तेमां प्रथम दृग जेने आदीछे. ते छे,
अने बीजो दृग अनादी, अनंत अने नाश पामे नही
एवोछे. ए बीजो दृग मन सहित सघळी तात्विक श्र-
ष्ठिनी उत्पत्ति, स्थिति, अने प्रळय अथवा नाशनो
द्रष्टाछे, ते बाह्यारनी अने असत्य बुद्धि वीगेरेथी
प्रकाश पामेलो नथी, तेतो मात्र स्वयंज्योति अने
सर्वज्ञछे. ए बीजा दृगने सतशास्त्रामा कुटस्थ ब्रह्म
आत्मा अने साक्षी वीगेरे घणा नामे कहेलोछे.

हवे उपर कहेला प्रबोध चंद्रगुरु अंतःकरणनुं
विवेचन करे छे. " अंतःकरणना योगे दृगनो जे
मुळ स्वभाव बुद्धि वीगरे ते जोवानो छे. ते दृग स्व-
रुपनुं ज्ञान अंतःकरणथी थाय छे, अंतःकरण वा-

स्तविक जोतां ते सत्य पण नथी, अने असत्य पण नथी, ते प्रमाणे सत्य असत्य नथी. तेनी कांइक समय सुधी स्थिति होती नथी, एवुं शास्त्रमां कह्युंछे; माटे ते सत्य नथी, वळी सर्वज्ञ आत्मा तेने जाणेछे, माटे ते असत्य नथी. ते ब्रह्म नथी केमजे ते अचेतन अने अशक्त छे. वळी ते ब्रह्म वगरनी बीजी कांइ प्रथक वस्तु नथी केमके जे प्रथक होय ते असत्यछे. वळी ब्रह्म विना बीजुं कांइ प्रथक वस्तु छेज नहीं, ते माटे ए वस्तु वरणन नही थइ शके एवी छे.

जे प्रमाणे लोखंडनुं पोलाद करवा सारु बीजी वस्तुनी सहायतानी अगत्य छे ते प्रमाणे अंतःकरण परतंत्र छे. वळी, आत्मा, कर्ता अने भोक्ता छे एवुं ते आपणने मनावे छे, माटे ते समये ते स्वतंत्र छे.

वळी सर्वनुं कारण रुप जे अंतःकरण अथवा मन तेनी बे स्थिति छे. पोतानी प्रथम मुळ स्थितिने ज्यारे ते प्राप्त थाय छे त्यारे ते सघळी श्रष्टिनो नाश करे छे. अने ज्यारे ते पोतानी कल्पनानी स्थितिमां आवे छे त्यारे ते सघळी श्रष्टि उत्पन करे छे. अने एज माया अथवा अविद्या पण कहेवाय छे.

जे सत्वगुणनी सत्तानुं कारण छे, तेज माया वस्तु छे, अने ते इश्वरनी सहायभुत सत्ता थायछे अने तेज ब्रह्मनी शक्तिनो आभाष अथवा मायाछे. अने तेज सघळी उत्पत्तिनुं कारणछे, अने अविद्या तेज अंतःकरणछे. अने ते सत्वगुणनी साथे रजोगुण अने

तमोगुण मिश्रित थायछे. ए बेउ गुणो जीवात्मा अथवा अविद्या सहित ब्रह्मनी शक्तिना आभाषने स्वाधिनछे. अने तेथी सघळी श्रष्टि जाग्रतथी लइ मोक्षना लय परीयंत उत्पत्तिना कार्यमां आवेछे.

एज माया अने अविद्याथी जे स्वतंत्र छे, तेने बंधन थाय छे. इश्वर जे के मायामां ब्रह्मनो आभाष छे ते इश्वरना संबंधमां माया सर्व व्यापीक, अभाज्य अने ब्रह्म जेवुं ज्ञान, श्रष्टि अने तेनी सघळी भोग्य वस्तुमां दर्शावे छे. अने जे स्वआत्मा अथवा ब्रह्मनुं ज्ञान छे ते माया अथवा अविद्यानो नाश करे छे. अने एकज मात्र सत्य ब्रह्म रहे छे.

आवी रीतनो केवळ आनंदमय ब्रह्मनो अनुभव करवा सारु ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये एवी एकांत जगा शोधवी के, ज्यां कोइ पण रीते मनुष्य, अने पशु पक्षी आदीक कोइथी विक्षेप थइ शके नहीं, अथवा अनुकुळ होय तो एवी वाडी शोधी काहाडवी केज्यां कोइ पण रीतनी गडबड नही होय, अने सुवासिक पुष्पादीकनी आनंदकारी सुगंध आवती होय. अथवा आनंद उत्पन करे एवी टेकरी अथवा निवृतिवाळो नदीनो कीनारो अथवा कोइ विशाळ तळाव जेनी आसपास पवित्र अने सुंदर अस्वथ वृक्षोनी घटा होय. अथवा कोइ पण एवी जगा होय के ज्यां तेने रेहेवाथी आनंद अने सुख उपजे. एवी एकांत जगामां ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थिये रु अथवा उन

अथवा एवि रीतनी कांइ पण नरम वस्तु भरेली रेशमनी मृदु गादी उपर विद्यार्थि जो नैष्टिक "बाळ" ब्रह्मचारी होय तो सिद्धासन करी बेसवुं. (सिद्धासननी रीत राजऋषीमां दर्शावेली छे) अने विद्यार्थि जो ग्रहस्थि होय तो पद्मासन, अथवा सुखासन साधारण पलांठीवाळीने बेसवुं. सारांस एछे जे, श्रिशंकर स्वामीये अपरोक्षानुं भुतीना ग्रंथमां कह्या प्रमाणे जे राजयोगी विद्यार्थि होय तेने अनुकुळ आवे एवी रीते कोइ पण रीतनुं आसन करी बेसवुं पण कोइ पण रीतनुं भयंकर आसन करी पोताना देहने अयोग्य कष्ट आपवुं नहीं. एवी रीते आसन उपर बेसी विद्यार्थिये सविकल्प अने निर्विकल्प ए बेउ समाधीनी रीत लक्षमां राखवी. वळी आत्मा अने अनात्मा ए बेउनो यथार्थ भेद पणजाणवानी अगत्य छे. ते शीवाय संपुर्ण वैराग्य राखवो. एटले माइक सघळी वस्तुमां संपुर्ण अलक्ष थवो जोइये, तेम थयेथी आपणे उपर कह्या प्रमाणे ते विद्यार्थि पोते हग आत्मा थशे.

हवे गुरु, आत्मा विषे बोध करे छे. आत्मा एटले निर्मळ बुद्धिनो अवतार अथवा आकाषिक शुद्ध चैतन्य परमाणु जेने आदी अने अंत नथी ते छे अने अनात्मा एटले मननी कल्पना अथवा कार्य करवानुं स्थान, जे ठेकाणे तेना स्नेह, अने तिरस्कार, प्रिति अने अप्रिति वीगेरे कार्यो उत्पन थाय छे, ते

अंतःकरण ते शीवाय स्थुळ पंच महाभुतनी श्रष्टि उत्पन थवानुं स्थान, जे स्थानमां मानसिक अने स्थुळ श्रष्टि कल्पनाथी उत्पन थाय छे. तत्व विवेकथी माया केवी रीते श्रष्टि उत्पन करी शके छे. ते समजी शकाय छे; एटले तत्वना ज्ञानथी, एटले भिन्न भिन्न तत्वना संयोग कर्णथी, अनेक प्रकारनी वस्तु उत्पन थइ, ब्रह्मांडादिक उत्पन थाय छे, अने तेना प्रथःकरणथी लय पामे छे; एज माया छे. ए विषे आपणे सूबोध पत्रिकाना पुर्वार्धमां यथार्थ रीते वर्णन करेलुं छे, तेथी आ प्रसंगे ए विषे अधिक समय काहाडवानी अगत्य नथी एटलेथी आजनुं व्याख्यान पूर्ण करी बीजे प्रसंगे समाधी वीगरेनी योग्य सुचना आपीशुं.

फाल्गु शुद्ध ४ रविवार संवत् १९४३.

प्रकरण २१ मुं.

द्रगद्रस्यनुं अने समाधिनुं ज्ञान.

आपणे पाछला व्याख्यानमां विवेकचंद्रिकामांथी केटली एक अगत्यनी सुचना करी, एनाज संबंधमां आजना व्याख्यानमां आपणे समाधी वीशे केटली एक अगत्यनी स्पष्टता करीये.

समाधी एटले सत्सगुरुथी प्राप्त थयेला उपदेशनो यथार्थ उन्नति पामेला निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानथी,

एकाग्रता करवानो, अभ्यास निरंतर राखवो.

सविकल्प अने निर्विकल्प एवी बे प्रकारनी समाधीछे. तेमां सविकल्प समाधीना द्रस्यमिश्र अने शब्दमिश्र एवा बे प्रकारछे.

शरीरना संबंध वगरनी बीजी सघळी जे बहारनी वस्तु ते द्रश्य कहेवायछे. तेज प्रमाणे बहारनी वस्तु वगर बीजी सघळी अंतरनी अद्रश्य वस्तु, पण द्रश्य कहेवायछे.

हवे जे कुटस्थ, बाहारनी अने अंतरनी सघळी वस्तुनो साक्षी अथवा जोनारछे. अने वळी जे स्थिर अने अचळ शरीर अने इन्द्रिओ वीगेरेना रुपोमां प्रकाशमान छे. अने जे प्रमाणे अग्नि लोखंडना गोळाने अग्निरुप करेछे, ते प्रमाणे नीर्जीव वस्तुने जे चंचळ करेछे, ते कुटस्थ द्रग कहेवायछे.

वळी जे मनुष्य सघळी वस्तु जाणेछे, जोयछे अने जे शरीर अने इन्द्रि विगेरेनी पेठे प्रकाशेछे, ते पण द्रग कहेवायछे. ते वस्तु तेने जाणी शकती नथी, बीजी सघळी वस्तु पोते जाते जाणवा अने जोवा अशक्तछे. अने चंचळता वीनानी जे वस्तु जणाय, ते द्रश्य कहेवायछे.

योग विद्याना विद्यार्थिये एम निश्चय कल्पना राखवी जे, आ द्रश्य श्रष्टि हुं नथी, हुंतो ए सघळानो जोनार छुं, अनादी छुं, सघळी वस्तुनो साक्षीछुं, अने अद्रश्य श्रष्टिनी उत्पत्ति स्थिति अने लयनो

જોનારછું માટે આ સઘળી દ્રશ્યમ અથવા જોવાની વસ્તુછે. એ પ્રમાણે દ્રશ્ય શ્રષ્ટિના સંબંધમાં દ્રગદ્રશ્ય વિવેકની દ્રઢતા કરવાનો અભ્યાસ વિદ્યાર્થિયે રાખવો, અને એ દ્રશ્ય શ્રષ્ટિમાં પોતાને દ્રગ સમજવો એવી રીતે દ્રગદ્રશ્ય વિવેકનો દ્રશ્ય શ્રષ્ટિમાં અભ્યાસ કરવાની અલ્પ સુચના કરી.

હવે આપણે દ્રગદ્રશ્ય વિવેકનો અદ્રશ્ય શ્રષ્ટિમાં અભ્યાસ કરવાની રીતનો વીચાર કરીયે એ ઉપરથી શિષ્યને આસંકા થઇ જે દ્રશ્યશ્રષ્ટિમાં સઘળી વસ્તુ જણાયછે તેથી વિદ્યાર્થિ સાક્ષી રુપે તે જોવાને સ્થિર થાય એતો સત્યછે. પરંતુ અદ્રશ્ય શ્રષ્ટિ તેનાથી કોઇ પણ રીતે જણાઇ શકતી નથી તો તેમાં દ્રગદ્રશ્ય વિવેકનો લાભકારી અભ્યાસ શી રીતે થઇ શકે? એ કાંઇ સમજી શકાતું નથી.

ગુરુ કહેછે જે સૂક્ષ્મ શ્રષ્ટિમાં અંતઃકરણ જે કે અહંકાર વીગેરેથી પ્રસિદ્ધછે, તેના કાર્યો દ્રષ્ટોત્પતિમાં આવેછે. તેમાં વિદ્યાર્થિ પોતાનો જે આત્મા, તે સઘળા કાર્યોનો સાક્ષી અથવા જોનારછે, એવું જાણી શકે; તે માટે સુક્ષ્મ શ્રષ્ટિમાં શોધન કરવાની અથવા અંતર દ્રષ્ટિથી પરીક્ષા કરવાની અવશ્ય અગત્યછે. અંતર દ્રષ્ટિથી શોધન કર્યા વિના કૈવલ્ય મોક્ષની પ્રાપ્તિ થતી નથી, તે માટે શુસ્કવેદાંતિ જેને વેદનું અલ્પજ્ઞાનછે, પણ તેનો અનુભવ નથી, તેણે મિથ્યા ગર્વનો ત્યાગ કરી સત્ય ગુરુને શરણે જઇ, સત્ય વિવેકના અનુભવ

करता शीखवुं. तेथी समाधीद्वारा ब्रह्मने ओळखी सत्य अनुभव मेळवी शकाशे.

हवे गुरु अंतर शोधन करवानी अथवा परीक्षा करवानी अल्प सूचना करेछे.

"स्थुळ, सूक्ष्म, अने कारण एवा त्रण प्रकारना शरीरछे.

१ स्थुळ शरीर हाड, मांस, मेद, त्वचा, अने स्नायु विगेरेनुं थयेलुंछे.

२ सुक्ष्म शरीर, स्थुळ शरीरना अति सूक्ष्मछायारुप परमाणुनु होयछे. अने ते पंचज्ञानेन्द्रि तथा पंचकर्मेन्द्रि जीवंतपणु उत्पन करनारा पंचवायु, मन, अने बुद्धि मळी सत्तर तत्वनुं बनेलुंछे.

३ कारण शरीर केवळ अज्ञान रुपछे, ते उपर कहेला स्थुळ अने सुक्ष्म ए बेउ शरीर उत्पन करनार वीज रुपछे. आ सघळा शरीरोथी पर आत्माछे. अने तेने ए शरीरोथी कांइ वीकार थतो नथी.

आ शरीरोमां अंतःकरण रहेलुंछे, तेना बे प्रकारछे. तेना दरपणरुप विशाळ अंतःकरणनो एक भागछे. कुटस्थ ते अंतःकरणनो स्थंभछे. ते कुटस्थनी शक्तिने परावर्तन पमाडेछे. अथवा आभास पाडेछे. जे अंतःकरणनो आ माहेलो भाग उपर कहेला आ भाषामां रहेलो छे. ते हंकार नामथी प्रख्यात छे.

ज्यारे उपर कहेला अंतःकरणनो भाग अथवा छाया अथवा आभाष ते हंकारथी कार्य करे, अने

ते कुटस्थ जेवो थंभरुप अद्विस जणाय, त्यारे ते कुटस्थ जीवात्मापद धारण करेछे.

ए उपरथी शीष्य प्रश्न करेछे के कुटस्थतो अचलित एकछे तेमां जीवपणु केम कहेवाइ शके.

गुरु उत्तर करेछे के, हे ब्रह्मजीज्ञासु शिष्य ए अविद्या अथवा अज्ञानने लीधे सत्य मनाइ शकेछे. जेम कोइये रुपानो गुण जाण्यो नहीं होय, ते अब्रक अथवा तेवी श्वेत वस्तुने रुपु मानेछे, तेम अज्ञानी मनुष्य पोते जीव नहीं छता पोताने मायावी जीवात्मा गणेछे, तेने द्रष्टांत पितप्रकृति वाळानुं अथवा जेनुं मन वायुथी भ्रमित थयुं होय तेनुं योग्यछे. केम जे तेवो पुरुष वारंवार एवुं मिथ्या धारेछे जे, हुं राजा छु अने हाथी वीगरे वाहन उपर बेठेलोछु. तेवीज रीते कुटस्थमां जीवात्मापणु मानी लेछे. परंतु बुद्धिवान पुरुष ज्यारे विवेकथी सत्य असत्यनो निर्णय करी जोयछे, त्यारे तेने कुटस्थ अने तेनी छाया रुप अथवा आभाष जीव ए बेउ प्रथक वस्तु जणाती नथी. अने द्वैयपणानो मिथ्या विचार लय पामेछे. आ प्रकारनो जीव अज्ञानने लीधे उत्पन थायछे ते मिथ्या अने असत्यछे. एज कारणने माटे अंतरनी परीक्षा गुप्त विद्यार्थिये घणी संभाळथी संपुर्ण रीते करवानी अगत्यछे. विद्यार्थिये चक्षुबंध करी, जे मानसिक कल्पनाना कार्यो एक पछी एक उत्पन थाय, अने लय थाय, ते विवेकथी जोवा; अने ते

सघळा द्रश्यम अथवा जोवानी वस्तुज मात्रछे एम गणवुं; अने पोताने अंतर द्रष्टिथी जोनार द्रग गणवो. पोते सघळी अद्रश्य थती वस्तु जोयछे, माटे पोते अनादी छे. जे वस्तु अद्रश्य थाय ते क्षणभंगुर अने असत्य समजवी. ते पोताना गुणथी थती नथी. पोते तो केवळ सत्य ज्ञान रुपजछे एम समजवुं. कदापी ते सघळी वस्तु जाणेछे, तोपण ते बीजी कोइ पण वस्तुथी जणाइ शकतो नथी, माटे ते स्वयंजोतीछे. अने ते सघळा कार्योनो साक्षीछे.

ए प्रमाणे विद्यार्थिये द्रगद्रश्य विवेकनो अनुभव करवानो अभ्यास करवो, अने सघळा कार्यो अशक्य असत्य, अने देखाववा मात्रजछे, एम समजवुं. वळी पोताने जन्म अने मर्ण रहित सघळी वस्तुनो साक्षी प्रबळ आत्मा समजवो अने एज द्रश्यमिश्र समाधी केहेवाय छे.

हवे गुरु पोताना शिष्यने शद्ध मिश्र समाधी विषे बोध करेछे. आत्मा ए माया अथवा प्रकृती-मांथी, संबंधवाळो जणाइ सत्ताधारी, जीवस्वभाव थइ अल्पज्ञानी अने दीर्घज्ञानी थयलो अज्ञानने लीधे जणायछे, वळी कर्ता, भोक्ता, अने साक्षी ए सघळु जणाय छे. ज्यांसुधी त्रीपुटी एटले, (राजऋ-षीमां कहेला ज्ञाता, ज्ञान, अने ज्ञेय) अथवा द्रष्टा, द्रष्टि, अने द्रश्य, अथवा जोनार जोवानी वस्तु, अने जे-थी जणाय ते ए सघळा विचार ज्यांसुधी नाश पाम्या

नथी त्यांसुधी, उपर कहेला विचार अथवा कल्पनानो नाश थइ शकतो नथी. ते एवी रीते के, ब्रह्मने कर्तापणु भोक्तापणु अथवा बीजु कांइज नथी, अने पोतेतो अक्षय एकनो एकज जोनारछे. अने अंतःकरण सहित सघळी श्रष्टि जोवानी वस्तुछे. अने जोनार अने जोवानी वस्तु ए बेउ कल्पनाने भुली जवी, वळी अंतर अने बाह्य ए बंनेमां थता संकल्प अने विकल्पने भुली जवुं अने आवुं जे ज्ञान तेज ब्रह्मछे. एम जाणवुं. अने उपर कहेला त्रिपुटी अथवा रजोगुण, तमोगुण अने सतोगुण ए त्रणेनी थयेली श्रष्टिनो विचार करवाने ध्यान करवुं, ते मात्र अंते तेनो अभाव थइ तेनी कल्पना रहे नहीं एटलाज सारू करवानुं छे एम समजवुं. ए शब्द मिश्र समाधी कहेवाय छे.

हवे निर्विकल्प समाधी विषे गुरु कहे छे. जे स्थितिमां, जोनार, अने जोवानी वस्तु अथवा द्रष्टा अने द्रश्य ए बेउनुं भान जायछे. अने जे अंतःकरण जणाय एवी श्रष्टिनुं भान करावेछे तेनो पण लय थाय. अने केवळ कल्पना रहित घाड निद्राने कांइक मळती स्थिति थाय परंतु ए स्थिति घाड निद्रा समजवी नहीं; केमजे ए स्थिति शरीरने पडवा देती नथी. ए समाधीमां पोते प्रकृतिनी बनेली श्रष्टिने तथा प्रकृति अथवा परमाणुओना बनेला सघळा कार्योने भुली जायछे. एटलुंज नहीं पण अति सुक्ष्म

परमाणुनुं पण भान रहेतु नथी अने पोते मात्र केवळ बुद्धिचैतन्य जोंती रुप प्रकाशेछे. एज केवल शुद्धचैतन्य तेज ब्रह्मछे.

एवी रीते जे ब्रह्मजीज्ञासु विद्यार्थि दृगद्रश्य विवेकमां श्रद्धा राखी तेनो अभ्यास करेछे, ते पोतामां शरीर विना बीजी अमुल्य वस्तु जुवे छे. ते अनादी अने निर्विकार ब्रह्मछे. ए ब्रह्म पोते एकज छे एवो मनुष्य मुक्तछे; एवो वेदांत शास्त्र बोध करे छे,वळी एवोज बोध याज्ञवल्क्य,अने बीजा महासमर्थ रुषीओ, अने मुनीयोए, जनक वीगेरे ब्रह्मजीज्ञासुजनोने करेलोछे. पोते मात्र एक केवळ शुद्धचैतनज छे, एवी एकज कल्पना रहेवाथी जीवनमुक्त थवाय छे, अने एवोज उपदेश घणा उपनीषद अने पुराणोमां पण करेलोछे; माटे हे विवेकी शिष्यतुं दृगद्रश्य मिश्र, शद्धमिश्र, अने निर्विकल्प समाधीनो अभ्यास करी, जन्ममर्ण रहित मात्र एकज ब्रह्मनी स्थितिमां रहे. तेथी तुं संसार महासागर उतरी तेथी विरक्त थइश. आवी रीते ब्रह्मजीज्ञासुजन निरंतर सुखी रही तेनुं कल्याण थाओ एवो आशिरवाद गुरुये दीधों.

शिष्य गुरुनी परम पवित्र आज्ञानुं ग्रहण करी ते प्रमाणे वर्ति अंते जीवन मुक्त थयो.

एवी रीते ए विषयनी समाप्ति थइ; एटलुंज नहीं पण आ वर्षना व्याख्याननी पण समाप्ति थइ छे एमां आपणे अंतनी सुचना एटली आपवानी छे

के, जे प्रमाणे भाविक पण जेना निश्चयात्मक बुद्धिज्ञानना यथार्थ उन्नति थइ नथी, तेथी तेने धार्मिक अने केवळ मोक्षना कार्यमां सत्य असत्यनो यथार्थ निर्णय करवानो विवेक नथी, तेवा भोळा भक्तोने अंतःकर्णनी शुद्धि करवा सारु, कोइ पण अवतारी भद्र पुरुष अथवा पुरुषोत्तम भगवाननुं नाम, श्रवण, कीर्तन, पुजन, अने अर्चन विगरे एकाग्रताथी करवानो हेतु छे. ते प्रमाणे विवेकी• अने निश्चयात्म बुद्धि ज्ञानना यथार्थ उन्नति पामेला ब्रह्म जीज्ञासु पुरुषोना अंतःकरणनी शुद्धि करवानां केटलांएक साधनो आ वर्षना व्याख्यानना प्रथम खंडमां दर्शावेला छे. अने द्वितिय खंडमां जीवनमुक्त अने कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थवानां साधनो राजयोग द्वारा दर्षावेला छे. ए राजयोगनां साधनो, सुबोध पत्रिकाना, उत्तरार्धमां जे व्याख्यानो आपेलां छे. तेमां पण दर्शावेलां छे. तेनुं एकाग्रताथी श्रवण, अथवा पठन, मनन, अने निदिध्यासन करवाथी, निश्चय आलोकृ, अने परलोकमां अदभुत लाभ थइ, अंते परम उत्तम कैवल्य मोक्षनी प्राप्ति थशे. ओं शुभं भवतुं कल्याणमस्तु. ओं, शांति, शांति, शांति.

फालगुन वद्य ४ रवीवार संवत् १९४२.



ॐ.

तत् सत्.

सुरत सनातन धर्म सभाना हेतु तथा नियमो.



आ सभा संवत १९४१ ना चैत्र शुद्ध १ नेवार भोमेने दिवसे स्थापन थइ छे.

ए सभाना मुख्य त्रण हेतु निचे प्रमाणे छे.

१ कोइ पण जातना जाती भेद अने मतपंथ भेद रहीत, मात्र सघळा मनुष्य प्राणीमां परस्पर स्नेह अने प्रिति उत्पन थइ; भ्रातुभावथी ऐक्यता करवी. ते करवानुं साधन निषपक्षपात रीते परिक्षा कर्या पछी, अति प्राचिन काळना सनातन धर्म अने अधर्म, एनां लक्षणोनी मर्यादामां रेहेवानी अगत्य एज जणायुं छे; माटे तेनी रक्षा करवाथी, सघळां शुभ कार्योनी सिद्धि थइ शकशे, एवो निश्चय थयो, माटे ए सभानुं नाम सनातन धर्म सभा राख्युं छे.

२ मानसीक अने निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान, ए बेउनी यथार्थ उन्नति थवाथी, अती उत्तम अने अद्भुत लाभ आ लोक अने परलोकमां थइ शके छे; माटे वेद उपनिषद, अरण्यका, सांख्य, अने योग शास्त्र, विगरे सद्ग्रंथोमां दर्शावेला, सघळा प्रकारनां

तत्व ज्ञान अने आत्मज्ञाननुं श्रवण, मनन, अने निदिध्यासन करवानो आग्रह,ए सभाना सभासदोनोछे.

३. सघळां मनुष्य प्राणीमां, अती गुप्त रीतें बुद्धि चैतन्यनी, अने दैवी प्रकृतिनी द्रष्य, अने अद्रष्य महा अदभुत शक्ति रहेली छे, तेनुं सोधन अने उन्नती करवानां, साधनोनो विचार करवानो हेतु ए सभानो छे.

ए सभाना बीजा हेतुओ अने सामान्य नियमो निचे प्रमाणे छे.

१ जे केवळ निपपक्षपाती सत्य शोधकछे, अने जे पोतानी इंद्रियोना क्षणिक, अने मिथ्या सुखमां ज, केवळ निमग्न अने लुब्ध नथी, अने जेने अति उत्तम निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञाननी उन्नति करी, अंते स्वार्थ रहीत, महत्वनां कार्यो करवानी इच्छा छे; ए सघळुं छतां जेने सनातन धर्म अने अधर्म, ए बेउनां लक्षणोनीं, मर्यादामां संपुर्ण रीते, रेहेवानो आग्रह अने प्रयत्न करवानी इच्छा छे, तेवा पुरुषोनी-ज, ए सभामां अगत्य छे.

२ ए सभानो हेतु कोइ पण न्यात जातनी चालती रुढी, अने कोइ पण जातना मत पंथना हेतु, अने तेना कर्मकांड इत्यादी कांइ पण सामाजिक रीती भातीथी विरुद्ध कांइ पण सभासदने, खेद थाय एवो उपदेश करवानो नथी.

३ ए सभाना सघळा सभासदोए, स्वार्थ रहित परोपकार बुद्धिथी, निर्विकार अने सनातन धर्म अने अधर्मनां लक्षणोनी मर्यादामां रहेवानी, इच्छा वाळा पुरुषोनेज, ए सभामां सभासद करवाने प्रयत्न करवानो छे; परंतु नवा सभासद थनारा ग्रहस्थनी वर्तणुक, दोष रहित छे, एवो निश्चय एक बे सभासदनो थया पछी, तेने सभासद करवाने भलामण करवी.

४ ए सभानो शुभ हेतु स्त्री केळवणीनो पणछे; माटे वेद, शास्त्र विगरे ग्रंथोमांथी, निति अने शुभ गुणो तथा स्त्री केळवळी सारु नितिनां वाक्योनो संग्रह करी ते द्वारा सनातन धर्म अने अधर्मना लक्षणोनी, मर्यादामां स्त्री अने बाळकोने राखवाना बोधनी अवश्य अगत्य छे; माटे ते शुभ कार्य करवानां, साधनो मेळववाने अति आग्रहथी, प्रयत्न सघळा सभासदोए करवानो छे.

ए सभा सांजना घणुकरी प्रति दिवसे कलाक ६॥ थी कलाक ८ सुधी सुरतमां हवाडिया चकला आगळ ए सभाना सम्पादक श्रीना घरमां मळे छे. नित्य धर्म चर्चा चाले छे. पोतानी प्रसनता होय तो सभासद आना चार सुधी माशिक भेट आपे छे. तथा अन्य धर्मजीज्ञासु ग्रहस्थ ए सभाना पुस्तकालयमां तथा ए सभाना धर्मादा औषधालयमां, जे कोइ भेट प्रिति पूर्वक करशे. ते मान्य करवामां आवशे.

आ सभामां गुप्त योग विद्या संबंधी कांई पण वात बहारना माणसोने कहेवाने प्रतिबंध छे. ए सभाना हेतु अने नियम ए बेउ वांची जोइ तेमां निचे पोतानी सही कर्या पछी, तेने सभासद गणवामां आवशे. कदापी कोइ सभासदनी अशुभ वर्तणुक जणाय तो, तेने सभामांथी विमुख करवामां आवेछे.

धर्मजिज्ञासु ग्रहस्थो, आ सभानी संमतीथी अन्य स्थानमां शाखा स्थापे तो, तेने पण सत्य धर्मना कार्यमां यथार्थ सहायता आपवामां आवे छे.

घेलाभाइ लालाभाई मेहेता.

मंत्री—ठेकाणुं गोपीपरा
आमलीरान.
सुरत.

सुरत सनातन धर्म सभा तरफथी नीचे प्रमाणे प्रसिद्ध थयलां पुस्तको.

		किमत.
मुमुक्षुनुं नित्यकर्म..................	रु.	०— ०—६
सुबोध पत्रिका उत्तरार्ध............	,,	१— ४—०
सन्मार्ग दर्शक ग्रंथ पद्यात्मक....	,,	०— २—०
रत्नमाळा..................................	,,	१— ४—०
भारतवर्षनुं त्रिकालिक दर्शन........		०— ४—६

आ सभाना प्रथम बोधिक ग्रंथो राजऋषि, अने सुबोधपत्रिका पुर्वार्ध छे. एनी प्रथम आवृत्ति पुरी थै गै छे. ए ग्रंथनी मागणी घणी थाय छे पण ते प्रसिद्ध करवानो आधार ग्राहकोनां नामो नोधांववा उपर छे. माटे जेणे ग्राहक थवानुं होय तेणे वेळासर निचे लखेले ठेकाणे नामो नोधाववां. उपर दर्शावेलां पुस्तको पण तेज ठेकाणेथी मळशे.

मुंबइ—रा. रा. मनमोहनदास दयाळदास शराफ.
ठे० भूलेश्वर आगळ त्रिजा भोइवाडामां.

सुरत—नौतमराम उत्तमराम त्रिवेदी.
सुरत सनातन धर्म सभाना संपादक.
ठे० हवाडीओ चकलो आमलीराननुं नाकु.

अमदावाद—रा. रा. भगुभाइ नंदलाल.
ठे० घाशीरामनी पोळ.

देवघडबारीया—रा. रा. मुळजी रघुनाथजी.
स्कुलमास्तर.